बळि गयी उण देसड़ै

मूळदान देपावत

संस्करण 1989

मूल्य पैंताळीस रुपये मात्र

आवरण : स्वामी अमित

प्रकाशक : मेहाई प्रकाशन, देशनोक
जिला-बीकानेर (राजस्थान)

मुद्रक : सांखला प्रिन्टर्स,
चन्दन सागर, बीकानेर

BALIHARI UN D

निछरावळ

माजीसा रै पूजनीक चरणां में
जिकां म्हारै बाळपणै
मन रै मूळां में
वातां, ख्यातां, ओखाणां सूं
साहित अर संस्कृति रा
बीज रोप्या।

संस्करण · 1989

मूल्य . पैंताळीस रुपये मात्र

आवरण . स्वामी अमित

प्रकाशक : मेहाई प्रकाशन, देशनोक
जिला-बीकानेर (राजस्थान)

मुद्रक : साखला प्रिन्टर्स,
चन्दन सागर, बीकानेर

BALIHARI UN DESHRE Raj

निछरावळ

माजीसा रै पूजनीक चरणां मे
जिका म्हारै बाळपणं
मन रै मूळां मे
वातां, ख्यातां, ओखाणां सू
साहित अर संस्कृति रा
बीज तोप्या।

संस्करण · 1989

मूल्य पैंताळीस रुपये मात्र

आवरण · स्वामी अमित

प्रकाशक . मेहाई प्रकाशन, देशनोक
जिला-बीकानेर (राजस्थान)

मुद्रक . साखला प्रिन्टर्स,
चन्दन सागर, बीकानेर

BALIHARI UN DESHRE Rajasthani

निछरावळ

माजीसा रै पूजनीक चरणां मे
जिका म्हारै बाळपणै
मन रै मूठा मे
वाता, ख्याता, ओखाणां सू
साहित अर संस्कृति रा
बीज तोप्या ।

घणै मांन सूं

आ धरती सूरा, सता, कवेसरा अर निछमी रै लाडेसरा री है। आन बान दान-मान अर तप-ध्यान री इण धरती रै जस री रुपाळेन आखी दुनिया मे गाइजै। अठै री माटी तिलक लगावण जोग है। इणरै कण-कण मे बळिदाना री गाथावा बिखरी पडी है। इण सुरंगी धरती री फुलवाडी इतिहास, भूगोल, साहित अर संस्कृति रै भात-भातीला फुलडा छाई है। ऊजळी म्यान रै ऊजळा धोरा माथै लिटणो भागवाळा रै पानै आवै। साहित री साख नै पीढी दर पीढी सीचण वाळा वस मे जलमण री मनै गुमेज है।

अठै बाळपणो धोरा चढता-ऊतरता, बेरा, कुमटा फोगा मे, बरडा-उरणिया सागै रमता बीतै। गाया री छागा, खेवड, टोडै रै सागै फिरता हाट सावळा हुवै। धोती रै आटी दिया हळ माथै हाथ जावै अर पसनी नै धोर धोर बर परसेवो सीच लाटो लाटै। माथै मेर सूर वापण री वडा सरदार री मूठ झालै अर देस सारु मरण री ओसाण साठै।

उच्छब, ऐदा, रवाण माथै जमजागै हुलारा, नामा बामा अर वारा-तारा नै रग दिरीजै। हरख कोड रै हबोळा मीठी रागा रीझीजै। वैरी री वो हार सू पणधार्या रै झाळ ऊपडै। रातीजागा, जामणा हरजस गाईजै। सुगना सपूना माथै धरती पोमीजै।

राजस्थान री इण अजसजोग रायपाधा नै आपरै सामी रमता याद आवै। म्हारी कुल अर धान रै पाण सुरंगविदा घुमता घुमता हीरा-मोती सा मैं बरण री निरत करी है। पारख तो आप जिसा डॅवरी ही करैला। सा बरणी रै ओळै-दोळै टाबर रा धीव लोककोटिदा मे जिका बारु वाम बैठ्या है, उणनै परोटता थका सबळो सारथ बनाओला तो आपरो घणो मान अहसान मानू ला।

प्रस्तावना

राजस्थान प्रांत रणवंकी मरोड रै गातर मुलक चावौ, अर अठारौ डिंगळ-साहित्य पण घणौ ठावौ। रणभीनै राजस्थान री रणभीनी रेत अर मानखै री ऊजळी हेत अठारै इतिहास री अछूती ओळखाण करावै। आखूणै राजस्थान री धरती थळवट कहीजै जठै रजवट री वट बाकी छिब दरसावै। थळवट सूं आगै 'ठरडौ' बाजै, जिण भायकै सारू 'ठरडै भड करडा गजवेल'रा विरद छाजै। उणमूं मिळतौ माड धरा, अठारी माड राग घणी मदभीनी अर मरमीली। 'केसरिया बालम' री ओळूं अर मनमोठी मनवार रा तीज-तिवार मरुधरा री लोक-संस्कृति रा लुभावणा अर लाखीणा अहनाण है, ज्यां मे भेळप-भाईचारै अर साम्प्रदायिक सद्भाव रै साथै वीरत रा बखाण अर वीरत रा बखाण है। इण तराजै री भांत-भांतीली अर रंग-रंगीली मुरधर देस, जिणरा अनोखा अर चोखा चितराम राजस्थानी भाषा मे रचियोड़ी बातां अर ख्यातां री इतिहासां मे दरसै, अथवा लोकगीतां री लड़ियां कै डिंगळ-गीतां री कड़ियां मे अतस री प्रवीत प्रीत नै परसै। 'पांडव यशेन्दु चन्द्रिका' मे चारण महात्मा स्वरूपदास जी अभिमन्यु री वीरता नै बखाणता थकां जणणी सुभद्रा री कूख री बळिहारी उचारता एक कवित्त मे औ भाव दरसायौ है, कै 'सुभद्रा की कूख की बलैया लीजै बेर-बेर, जाके बीच वीर धीर अभिमन्यु जायौ है।'

इण भांत कठैई तो मिनख री बळिहारी लिखीजै, नै कठैई 'बळिहारी उण देसडै' री कहीजै। देस री बळिहारी मे उण देस रो गौरव बखाणीजै, उण रै इतिहास रा जस अर अजस-जोग प्रसंग प्रमाणीजै। आधुनिक राजस्थानी रा लेखकां मे श्री मूळदान जी देपावत रो नाम उल्लेखजोग है, ज्यांरै साहित्यिक लेखां मे भाषा अर भावां रो मणिकांचन संजोग है। वांरा लेख घणा महताऊ अर मरमीला है, ज्यां मे मरभोम री संस्कृति रा चितराम भांत-भांतीला है।

'बळिहारी उण देसडै' जैडै शीर्षक सूं ही इण बात रो अनुमान हुव

प्रस्तावना

राजस्थान प्रांत रणबंकी मरोड रै लातर मुलकां चावौ, अर अठारी डिंगळ-साहित्य पण घणौ ठावौ। रणभीनै राजस्थान री रणभीनी रेत अर मानवां री ऊजळौ हेत अठारै इतिहास री अद्भुती ओळखाण करावै। आथूणै राजस्थान री धरती थळवट कहीजै जठै रजवट री वट बाकी छिब दरसावै। थळवट सूं आगे 'ढरडौ' बाजै, जिण भायकै सारू 'ढरडै भड करडा गजठेल'रा विरद छाजै। उणसूं मिळतौ माड धरा, जठारी माड राग घणी मदभीनी अर मरमीली। 'केसरिया बालम' री ओळू अर मनमीठी मनवार रा तीज-तिंवार मरुधरा री लोक-संस्कृति रा लुभावणा अर लावीणा अहनाण है, ज्यां में भेळप-भाईचारै अर साम्प्रदायिक सद्‌भाव रै साथै कीरत रा कमठाण अर वीरत रा बखाण है। इण तरांजै री भांत-भांतीली अर खांत-खांतीली मुरधर देस, जिणरा अनोखा अर चोखा चित्राम राजस्थानी भाषा में रचियोडी वातां अर ख्यातां री इतियातां में दरसै, अथवा लोकगीतां री लडियां कै डिंगळ-गीतां री कडियां में अंतस री प्रवीत प्रीत नै परसै। 'पांडव यशेन्दु चन्द्रिका' में चारण महात्मा स्वरूपदास जी अभिमन्यु री वीरता नै बखाणता थकां जणणी सुभद्रा री कूख री बळिहारी उचारता एक कवित्त में औ भाव दरसायौ है, कै 'सुभद्रा की कूख की बलैया लीजे बेर-बेर, जाके बीच वीर धीर अभिमन्यु जायौ है।'

इण भांत कठैई तो मिनख री बळिहारी लिरीजै, नै कठैई 'बळिहारी उण देसडै' री कहीजै। देस री बळिहारी में उण देस री गौरव बखाणीजै, उण रै इतिहास रा जस अर अजस-जोग प्रसग प्रमाणीजै। आधुनिक राजस्थानी रा लेखकां में श्री मूळदान जी देपावत री नाम उल्लेखजोग है, ज्यांरै साहित्यिक लेखां में भाषा अर भावां री मणिकांचन संजोग है। वांरा लेख घणा महताऊ अर मरमीला है, ज्यां में मरुभोम री संस्कृति रा चित्राम भांत-भांतीला है।

'बळिहारी उण देसडै' जैडे शीर्षक सूं ही इण बात रौ अनुमान हुय

जावै, के मुरधर देस री मरदाई री मरोड़ री बेजोड़ नमूनो इण मे लखावै। महाकवि सूर्यमल्ल मीसण री वीरसतसई रो ओ दूहो पढणजोग है, जिणमे वीरांगनावां रै अतस री ओग है।

> नह पडोस कायर नरा, हेली वास सुहाय।
> बळिहारी उण देसड़े, माथा मोल विकाय॥

असल मे वीरता वा आग है जिणमे त्याग अर बळिदान रो उजास दरसै। वीरत री विभूति अर संस्कारा री सपूती सू ही महिमंडळ मे नेह रो मेह बरसै। कायरता मानखै रो कळक है अर आन-बान ऊजळ करणी रो अक है। जठै माथा मोल विक सकै, उठै इज टणकापणो टिक सकै। उणीज देस री बळिहारी है अर इणी भावना सू ओत प्रोत श्री देपावत री आ पुस्तक घणी सुप्यारी है। कुल पनरै लेखा री इण लाखीणी लडी री इन्द्र धनुषी रगत घणी ठावी अर ठीक है।

'रूड़ो राजस्थान' इण पोथी मे पैलपोत लेख है, जिणमे राजस्थान री सुरगी छिब रो अनूठो उल्लेख है। मरुभोम री मरदाई, उठारा लोक-लुगाई, रूंख-राम, गैणो-गाठो, पैरवेस, वार-तिवार, रीता-पाता घणी भाता सू दरसाई है, जिणमे लेखक आपरी काव्य अर इतिहास री जाणकारी जताई है। दूजो लेख है 'माथा मोल विकाय' जिणमे रणवंकै राजस्थान री वीरत रो वट अर रागडा री रजवट रो दरसाव काव्य रै प्रमाणां सू प्रगट कियो है। कविता री कडी रै शीर्षक रै परियाण ही इण लेख मे डिंगळ-साहित्य रा नगकणूका दीपायमान है, ज्यामे इतिहास री माग्न सोनै मे सुगध रै समान है।

'धर जगळ धणियाणी' लेख मे चारणी महाशक्ति करणी माता रै व्यक्तित्व रो आध्यात्मिक उजास दरसायो है। आखै भारत मे प्रसिद्ध अर पूजनीक लोकदेवी रै रूप मे श्री करणी जी री कीरत अर पुनीत प्रवाद चारण कवेसरा री कलम अर वाणी सू ओळखाणा है। करणीधाम देशनोक रा निवासी अर भगवती रा अनन्य उपासक श्री देपावत इण महताऊ विषय रा अधिकारी विद्वान होणै रै कारण सामग्री मे सचाई अर तथ्य रा ताणा-वाणा है। 'विसन विसन तू भणि रे प्राणी' मे विश्नोई पंथ रा प्रवर्तक श्री जांभोजी महाराज री अमोलक वाणी है। जीव दया-पाळण, रूंख रुखाळण तथा सुदता अर सफाई जैड़ा गुणनीम नेम निभावण री परम्परा रा पुजारी उण सदाचारी महापुरुष री इमरत वाणी रा अमोल बोल इण लेख रो आधार है, ज्यामे समाज री भलाई रो संदेश अर सतवचनां रो सार है।

चारण महात्मा ईसरदासजी बारहट रो नाम राजस्थान अर गुजरात सगळै ही 'ईसरा-परमेसरा' रै रूप में ओळखीजै है। वां रो 'हरिरस' तो गीता रै जोड़ै वाचीजै-विचारीजै है। वे भगत, कवि अर सिद्ध हुवा। डिंगळ में वां रो रचियोड़ा 'हाला झाला रा कुंडळिया' घणा प्रसिद्ध हुवा। ईसरदास जी रो जीवणी अर साहित्य री सजीवणी दोनूं भात री बानगी इण लेख में दरसाई है जिणमें जूनी कविता रा प्रमाणा री इधकाई है।

'होळी रंगरंगीली' में होळी रै हुड़दंग, राग-रंग, चाव-भाव, उमंग-उमाव रो हाव-भाव दरसायो है। जन-जीवण में होळी रो तिंवार टाबर टोळी सूं लेय बूढ़ा-बडेरा ताई में किण भात हलोळ पैदा करै, इण भाव रा चूप-चूपाळा चित्राम दरसाय वा में कल्पना री कोरणी रा रचनाकार रंग भरै।

राजस्थान री धरती मेह री बाट जोवै अर मेह बाबो आया घणा हरख-हीकवा होवै। 'मेहा रै झड़ माडियो' जैड़ा रसीला गीत गाईजै अर हेत-हुलास सूं हरियाळी तीज मनाइजै। तेजो गावै अर हळोतियै बाजरी बावै, उण सुरंगी रुत री वरणाव अर चाव-भाव मरूभोम री मडाण वर्ण, इणी भाव सूं भरपूर मेह रै अभाव में काळ री विकराळ गत नै परगत रा लेखक प्रमाण भणै।

'बरसाळो' लेख में सुरंगी रुत रै सिणगारू वरणाव री चित्राम घणो मन भावणो है, जिणमें सजोग अर विजोग री रसभीनी घडिया सूं मन रीझावणो है। जिण धरती में नेह तो घणो पण मेह कम व्है, उठै इज उणरो वरणाव मोहणो अर मनोरम व्है। इणीज पगत में रूपाळी रगत री एक रसीली लेख है 'पिहू पिहू ना बोल' जिणरा बोल घणा है अणमोल। पपीहै री पुकार सूं विरहणी रै हिये में दुधार-सार बहै, आ इज बात जूनी कवितावा रै प्रमाण सूं विद्वान लेखक कहै।

लोकगीता री ससार तो न्यारो अर निराळो इज हुवै। इण में लोक-जीवण री छवियां री छबीलो दरसाव मिळै। घर-बार, पसु-पखेरू, रूख-राय, नदी-सरोवर, सगळा सूं ही बात-विगत रो सरस सम्बन्ध अर पुनीत प्रीत लोक-गीत री लहर सूं जुडै। इणरी मोटी मनवार अर सनेह सुप्यार नूं मानवी रो मन पाछो मुडै। ऐडै मीठै अर मरमीलै वरणाव रो भाव दिल रै दरियाव में हेत री हिलोरा लेतो लखावै, जको पढिया हीज बण आवै। राजस्थानी लोकगीता रै सगळै सरूप री अनूप आभा इण लेख में उजागर हुई है, सार-सखेप री दीठ सूं इण री चूप अर चतुराई मानो गागर में सागर हुई है।

'राजस्थानी साहित में लोक-चेतना रा सुर' इण पोथी रो एक शोध-परक लेख है जिणमें अज्ञात अर अनूठी सामग्री री मात्रा अतेम है।

राजस्थानी साहित्य अर अठारै जन-जीवण रो औ सोहणो सरूप है कै भारत नै मोद-प्रमोद हुवै जैडी परम्परा री सरुआत इण धरती में पैलपोत हुई। आगै भारत मे देस री आजादी खातर सब सूं पैली साहित्य रा सुर इण मरु-महरांण मे गूंजिया हा। राजस्थान रै इतिहास रो औ एक ऊजळो अर अजसजोग पहलू है, कै सन् 1857 रै गदर सूं 52 बरस पैली जोधपुर रा महाकवि बांकीदास 'आयो अंगरेज मुलक रै ऊपर' चेतावणी रो गीत सुणायो हो। इणी भांत जनकवि शंकरदान सामौर, सूर्यमल्ल मीसण, ऊमरदान लाळस, केसरीसिंह बारहट, अर मनुज देपावत जैडा अनेक राजस्थानी कवियां राष्ट्रीय भावना रै पाण लोक-चेतना रो घण मोकळो साहित्य बणायो है। श्री देपावत रो औ लेख इण महताऊ विषय माथै अनुसंधान री दीठ सूं एक अमोलक अर स्थायी महत्त्व री रचना है, जिणमें काव्य अर इतिहास रो सुघो मेळ है तथा देशप्रेम री दीप्ति अर अंतस री उजेळ है।

'आजादी री अलख' भी नवलखा हार री भांत एक इतिहासू दस्तावेज है जिणमें भारत माता री बेड़ियां काटण वाळा सपूतां रै हियै री हेज है। डूंगजी जवाहरजी जैडा देशभक्त क्रांतिकारी वीरां री कीरत अर करतूत री अदभूत छटा दरसाई है। दूहां री कड़ियां में दीपतै वरणाव में मरुभोम री महिमा गाई है।

'धोरां धरती अर गैणांणो गढ़ी' में पर्यटण री रीत रै साथै पर्यटकां री प्रीत रो गुरगो मेळ दरसायो है। प्रकृति रै साथै मानव-प्रकृति रो भाई मेळ-मिलाप भारतीय संस्कृति रो ओपतो अर जोरदार रूप बतायो है। देसी-विदेसी सैलानियां री यात्रावां रा प्रामाणिक वरणाव रै साथ पर्यटकां री मानखै सूं अनादी प्रीत दरसाय आज रै जुग री महताऊ मानवी विचारधारा री सार भरी है। चाणक इण लेख में देसी विदेसी नामां सूं पर्यटकां री विगत उजागर करी है।

इण पोथी रै अगोरी लेख 'फोग सू चिनार' मे देशाटण री एक रोचक प्रसग है। 'देखणा सो भूलणा नहीं' कहावत रै मुजब सुरधर री रेंवासी कस्मीर री घाटिया रा रमणीक दृश्य निरखै, जद वो कुदरत री कारीगरी नै परखै। चिनार सू विगतवार वरणाव शुरू कर भारतमाता रै नवलै री नूर दूर-दूर ताई दरसावै, जिणनै पढ़िया सू देख्या जिसड़ो आणद आवै। यात्रा री संस्मरण ओ स्मरण जोग है, जिणमे एक कानी चिनार तो दूजी कानी फोग है। इण फरक नै लेखक री दीठ सू जतायो है। लेख छोटो पण सरस होणै सू घणो दाय आयो है।

सार रूप मे ओ इज उल्लेख करणो है कै 'बळिहारी उण देसड़ै' नाम री आ पोथी राजस्थान रै इतिहास, अर उणरी लोक-संस्कृति रा अनेक महताऊ पक्ष उजागर करण वाळी नूतन अर निराळी कृति है, जिणमे राजस्थानी भाषा री टावी अर टीमर रूप दरसियो है। ठौड़-ठौड़ कवितावा रा प्रमाण देय लेखक आपरी मान्यतावा नै सौ टच खरी साबित करी है जिणमे मोकळी मेहनत अर साची लगन री साख भरी है।

आजकल राजस्थानी गद्य री पोथिया तो घण मोकळी निजरा आवै, पण भाषा अर भाव दोनू दृष्टिया सू ऐडी ठावी अर ठरकैदार रचना तो विरळीज लखावै। इण पुस्तक रा रचनाकार चारण काव्य-परम्परा रा अधिकारी विद्वान अर ऊजळै आचरण रा नेक इन्सान है, इण कारण वारै विचार, व्यवहार अर संस्कार री त्रिवेणी री सुपावन सगम 'बळिहारी उण देसड़ै' मे निजरा आवै, जिणमे इण धरती रा सगळा सपूता नै मायड भोम अर मायड भाषा री मोद लखावै।

म्हनै पूरी भरोसो है कै राजस्थानी साहित्य-जगत जे इण पुस्तक नै चाव-भाव अर लगाव सू पढ़सी तो पाठका नै दाय आसी अर मरुभाषा रै विकास मे एक नवो पावडो आगे बधसी।

लेखक रै ऊजळै भविष्य री शुभकामनावा रै साथै—

डा. शक्तिदान कविया
अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

रामनवमी
वि स 2046

सिद्ध श्री

अरपण

घणै मान जोग
साहित अर संस्कृति रा हितू
समाज सेवी-कर्मठ पुरष
स्व. श्री चम्पालाल जी सांड
(देशनोक)
री पावन स्मृति में
सादर।

रूड़ो राजस्थान

मरुधर री मैहमा, वीरत अर बडाई रो बखाण आखरां में बांधण जोग नीं है। मरुधर रा दिसाई रूंखां खचूणां में जावो, अठै रा मिनख-मानवी अर वांरी बोली-चाली, पैरेस, रोही री छिब, ढांव-ढागर जिनावर, पखेरू अर वेरा तळाव आपरै मन मांयं गैहरी छाप मांड दै। आथूणा राजस्थान रा ऊजळा धोरा जुगां-जुगां सूं इण बात री साख भरै कै अठै रा रैवणियां रो मन म्हारी तरै ऊजळो अर निरमळ रैयो है। अठै रा मिनख घणमोही हुवै। ढांव-ढागर भी इणां री चितार बोली रो भाव भाग जावै।

उनाळै री मादक रात आ धोरां मांयं चांदणी रमै अर कनागियैं री पणिहारी री टेर सभा बांध दै। पीवण रै पाणी री कमी मोकळी रैवै, पीवण रै पाणी रा सासा पडै। मगळा देई-देवता आपरा दवरा तळाव री पाळा मांयं जमाया बिराजै, पाणी रै आसरै। आधी दळतां ही कुआ तरजण लागै अर 'आयो आयो' रा हैलारा सुणीजै। लोग आयो आयो करता निसवारी काढ दै। कुआ साठीका जिणमें भी पाणी री तोडो। कैवा चालै अठै रे लाखां री अबल भी साठीका रै पाणी जितरी ऊंडी व्है, ओळाखणी नेडोई नीं आवै। जिन म रू रा लपरका चालै, देह रा गूदा बण जावै पण पानै सेजडै री वैस री छिया तळै डेरियो करता मिनख उपाडा वैठा लाधसी। पाणी बिना दरसन करै, पछै छिया का री, ना छिया रै साख ही कुण है। इण धरती मांयं पीवणा सांप, कैर कटाळा रूंख अर आवडै फोगडै री छिया ही मिठै अर मुरड रै वीजा भुग भागै।

जिण भुय पन्नग पीवणा, कैर कटाळा रूंख ।
आवै फोगे छांहडी, हूंदां भांजै भूख ॥

[illegible] है इण रूखा नै उजा साथ नीं [illegible]। इण मौसम में भी [illegible] [illegible]-मोला, दाखूं, आडोंदिया, पीलू अर [illegible] देवै। [illegible] [illegible] साथ में [illegible] उभा [illegible] [illegible] अर [illegible] [illegible] [illegible] देवै। इण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

रूड़ौ राजस्थान

मरुधर री मैहमा, कीरत अर बडाई रो बखाण आखरा मे बाधण जोग नी है। मरुधर रा विसाई सूणा मचूणा मे जावो, वठैरा मिनख-मानवी अर बारी बोली-चाली, पैरेम, रोही री छिब, दाव-डागर, जिनावर, पसेरूअर बेरा तळाव आपरै मन माथै गैहरी छाप माड दै। आथूणा राजस्थान रा ऊजळा धोरा जुगा-जुगा सू इण बात री साख भरै कै अठै रा रैवणिया रो मन म्हारी तरै ऊजळो अर निवळक रैयो है। अठै रा मिनख घणमोही हुवै। दाव-डागर भी रूणो चितार कोमा री भाय भाग जावै।

उनाळै री माझल रात आ धोरा माथै चादणी रमै अर वनारियै री पणिहारी री टेर ममा बाध दै। पीवण रै पाणी री कमी मोरळी रैवे, पीवण रै पाणी रा सासा पड़ै। सगळा देई-देवता आपरा देवरा तळाव री पाळा माथै जमाया विराजै, पाणी रै आसरै। आधी दळता ही कुआ तेटजण लागै अर 'आयो आयो' रा कैवारा गूणीजै। लोग आयो आयो करता तिगवारी काढ दै। कुआ माटीवा जिणमे भी पाणी रो तोडो। कैवा चालै अठै रै लोगा री अकल भी माटीवा रै पाणी जितरी ऊडी व्है, ओछापणो नेडोई नी आवै। दिन मे लू रा लपरका चालै, देह रा सूळा बण जावै पण थानै तेजडै री वैम री छिया तळै हेरियो कातता मिनख उघाडा बैठा लाधसी। पाणी विना दरसन करै, पछै छिया वा री, ता छिया रै मारू ही कुण है। इण धरती माथै पीवणा साप, कैर कटाळा रूख अर आकडै फोगडै री छिया ही मिळै अर भुरट रै बीजा भूख भागै।

जिण भुय पन्नग पीवणा, कैर कटाळा रूख।
आवै फोगै छाहडी, हूडा भाजै भूख॥

रणदाद है इण रूखा नै जका साथ नी छोडै। इण मौसम मे भी आपरी रमाळ-सारगा, दालू, जाळोटिया, पीलू अर नीबोळी देवै। बळती तावडिया री साथ मे मेकदा ऊभा सागरिया, खोखा लूटावै अर छाछी-नरही चरावता टाबरा नै भाही देवै। इण तिगवारी, लूवा, कैसाट करतो आधी-अरूडिया मे ऊभा रोहिडा खिलै अर फूल गुलाब बिखेरै। कुदरत रो आपरो न्याव मे वी

नगर री गाळी है।

> मारवाड़ रा देस में, एक न भाजै रिड़्ड ।
> ऊपाळो में अं बरसणो, कै फारा कै निड्ड ॥

चिन है अठैरा आगा जमाना में जका गुद महाकाळ बळिया वाळ री कोई परवाह करै। अंबड़ रै तारै ऊभा अँयाड़िया तवोठ मे सीर जीमै अर मोज करै, अलगोजो बजावै। राईका माड्यां लारै टर्‌रहे, टर्‌रहे करता गायै रुनी गाल्या फिरै। लोग आपरी भूख मुरट री रोटी, बरडक बाटी, गुवा रै बीजा री रोटी, फोगलै रो रायतो, होवो-गुज्जी, राबडी जीम-जीम मिटाय काळ री पत्तू तोड़ नांखै। अठैरा लोग आपरी तिस दूध पी'र बुझावै, दूध मे रांधै अर घी मे अलोणै। कठैई जाय'र पूछो 'बाजी घीणो काई है? तो पडूत्तर मिलसी 'घी तंत नी, गायडं पतरैक दूजै है'। पनरा वीस गाया तो घीणा री गुमार मे ही नी आवै। लोगों रै मन चित मे ही आगूंच री चिंता नीं व्यापै। बैठा कोटडया मे जाजम ढाळया अमल गाळै, रंग रा दूहा पढै अर मांन मनवार चालती रै। पसवाई बैठा ढोली माड राग मे गीत सुणावै-ओळूडी, कुरजा, मूमल, वायरियो, काछबियो जिण सू बाळू रो रवो रवो सजीव हुय जावै।

काठा दोवटी रा धोतिया अर अगरखी पैंर्या, काना मे सांकळ्यां मुरक्या, काळी ऊन री कदोळी जिणमे चादी रा मांदळिया गूंथ्योड़ा, रंग बिरंगा साफा-मौळिया, चूंदडी, केसरिया कसूंमल बाध्योडा अठैरा मिनख घणा भला लागै। छेवटी ढाळया नेवरै पैरयोडा, मोरखा बेळ्यां सू लडालूंब गोरबंद लटकाया नाचणै रै टोळै रा करहा नचावता मुकलावै जावतै मोट्यार रै मोद री कांई पार? रूणझुण करती बैहली मे नीची निजरा बैठी मैंहदी लगायोडी नाजू, काळजा री कोर, हिवडा री हार बीनणी रै मन रा भाव कुण पढ सकै? डोकर्‌या मोठडा रा कुडता घाघरा पैर्‌यां खणक-खणक बिलिया बजावती घर बार रा काम दौड दौड करै। टावर ऊँचा ऊँचा धोतिया बाध्या हाथा पगा मे चादी रा कडोलिया पंर्‌या, माथै चोटी-चुगली मे मादळिया गूंथ्योड़ा हाथां कवाडको लिया लूक टाळी खागै।

लुगाया चूदड़ी, पोमचा, लैरिया ओढ्‌या, साडिया-लहगा, कळीदार घाघरा पैर्यां; बोरियो, रखडी, लडा, साकळी, मुरळिया, पत्ता, आड, तिमणियो कन्दोळो, कड़ला, आवळा, टणका, जौबें, नेवरै, साट्‌या पैर्यां, हाथां मे बिलिया, चाचा, तट्टा, गोखरू, हथफूल पैंर्या आपरै घर रो काम काज-बुहारो झाड़ो पीसणो पोवणो, दूवणो बिलोवणो, सिंझारो करै। तरै तरै रा जीमण-जूठी सीच,

रोटी राबड़ी, कैर-सांगरयां, फोगलिया-रायता, काचरा-मोठकां रो साग करै। ऐड़ै-टांणै गुगनीक मातरो अर वड़िया रो साग बणावै। टोकरयां सागी ओढणा टोपारै बैठी चरखो कातै अर आथण-दिनूगै बीनणियां रै काम री बगत पोता पोती रमावै, रिरै हथाया करै। डोकरा ऊनाळै रा बैठा माचा बिणै, डेरिया बांनै, गांव रा छोरियां बाई अर मराया गूंथै। मिनखां रा नावळ, वरडी, पट्टू बैगरो ओढयां, धूणी रै गनै तमाखू रो गट्टो मेल्या होका भरै, गल्ला करै अर मौज करै।

ऊनाळै री गरम लिवाब आगासीज आवै जद गुगनी आगलै जमानै रा सुगन विचारै। बळती लूवां रा वेग जेठ महीनै आपरी भर जवानी में वैवे पण असाढ़ आयां वगरो भेक नैड़ा हुं जद आभै मे बादळ दीसै। पावस धर पड़तां ही लूवां आपरा डेरा विरहण रै काळजै जाय नाखै। मेह री माया सावण-भादवै धरती माथै बिखेरीजै। ऊमस री आम वधै। तेजै री टेर मे बीज्योड़ो भादवै में बाजरियां, मतीरा, मिट्टा रै रूप पळापै।

'आई आई ए मा ए म्हारी सावणिया री तीज' गावती तीजणियां हींडै री निणिया गूंथ्योड़ी, सतरंगी चूनड़िया ओढ्यां, भीजतै चीर घणी भली लागै। तीज रै दिन पीहर मे नी रैवण री पीड सासरै बैठी रै सालै अर परनाळां पाणी पड़त बीज री भळाबोळ मे मैड़ी मे दियै रै चानणै बैठी विरहण रो मन घणो आकळ बाकळ हुवै। इण धोरां री धरती मे सावण अलायदो है।

सीयाळै खाटू भली, ऊनाळै अजमेर।
नागाणो नितरो भलो, सावण बीकानेर॥

बीकानेर री थळी राजस्थान रो नामी टुकड़ो है।

ऊठ मिठाई अस्तरी, सोना गहणो साह।
पाच चीज पृथवी सिरै, वाह बीकाणा वाह॥
जळ ऊंडा थळ ऊजळा, नारी नवलै वेस।
पुरस पटाधर नीपजै, अइयो मुरधर देस॥

इण धोरां री धरती माथै रामसा पीर, पाबूजी, गोगोजी, तेजोजी, जांभोजी, करणीजी अवतरिया। इण वीर भोम मे भाटी भड़ उतराद, चावा जग चहुवाण, पणवका सीसोदिया, रणवका राठौड़, जय जगळधर बादशाह आपरी वीरता गीतड़ा अर भींतड़ा मे अमर कीनी।

कळहठ बंका देवड़ा, विरतब बंका गौड़।
हाडा बंका गाढ मे, रणबंका राठौड़॥

इण मौर धरा री मौग अर समभावण रई है—

> उठा न दैणी आपणी, हालरियौ हुलराय ।
> पूत सिखावै पालणैं, मरण बड़ाई माय ।।

रणवीर पृथ्वीराज चहुवाण, राणा प्रताप, वीर दुरगादास, अमरसिंघ, जयमल, फत्ता सूं सेर डूंगजी जंवारजी, लोटियो जाट, गोपालसिंह खरवा, बारठ केसरीसिंह, प्रतापसिंह, परमवीर शैतानसिंह, हमीद अर कवेसरा सूरजमल मीसण, आढ़ै दुरसौ, बारठ ईसरदास, राठौड़ पृथ्वीराज, ख्यातकार स्यामलदास, मुहता नैण सी, सिढ़ायच दयालदास इण धरती री रजवट नै अमर कीनी ।

इण सदा सुरगै मरूधर मे रूप री गवर मरवण अर मूमल आपरा कू-कू पगल्या धरया । ढोलै-मरवण, मूमल-मैंदरै, बाघै-भारमली रै हेत रा गीत गाइजै ।

> मारू घूघट दिट्ठ मैं, एता सहित पुणिद ।
> कीर भमर कोकिल कमल, चंद मयंद गयंद ।।

इण धोरा री धरती रै सागै सेजै पाणी री भाय है, हरियाळी है जठै कोयला टहुका करै । भाखरां री धरती भी है । ढूंढाड़ रा लोगां रा ठट्ठा करीजै ।

> अदयो अस्तरियांह, गुण हीणी गोढाण री ।
> ज्यारी ऊधी ओजरियांह, निबळा माणस नीपजै ।।

पण आबू री छिब अतायदी है, निरखण जोग है ।

> टूकै टूकै केतकी, झरणै सू जळ जाय ।
> आबू री छिब देखतां, और न आवै दाय ।।

अपूणै राजस्थान रो सिरमौड़ उदैपुर है । भीलां री धरती रो भाठो वणनो ई सौभाग री बात है—

> भाठा तूज सभागियो, पीछोला री टाग ।
> गुलजा पाणी भरै, ऊपर दे दे पाग ।

फूलां री कामणी जैड़ी ललनावां अठै अलगै

> उदियापुर री कामणी, गोमाज कांई गान ।
> मन तो देवां रा डिगै, मिनखां किसीक बात ।।

बात भी साची है—

डर चवडी कड पातळी, भीणी पासळियाह।
कै तो हर तूठा मिळै, (कै) हेमाळै गळियाह॥

चित्तौड री तो भाठो भाठो देव अर घर घर धाम है। गढ तो चितौडगढ बाकी सौ गढ़ैया है। अठैरी माटी तिलक लगावण जोग है। धिन है इणरी गोद नै जिका अस्सी घावा रै राणै सागै नै रमायो।

गीध कळेजो चीलह उर, कका अत बिलाय।
तो भी सौ धक कत री, मूछा भ्रूह मिलाय॥

परताप जैडा सूरमा नै गोद मे लेलाया, लडाया।

जननी तू ऐहडा जणै, जैहडा राण प्रताप।
अकबर सूतो औझकै, जाण सिराणै साप॥

भामासाह जैडा साहूकार अर पन्ना जैडी धाय अठै जलमी जिको 'परताप भी फूला फला पन्ना तेरे परताप मे' अर महाराज चतरसिह जी, मीरा जैडा भगत हुवा 'म्हारै तो गिरधर गोपाळ दूसरो न कोई'। इण पवित्र भूमि माथै पमदणी जैडी बहू अर चेटक जैडा अणदागल घोडा रमिया।

लीला मो पहलो पडै कोध उतावळ काय।
वाल्हा कवळा पाळियो, पडता मूभ पुगाय॥

चितौड रा पाणी री कोई बराबरी नो है। मरण तिवार अठै मनाइजे, जौहर अठै रो व्रत है। बिला री काळी पडघोडी भींता पछीता जुगा सू यो इतिहास खोल्या खडी है।

इण इतिहास अर सस्कृति री धरोहर नै सभाळता थका राजस्थान हणै री सदी मे जो पसवाडो फेर्यो है, बीनै घणा घणा रग है। अठै मेह्मेह करता पीढ्या पूरी व्हैगी बठै इदिरा गाधी नहर रा छाळा मारतै पाणी मे बाग हुवै। जठै लोग हळ माथै हाथ नी देवता बठै री जमी धान निपजावण मे आगेडी है। बिजळी रा कुवा, बधा, कारखाना, रेला-मोटरा री सुकळायत सू अठारो मानखो घणो सोरो सुखी है। गाव-गाव, ढाणी-ढाणी मे स्कूला सफाखाना, बिजळी पाणी अर सडका री घणी सुख है। मेळा-डकोडा, वार-तिवार, ऐठ-ठाभै अठैरा बसेवाना मे जो हेत प्रेम है, अजब री बात है।

इण रूडै राजस्थान रो बखाण करता काई पार नी आवै, कता जितरा ई कम है। अठै री धरती माथै अवतरण नै देवता तरसै अर मन हिलोरै जिको अठैरा जाया जलम्या आपरै भाग माथै इतरावै, मोद करै, गुमान करै उणरो बडो भाग है।

माथा मोल बिकाय

'वीर भोग्या वसुधरा' वीर ही उण धरती नै भोग सकै जिका समरांगण नवरी मे विजयश्री वरण किया दत्त मिळियोड़ी व्है। प्राणा नै हथाळी मार्थ रारा भूमि नै मुजावा माथै तोलणिया नर-नाहरा री कीरत गीतड़ा अर भीतडा मे असी रासीजै। मरण तिवार, झवर अर सीधूराग री धरती मार्थ वीरा रो विरद अर सुजस जुद्ध रो चाव राखणिया चारणा (चाह+रण) ओजस्वी वाणी नू गायो है। इण वीर प्रसू धरती माथै वचना सारु शीश चढावणौ, सैनाणी मे सिर रो नजराणो मेलणो, कर्त्तव्य निभावण मे आपरै लाडेसर रो माथो सूपणो आदू परपरा रही है। अठै 'हथळेवै रो हाथ जवियो पण रचियो नहीं' बिचाळै छोड माथो देय मोल चुकाइजै, नकली किलै सारू जूझ मरीजै अर गढ मे पैली पूगण री होड मे माथो बाढ फैंकीजै। माण, मरजाद अर धरम री रक्षा में प्राण निछरावळ करण री अणियाता ठौड-ठौड लाधै। हरेक गाँव-ढाणी मे जूझारां रा थान-चूंतरा अर कूवा-तळावा मार्थ देवळिया थरप्योडी मिळै। कर्नल जेम्स टॉड साची कही है—

There is not a petty state in Rajputana that has not had its Thermopylae and scarcely a city that has not produced its Leonidas—Annals and Antiqueties of Rajputana.

माथा रा बिणज करण वाली इण वीर भूमि पर सैंस बार बळिहारी जावां।

> नह पडौस कायर नरा, हेली वास सुहाय।
> बळिहारी उण देसडै, माथा मोल बिकाय॥

वीर धरा रा वासिया नै कायर मिनखां रो पडौस नी सुहावै। जठै रणमत्त जोधार विचरै नहीं, पायल पडिया बरड़ावै नहीं, जूझार बापड़ा बाजै ण गाँव मे वसणो बाळै जैड़ो है।

> मतवाळा घूमै नहीं, ना घायल बरडाय।
> बाळ सखी ऊ डूगडो, भड बापडा कहाय॥

अठैरा सूरवीरा नै रे मारै री गाळ अर माथै मे मरण री मैली सानै। रणो घर रै मांसिया ब्रम नरस नै जाव' आंण रणनेता पोडणो सारु मार्थ

मानीजै। मरणै नै मगळ गिणीजै। कर्त्तव्य री वेदी माथै प्राणां री भेट चढावणिया टीपणो अर सुगन मरोधा नी गोधै।

सूर न पूछै टीपणो, सुगन न देखै सूर।
मरणा नू मगळ गिणै, समर चढै मुख नूर।।

मरण दिन जैडो सुरगो दीह भळै जोयो लाधै—

कर कृपाण मोरत किस, आगै वीर अबीह।
रण मर सरग सिधारणो, सु तो सुरगो दीह।।

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' मंत्र सू दीक्षित वीर रै युद्ध मे चढाई करण वाळो दिन घणै कोड रो दिन व्है।

रण चढण कंकण बंधण, पुत्र बधाई चाव।
ऐ तीनू दिन त्याग रा, कहा रंक कहा राव।।

मरण दिन री उडीक मे शूरवीर 'भड सिर खड्ग न भग्गि' री लालसा मे थोडै जीवण नै सिरै मानै। अवसर माथै मरण वाळा री कीरत अखी हुवै।

मरदां मरणो हक्क है, ऊबरसी गल्लाह।
सापुरसा रा जीवणा, थोडा ही भल्लाह।।
भला थोड जीविया नाम राखै भवा।
सेल ऊ भार वै भागला सिर सवा।।
कल चढै जोम चद जस नामी करै।
मरद साचा जिका आय अवसर मरै।।

'लोहड बढाई की करै नरा नखत परमाण' रो प्रमाण पाल्या बाहर पडता ही सिह सावक आपरी हाथळ पटक हाथी रो कुंभथळ विदार गजमोती बेर 'तूटी नख विवाव' चरितार्थ करै जाणै बाळा बादळ सू ओळा ओसरिया व्है।

बेहर कुंभ विदारियो, गजमोती खिरियाह।
जाणै बाळा जळद सू ओळा ओसरियाह।।

वीरता रा गुण उदर मे ही उपजण लागै जद पछै वीर बाळक जनमता पाण नाळो बाढण री छुरी बानी झपटै। भ्रूण मे भाव भरण वाळी मांवा धिन्न है।

हू बलिहारी राणिया, भ्रूण सिखावण भाव।
नाळो बाढण री छुरी, झपटै जसिरो साव।

पालणो हिंडावती मां 'मरणे मे ही मंगल' पाठ पढाय दै।

डिंगल काव्य में जुद्ध रा वरणन करता सिर पडिया पछै 'धडि लडसी गुडसी गयद नीठ पडेसि नाह' हाथा मे तरवार लिया लड़ण वाळा वीरा रो वखाण करीजै।

भडा जिका हूँ भामणे केहा करू बखाण।
पडियै गिर धड नह पडै, कर वाहै कंवाण।।

बिना माथै वैरी दळ नै विधूसता अचूभो आवै कै इणा रै आख हियै माथै है कै सीस माथै है।

मुझ अचभो हे सखी, कत बखाणू कीस।
विण माथै दळ वाढियो, आख हियै के सीस।।

विश्व साहित्य मे ऐडो दृष्टान्त अर वरणन दुर्लभ है पण डिंगल काव्य मे अनेक उदाहरण मिळै। भीषण तरवारा री झडी रै विचालै अचळ वीर शक्तावत केशवदास माथो पडिया पछै सोनलिया कटारी वाही अर आपरै कुळ री ऊजळी ख्यात अर विडद नै ऊँचो राख वैरी रे वाही।

विषमी वार खड्ग झड़ वाजै।
इसडी वहै अटारी।।
माथो धरण गया मेवाडै।
सोने रणी सभारी।।
विरद अगार अभनमै बळभद्र।
रिण रहो अचळ रहा ही।।
बढियै कमळ पछै वाढाळो।
बवूदै रावत वाही।।

च्यारू जुगा रो साखी सूरज कैवे, 'जुद्ध री बात घणी अनोखी है, उणरी थाह लेणी दोरी है'। भारथ मे भिडतै भियै सिसोदियै नै भूमिसात हुवा पछै वैर्‍या री तरवारा सू छागीपतै ढोल सू आगै वधता देख उणरो सिर पडियो पडियो वाह-वाह करै।

जुग चार हुवा मो भारत जोता।
अरथ कहे ऐ बात अथाह।।
भीम तणो भाजै धड भवसा।
माथो साबासे रण माह।।
विडतो भीम सीसोदा वधतो।
साखी सूर उडते साम।।

मर जांणै जिका ही मरणौ सिखावै। सीस देय सकै जिका ही सीस देणो जांणै। वीर शत्राणी रो सैनाणी मे सीस समपणो सियाजी सूं भी इधको वणियो है।

> सत री महनाणी चही, समर सलूवर धीस।
> चूड़ामण मेली सिया, इण धण मेल्यो सीस॥

वीर मातावा री भौळावण व्है रण खेत मे वैरी सू जूझ भलां ही तू दो घडी तिंदुक री लकडी दाई सैचनण कर बुझ जाजे पण भूसी री आग दाई कोरो धुवौ कर पराजय रो जीवण मत जीवीजे।

> अलात तिंदुकस्येव मुहूर्तमपि विज्वल।
> या तुषाग्निरीवानचिर्धूमायस्व जिजीविषु॥

आपरी वीर माता रो दूध उजाळण वाळो पुरजा पुरजा कट पड़ै। पचमीगत पाथ सूरवीर सपूत 'मां नह हरखी जनम दे जितरी हरखी आज' उजागर करै अर 'मुआ जूझ जे रणमंही ते नर ऊवरियाह' री पाथ मे जाय ऊभै। ऐहड़ै वीर रै मोळिया री उडीक रातीजै। उणरी अद्धंगी नै पतियारो हुतो कै उणरै लाबी पैहरतां वैर्यारी घणी जोड़ायता आपरो सुहाग गमाय देसी।

> मैं परणंती परखियो, तोरण री तणियाह।
> मो कर चूडी उतरसी, (जद) ऊतरसी धणियांह॥

जूझ मरण री बधाई नै उडीकती पति रै सुरग नी पूगण री सुण पीळी पड निसासौ नाखै 'पिउ केसरिया नह कियाहूँ पीळी उण रोग'। सूरा नै आपरो सुहाग आछो नी लागै।

> यो सुहाग खारो लगै, जद कायर भरतार।
> रडापो लागै भलो, होय सूर सिरदार॥

रणभेरी, गर्जना, वीरहाक, खागां री खणकार, सोहीं रा सळरता नाळ डिंगल काव्य रा वीर रस मे प्रतिध्वनित हुवै।

> दुवसेन उदग्गन खाग समग्गन आग तुरग्गन वाग गई
> मचियग उतग्गन दग मतग्गन सजिभरनग्गन जग जई।
> लगि वग्ग लजावन भीर भजावन वार बजावन हार बढ़ी
> जिम मेर गग्गवर यों लगि अवर धड़ अरवर गेह चढ़ी॥

विकट जोधारां री भिड़त सूं कम्पायमान धरती नै धारण करण वाळो शेषनाग आपरी नागण नै समझावै।

> नाग दबैला को नहीं, नागण पर मत भार।
> इणरा जोधा जनम रै, भार सिरावां भार॥

डिंगल काव्य में जुद्ध रा वरणन करता सिर पडिया पछै 'धडि लड़सी गुड़सी गयद नीठ पडेसि नाह' हाथां मे तरवार लियां लड़ण वाळा वीरां रो बखाण करीजै।

भडा जिका हूँ भामणे केहा करू बखाण।
पडियँ सिर धड नह पडै, कर वाहै केंवाण॥

बिना माथै वैरी दळ नै विधूमता अचूभो आवै के इणा रै आग हियै माथै है कै सीम माथै है।

मुझ अचभो हे सखी, कत बखाणू कीम।
बिण माथै दळ वाढियो, आग हियै के सीम॥

विश्व साहित्य मे ऐहो दृष्टान्त अर वरणन दुर्लभ है पण डिंगल काव्य म अनेक उदाहरण मिळै। भीषण तरवारां री झडी रै बिचाळै अवळ वीर शक्तावत केशवदास माथो पडिया पछै मोतनिया कटारी वाही अर आपरै कुळ री उजळी ख्यात अर विडद नै ऊँचो राख वैरी रै वाही।

विषमी वार खड्ग झट बाजै।
दगडी वहै कटारा॥
माथो धरण गया मेवाडै।
सात रणी सभारी॥
विरद अपार अभनमै बळभद्र।
रिण रहा अवळ रहा ही॥
कविये कमळ पडै काढाळी।
बकूडै रावत वाही॥

[illegible] जुद्ध रा लागी सूरज बंद, जुद्ध रा [illegible] अजन्मी है [illegible] थाट लेणी होरी है'। भारत मे [illegible] [illegible] वैरया री तरवारां सू [illegible] होम सू अर [illegible] [illegible] पडिदो वाह-वाह करै।

[illegible] आवै।
[illegible]

सूरापण री श्रेष्ठता अर पराक्रम री पराकाष्ठा रो वर्णन डिंगळ साहित्य मे ही सार्धं। ऐड़ी घणी बाता घुई तापता, हपायो करता, अमर नै रग देवता सोगड़ा बिड़दायता करें। दूजी ठौड़ा ऐड़ी घटनावां मिळै, कै नी मर्वा। इण ओळ्या रै मिगर पुरन्धर (पूना) रै किलै मे वीर मुरारी राजी री अश्वारोही मूर्ति दीठी है जिण रै बारै मे माथो बढ़ियां पछै जयसिंह रै सामी लड़ण री ख्याति फैल्योड़ी है।

इण अलौकिक शक्ति रै मूळ मे जीवण रो ध्येय, कर्तव्य भावना, नैतिकता, आदर्श अर उण वगत रा सामाजिक मूल्य है। वीरा री मौत मरणो ही जीणो है। मा रो दूध अर कुळ री कीरत मारग दरसावै। कर्तव्य रै आगै जीवण रो मोल नी जैड़ो है। जनम भोम री रक्षा अर स्वामीभक्ति री पाळणा मे सब कुछ होम देणो, जीवण रो लक्ष्य मांनीजै।

ले ठाकर वित आपणो, देतो रजपूताह ।
धड धरती पग पागड़ै, अन्नावळि पीड़ाह ।।

वीर पुरुष 'सूर जतन उणरो करै जिणरो खाधो अन्न' निभावता कर्तव्य री पाळणा मे सीस अरपण करै। ऐड़ा कूख उजाळणिया री जणणी नै घणा रंग दिरीजै।

हू बळिहारी राणियां, जाया वश छतीस।
चूण सलूणो सेर ले, मोल समप्पै सीस ।।

जयमल अर फत्ता चितौड़ दुर्ग री रक्षा करता आपरा प्राण निछरावळ कीना। किलो कयं, 'रे जयमल दिल्लीपत अकबर रै चढ आयां महाराणा मनै बिचै छोड दियो अबै राठौड थारी भुजा भार है, ध्यान राखजे।' जयमल कयो, 'थारो धणी तो महाराणा ही है, म्हू तो उणां रो राजपूत हू। सिर साजो रै जितै तो परवाह मत कर। म्हारो माथो बढिया ही अकबर थारै माथै कब्जो कर सकै, पैला नही।'

ढिल्ली पह आया राण अत ढिल्लियो।
तिण सूं कहै चित्रगढ तूझ ।।
जयमल जोध काम तो जोगो।
मारआ राव म डोल स मूझ ।।
जपै एम दुरग सूं जयमल।
हूँ राजपूत धणी तो राण ।।
मत म कर सग सिर साजो।
सिर पड़िया लेसी सुरताण ।।

बादशाह रावल पने चूंडावत नै कैवे 'पता मोनूं कूंची दै, धिणियाप बदळ्या हळमण कर' पत्तो उपनो दियो, 'अबै गढ़ म्हारो है अर चूंडावत सिसोदा भी दे। गढ़ मे गोळा गूंजे है, सेनापति धीरज धार्‌या बैठा है पण पृथवी रो तीजो नेत्र जगा गुन पत्तो जागे है, जीवता मूंपण वाळो नी है।'

कहे पतसाह पता दो कूंचो।
धर पमट्‌यां न कीजै धोड़ ॥
गढ़पत कहै हमे गढ़ माहरो।
चूडा हरो न दियै चीतोड़ ॥
गोळा माळ धमंग गढ़ गाजे।
गाहै मीर साधीर घणो ॥
जगा सुत नंह दियै जीवता।
तीजो लोयण प्रिथी तणो ॥

इण भात रणचका रै रगत सूं रजित धरती रो कण कण वीर गाथावां सूं भरियो पड़यो। आपरी आन, बान अर शान री रक्षा मे मृत्यु रो वरण अर अपछरा नै परण वाळा आतम बळिदानी वीरां रै ओपता बळिदानां री ख्याति बेल खूब पसरी। अनेकूं कवि इण फुलवाडी री रक्षा करता संसार नै सौरम लूंटाय धन्य हुवा। वीररस रा कवियां मे घणकरा चारण हुवा। चारणां रो अन्याय रो सांमनो कर सत्याग्रह करणो, तेलिया करणो, आत्मदाह अर आपै कटारी खावणी, तिल तिल मास छून अगन मे होमणो जग जाहिर है। इण चारण जाति सूं वीर रस वर्णन सोनै मे सुगध है। चारण कवि कलम रै सागे तरवार रा धणी हुता अर युद्ध क्षेत्र में प्रेक्षक रे रूप मे तेडीजता।

रण हालीजै चारणां, चाहे अब लग चैन।
करै सुहड जिसड़ी कहो, विध सो दूर वर्ण न ॥

हाला-झाला रा जुद्ध मे बारठ ईसरदासजी नै तेडिया। गढ गागरोन रा खीची अचळदास मालव सुळतान सूं जुद्ध मे आपरी कीरत नै अमर करण वास्तै कवि गाडण सिवदास नै युद्ध क्षेत्र सूं निसरण वास्तै राजी कियो। इसडा कवियां रै पाण ही जुद्ध कर सुरग पूगण वाळां वीर पृथ्वीराज चौहाण, कान्हड दे, हम्मीर, गोगदे, राणा प्रताप अर अचळदासजी खीचो री ख्याति अमर हुई।

पीथल कान्हड़ दे पतो, गोग हमीर हटाळ।
साको कर पहुतो सुरग, अचळो ए उजवाळ ॥

वीर रस रा चावा ग्रन्थ आखी दुनिया रै इतिहास मे टाबो ठोड राखै। पृथ्वीराज रासो, वीरमायण, पांडु यशेन्दु चन्द्रिका, हाला झाला रा कुडळिया,

हिंगळाज री वडो अवतार आवड जी मानीजै जिकां रो जनम मामड जी चारण रै घरै वि. सं. 888 चैत सुदी 9 शनिवार नै हुवो।

धिन्न जैसळमेर धरती गांव चाळक गन्न।
सात्वा नग्ग तणै सूरज मामडा कवि मन्न।
तो धिन धिनजी धिन धिन धारी देह उण घर धिन्न ।।
सम्म अठ्यासी आठ सम्मत सुद चैत मास विचार।
नमो तिथ शुभ दीह नवमी वरतियो शनिवार।
तो अवतार जी अवतार आवड अम्ब रो अवतार ।।

आवड जी रै अवतार पछै मुरधर में जगळधर धणियाणी करनल किनियाणी री मानता सवा सू इधकी। करणी स्तुति-गीत हुकमीचंद खिडियो कथै—

वंदा वरन्नी अलोका सेदा तुलज्जा तरन्नी वाला,
रसी शूळ सोका ओका भरन्नी रगत्त।
अधोका राकेश शीश धरन्नी धरन्नी ईश,
सरन्नी त्रिलोका नमो करन्नी सगत्त ।।

शक्ति उपासक चारणा में देवी रूपा कन्यावां सुआसणी कहीजै अर 'नवलाख लोवडियाळ' अनै 'चौरासी चारणां' रो विरद वखाणीजै। करणीजी मरूधरा रै माणसा रो सासो अर कष्ट मेट सुख-सोमती कीनी। अनेकू चारण देवियां राजवंशा माथै तूठ कुळ देवी मानीजी।

आवड तूठी भाटिया, गोगाई गोडाह।
श्री विरवड सीसोदिया, करणी राठोडाह ।।

जगदम्बा करणीजी रो मोटो धाम देसाण शक्तिपीठ रै रूप पोखीजै। चंपा आंव ज्यूं गंगभग, वोरडिया वळिहार छिव, देपासर करणीसर कुए रो गंगाजळ रै जोडै इमरत पाणी, मढ में किलोळ करता कावा रै विचाळै विराजता मेहामदू करणीजी रा दरसण भली पुण्याई, भला भाग अर भला ऊगतै भाण भलाई हुवै।

ओरण चंपा आंव ज्यूं जळ गंगा जोडीक।
देसाणं मढ देखिया, कावा नग कोडीर ।।

पण 'हुकम बिना हिक बार देसाणो दीठो नहीं' अर 'अळगै सूं आवो वळै कदै मढ कीमह्य' बीणती करता नै 'दरसण करनल देव रा हुं तूटां रहमाण

मवर देवै नै नारेळ वदावो ।' दिना राजी हुवा, पारवती रै अवतार करणी माथ सिव रो अवतार देवो बर हुवो ।

साठीको सिरताज, राज सासण जग रैणा ।
वीठू बुधि विसाल, नाग मुख सोभा नैणा ।
यू मेहै आनियौ, मेळ घर देवो कवर ।
इण वड तुळै न और, वळ करग्या किन्यावर ।
गोयाव धाम विनियो मुवै, करनल किन्या अनाद कर ।
दिव अन ईसवर देवसी, मन्नै स्वयवर मेह घर ।।

साठीकै पूत सिव-सगत री जोड देवा-करणी जी वधाईज्या । घणा हरख कोड, मगळाचार हुआ । पछै देवैजी रै करणीजी री इच्छा सू चार बेटा हुवा—पूनो, लाखण, नगराज अर सीहो । देवैजी रा वसज देपावत बाजै ।

प्रथम कवर पाटवी, सुवै पुनराज सिधाळो ।
नगनवळो नगराज अठै कुळ सीह उजाळो ।
जुग लाखण जगवास, लिया वृद आदू लाखण ।
देप सुतन कुळदीप मोट वनवृट मुगटामण ।
धीरज विवेक आचार ध्रम, लाखण राह मजाद रा ।
नीत रा पुज विद्या निपुण, पह छोगा प्रथमाद रा ।।

करणी री किरपा—

चवदै सौ पिचोतरै साठीकै वाळ पटचा करणीजी गोळ लेय जागळू रा जोड मे डेरो दीनो । राव रिडमल आय अरज करी 'बाई जी अठै रो धणी तो थानो है, आप म्हारै चाडासर पधार विराजो । करणी जी कयो, 'मनै तो आ धरती थारी ही थारी दीसै है' । इण तरै रिडमल नै राजा वणण री आसीस दीनी सुण'र वानै रीस मे भाभडा भूत होय जोड सू निसरण री कयी । करणी जी बोल्या, 'म्हारी आ पूजा री पेटी करड गाडै माथै मेलदै, म्हू हणै टुर जाही' । करड हलाया नी हाल्यो । एक पावो खाडो हुवो । वानै रो वाळ तेडीजै ।

भिजवाळ अरजण करण वाता इळा उपर आविया ।
कर कोप कटक दुप्ट वानै तेण जोड जुळाविया ।।
रम रैवा मैवी तिल न सिगियां करड भेर करण ए ।
चारणी चढिया पाट चारण, जरस करणी जग ए ।।

वानो वोलियां, 'म्हारी मिरतू हणै रा हणै करा' जिद कीनी । छेकड करणीजी वार काढ बोकारयो, 'कार लोप जै मरणो चावै ।' राने पोटै रै

ऐड लगाई अर कार खोपतां पाण वाघ री झपेट मूं ढिगली व्हैगो।

> घानें खोपी कार, मत हीणो आयो मरण ।
> वाघ थई तिण वार, सज हाथळ मेहासधू ॥

जांगळू री गादी रिड़मल नैं बैठायो।

झगड़ू शाह री समंदर में डूबतो जाझ 'धाये धाबळवाळी' पुकार सुण गाय दूहतां बांह पसार उबार लीनी।

> गो दूता घर आंगणे, वणिक तणी सुण वाणि।
> तरणी झगड़ू तारवा, पसर्‌यो करणी पांणि ॥

करणी जी रो लाडेसर लाखण कोलायत तळाव में डूबग्यो। बेटे है करणी जी सुरग सूं पाछो लाय जीवाड़ियो अर देपावता नैं कोलायत बरजनीक करी।

> लख्यो सुरग सूं लाविया, मर्‌या पछै सुत मात ।
> काबा हुय मढ में कुशी, जाय न जमपुर जात ॥

उण दिन सूं काबो मर देपावत अर देपावत मर काबो हुवै। धोळै बारै री दरसण मोटो मांनीजै। माया जोगमाया री है।

देशनोक राजतां करणीजी कनै बीकोजी अर कांधलजी जोधपुर सूं 100 असवारां अर 500 पैदलां साथै आय धोक दीनी। करणी जी क्यो 'बीका थारो परताप अठै जोधै सूं सवाई बाजी हुसी अर घणा प्रानिया थारा पायनामी हुसी।' बीको करणी जी रै कैणा सूं पैला तीन बरस चाडासर में रयो पछै छः बरसां ताईं करणी जी कनै ठैर परो कोडमदेसर गयो। बठै रायावळो पड गढ बणावण लागो जणा करणी जी पाल दीनी।

आं दिनां पूगळ राव सेखो धाड़ा मारतो पकड़ीज मुळतान बंद में बैठो करणी करणी करै।

> वाहू चलो निरमळो, मन मीभळो गुरस ।
> आजै करनल अवरळो, गयळो कर गगस ॥
> गेना बळ नह गाथ, जान भान नह बळ जठै ।
> नृप हुय बण्यो अनाथ, शरम माय थारै मनर ॥

करणीजी विचार कियो, 'जे बीकै नै पूगळ परणावां तो उणरो मन बधै।' आ जाण सेखै री राणी सूं बीकै वास्ते कवरी रंगकंवर रो हाथ मांगियो। करणीजी आप बीकै नै परणावण साथ पूगळ पधारिया अर कवरी

मे कन्यादान री वेळा शेखै नैं साथ पुगायौ। 'गवळी वाळी रूप धरि पूगळ दीध पुगाय' उण दिन सूं चील रो दरसण सुभ मानीजै।

करणीजी रो ध्यान भूकावण नैं गोगोळाव रै बाळू पेथड अर मूळामर रै मूंजै मोहिल गाया घेरली। गोरी दसरथ मेघवाळ जुझ काम आयो। करणीजी आर पढ दुष्टा नैं मारिया। दसरथ रो थान मढ में पूजीजै।

इमै करणीजी बीका रै गढ री नीव रातीघाटी में रखाई अर वि. स. 1545 में किलो बण'र त्यार हुयो।

पनरैसै पैताळवै, सुद बैसाख सुमेर।
थावर बीज थरप्पियो, बीकै बीकानेर।।

पूगा जोत परस्म–

पछै करणीजी आपरै हाथां सूं बिना चूनै-गारै भाखर रा टीळ रा गुंभारो बणाय जाळ रा लकड़ां सूं छत कीनी। ओ गुंभारो देसनोक मढ में है ज्यौ रो ज्यौ अजै है जठै करणीजी री देवळी थरपीजरी है। गुंभारो बणाता पछै आप जैसलमेर पधार रावळ जैतसी रै पीठ माथै हाथ फेर असाध रोग दूर थपन कियो। वठै आप कारीगर नै आपरो रूप बता मूरत घड़ण रो कयो।

गुण रै धाम गिलायटा, कारीगर बनिवाल।
मूरत घड़ दे मा'रगी, भला सद दयाल।।

नै किनर न भी माई जद आवगी नगार माथै डूहा गुडाया।

धम धम बाज नगारड़ो, हुवै नरीबो हल्ल।
माता आवै गरभड़ी, किनियाणी करनल्ल ॥
बाडाळी बरनाळ, गडाळी अंबर गई।
गाडाळी महनाट, डाडाळी ऊपर करै ॥

मुगल सहजादै कामरान बीकानेर माथै भटनेर (हनुमानगढ़) चढ़ाई कर दीनी। बीकानेर राव जैतसी देशनोक जाय देवळी आगै कूंच्या नाव स्याय री आपणा करी।

जैत समप कर जोड़ियां जोहा एह जपत।
करनल रिड़मल बावरी पाळ करो निसक्त ॥
पाळ करो निसक्त जेज नह कीजिये।
जैतो सरणं राय उबारै लीजिये ॥
लिया संग नवलाख सकतिया मूलरा।
आयो करणा देवि उवारण आपरा ॥

करणीजी री किरपा सूं जैतसी री जीत हुई।

वि. स. 1705 करणसिंहजी अटक माथै बादशाह औरंगजेब री नावा तोड़ 'जय जंगळ धर बादशाह' री पदवी पाई। जणा बादशाह रीसाय बीकानेर माथै फौजा कूच करी। करणसिंह जी चिरजा बणाय करणीजी नै अरदास कीनी।

भिड़ती खुरसांण जितै दळ भाजा, आयो करण तिहारी ओट।
बीकाणो देसाणै बासै, करना दे पळटो किम कोट ॥
मुगला दळ मेटे मेहाई, धर जंगळ सिर पाव धरो।
बीकै दुरग थापियो बाको, काटा सरण उवेल करो ॥

औरगजेब फौज ने पाछी मोडाय करणसिंहजी नैं बुलाय औरंगाबाद रा सूबेदार बणा मेलिया जठै बा करणीजी रो मढ बणाय करणपुरो गाव बसायो।

इण भात करणीजी रा अनेकू परचा प्रवाडा प्रसिद्ध है। वानै सभी जातां रा लोग पूजै। दूर दूर रा जातरी जै माता जी री बोलता आवै। माजी सा मोटा धणी है।

जोग पथ शकर तजै, हूं गिर मेरू गरवर।
करणी ऊपर नह करै, (तो) ऊगै केम अरवर ॥

(छप्पय)

धरती माथी धरा, शेष नह भार सभावै।
बड्डै दाढ वराह, कमठ पण पीठ बचावै।
ऊगै नहीं आदीत, सी नभी पडै सियाळै।
वाजै न ग्रीषम वाय वृष्टि नह व्है बरसाळै।
जिन वेद झूठ वायक कहै, रसना धर दाकर चलै।
सेवगा तणा सेहा सहू, साद न करनी सभळै।।

मेहाई करणी जी टनाई थोक है।

करणीजी री आथना—देश री नाक (इज्जत) देशनोक वसाय करणी जी मर्यादावां तय कीनी। ओरण नै अभयारण्य मान जीवहत्या, हिंसा, पापाचार, मद्य-मांस वौपार री मनाही कीनी जिणमें माळी-बाडी करणी अर कुम्भार न्याव पकावणों भी मना है। ओरण री छडी वाढणी मोटो गुनो मानीजै। लोग करणीजी रो बाप गारी जद हीज बारह कोस रै गेड में दस हजार बीघा गोचर होणै सूं धन-वित्त, ढेवड नै चारो अर गरीबां नै रुजगार मिळै। ओरण में नेहडीजी मिंदर में, आथण-दिनूगै खेजडी री आरती उतारीजै। बीकानेर महाराजा गंगासिंहजी ओरण मोरै सूं पाळा पधारता। रेल अर सड़क भी वोरदिया न टाळ काढीजी। जठै जठै करणीजी रा मिंदर अर चारणां रा गांव है बठै-बठै ओरण छोडण री इण रूडी परम्परा री आज वन संरक्षण अर पर्यावरण सुधारण में कितरी उपयोगिता है।

समाज में किणी भांत री वर्ग विषमता, ऊंच-नीच, भेदभाव नीं हूंणो चाहीजै, इण बात री शिक्षा करणीजी रा आदर्श में मिळै। पुराणै जमानै में तो पक्को मकान बणावण री भी मनाही हुती। अबै जमानै रै सागै पक्का मकान तो बणै, घणी हवेलियां बणगी पण फाटै जरूर। करणीजी रो परचो है। कच्चा आसराम नीं फाटै। आज गांव में एक भी पोळ वाळो मकान नीं है। मादळिया वाळो मोटो तक नीं बणावै, करणीजी री आथना मानै। रहन सहन सादो अर समानता वाळो हूंणो चाहीजै, करणीजी री शिक्षा है।

समाज नै विलासिता अर आडंबर सूं बचावण सारू लोग पलंग, पालणो, घूघरा वाळा गैणा रो उपयोग नीं करण री शिक्षा मानै, घोडै चढ तोरण तक नीं वादै। करणीजी रै धोक देवण नै बीद-बीनणी पाळा आवै। लारै बारा साली भलाही आखी जिंदा में पाछा जावता चढो तो चढो। ब्याव पछै सभी जाता रा लोग, सवर्ण, हरिजन गठजोडै री जात देय घर में प्रवेश करै।

नवरा पूज पंथा रावर में करणीजी रै आदर्श सिटाव, पर्द घर रै काम लागै। करणीजी रै मावेळ अपार शुभ काम, मोहरम, प्रस्थान करीजै।

करणीजी मे हिंदू, मुसळमान, हरिजन सब धोकै। देशनोक री घणकरी जाता करणी आप बणोडी। तेली तेल चाढ़ै, जिजारा बाटा नै रुई पुगावै, वारीदार ओ रै गिरी भरै। इण सेवा रै सारै लाडू-गोपरा, प्रसाद पावै। मढ मे दशरथ मेघवाल रै धान करणीजी री जोत सूं आरती उतारीजै। देशनोक मढ आपसी सद्भाव, भाईचारै अर एकता रो गढ है।

सावण भादवो प्रसाद—

करणीजी री पूजा उणारै च्यारूं बेटा रा वंशज वारी वारी सूं एक-एक महीनो करै। पूरै महीनै वारीदार नै मढ मे ही रैणो, आचार-विचार, शुद्धता रो पूरो ध्यान राखणो अर सच्चे मन सूं पूजा करणी। सुबह चार बजे मंगळारती। काबा रै आगा, लाडू, दूध चढ़ै। नो बजे वारीदार रै परिवार वाळा मढ रै रसोई मे खीर, पूड़ी, हलवो, लापसी वणाय भोग लगावै। सोधारे मिळतै जोत आरती करियां पछै भोग ओरूं लागै। रात रा दस बजे ताळा सभाळा हुवै। रातीजोगा री जोता हुवै अर घी-सामग्री कीमत देय दूजी जोतां करण री भी व्यवस्था है।

माघ, भादवो, आसोज, चैत बडा महीणा अर चानणी सातम, चवदस बड़ा दिन। लोग सैंकड़ूं, हजारूं रिपिया री कड़ाय (सवामणी) करै। प्रसाद मढ मे ही वणाय भोग लगाइजै अर वाटीजै। अबै मढ मे बळी बद है।

सबा सूं बडो प्रसाद सावण भादवो कहीजै। सावण अर भादवो नाव रा मोटा कड़ाव है जिणमे नब्बे मण गेहूँ रा बाट री लापसी वणै। गुड, देसी घी, मेवो उण हिसाब सू लागै। बणी वणाई लापसी अंदाजन 13000 किलोग्राम वणै। मोटै हिसाब सू इण प्रसाद माथै कोई 50-60 हजार रिपिया आजरी वखत खरची बैठे। ऐडो परसाद तो कोई बोलवा करण वाळो बीसा बरसां मे एकर करै। कई दिना पैला त्यारिया हुवण लागै। परम्परा सूं गाव रा दरजी धजावा बैतै, नाई गुड़ गाळण रो काम करै, ब्राह्मण बाट चोपडै अर मोट्यार लावा बळा रा बणायोड़ा खुरपा हलावै। एक दिन परसाद ठरै अर दूजै दिन भोग लागै। चौखळै अर गाव रा लोग भेळा हुवै। सबनै परसाद बाटीजै, हजारूं कोसा परसाद पुगै। इण पट्शती साल मे भादवा सुदी 14 ने सावण भादवो हुवो।

मूंडै बोलतो शिल्प—

गढ री विणगत करणी मढ रो भाठो मिळै नही। करणीजी रै निज

विशन विशन तूं भणि रे प्रांणी

मरूधर री सिरोही में चौकड़ी भरता हिरणां री टोळियां देख'र मनै हाँ टा पड़ै कै अंठै विश्नोइयां री ढाणियां है। विश्नोइयां रो बिरछां अर वनचरां सूं हेत जगचावो है। आज पर्यावरण अर प्रदूषण आखै मुलक रै सोच रो विषय है। अणापुध रूंखां रै बढ़णै अर प्रकृति रै संतुलन नै रोळगदोळ सूं बचावण में निर्णायक कीन सूं भयकर परिणाम भुगतणो पड़ैला। हवा, पाणी अर अन्न में दूषण सूं निरोगता री जड़ां मुळण लागी है। जीव-दया, सत्य अर अहिंसा आपणी घणमूंघी रावापोषी है। वेदा री निरमळ वाणी मे रूंख पूजा नैं देवपूजा मांनी है। अठै गांवा रै च्यारू मेर लोक देवतावा रै नांम सूं ओरण छोडीजै।

विश्नोइयों रै धर्म गुरु जाभंजी री ओसाप अर गुण आ धरती कदेई नी विसार सकै। विश्नोई धरम रा गुणतीस नेमा में जीव दया पाळणी अर रूंखां री रिछपाळ आज भी शाश्वत अर सनातन है। वन प्राणी प्रतिपाळ, पेड लगाओ अभियान अर चिपको आंदोलन री जड़ा इणमे लाधै है। जीव-दया अर रूख-रक्षा विश्नोइया री मोटो धरम मानीजै।

करै रूंख प्रतिपाळ, खेजड़ा रखत रखावै।
जीव दया पाळणी, रूंख लीलो नहिं घावै॥

मरूधरा रै महापुरुष अर संत जाभंजी रो जलम नागौर कनै पीपासर में लोहट जी पवार रै घरै माता हासादेवी भाटी री कूख सूं वि सम्वत् 1508 मे हुवो। परमानन्दजी री साका मुजब, 'कळजुग मा सबै ध्रम वच्छेद हुवो पछै सम्वत् 1508 वर्ष मिती भादवा वदी आठम वार सोमवार कृतका नषत श्री विशंनजी गाव पीपासर मध्ये लोहट पुवार रै घरै चरित रूपी परगट हुवा, पार किणी पायो नही।' परमसत्ता विष्णु धरम राखण अर शुभ काम निस्तारण सारु अवतार धारण करै। जीवा री मुगती वास्तै ऊंई जळ री भूमि माथै म्है अवतार लीनो है।

गढ आलमो त पाटणि भुम नागोरी
म्हे ऊंडे नीरे अवतार लियो।

अठगी ठगण अगज्या गजण
ऊनथ नाथण अनू नवावण
काही को गैचाळ नयो ।।

जाम्भेजी बाळपणे मे अलेखू चिमटकार परवाडा दरसाया। आप जलम-घूटी नी ली, ना कदै माता रा थण जूग्या, ना जमी माथै पीठ टिका'र सूता।

पलक न फुरकै पूठिधर, उदक न नींद अहार।
नर गुर भेद न जाणई, नर देही निरहार।।

हारे मे कढावणी मे दूध उफणता देख हिंडोळे मे सूतै बाळक जाम्भेजी कढावणी उतार हेठी मेल दी। हामा आई तो हिंडोळै अर हारै बिचाळै पग मंडिया चक्का निजर आया।

सात बरस बाळ लीला कीना पछै जाभोजी पशु चरावता पीपासर रै कुवै हुवा जठै राव दूदै जोधावत डेरो कर राख्यो। जाम्भेजी पैला बकर्‍या नै पाणी पीवण रो कयो। अचूम्भै री बात बकरो एक भी मेळी रै नैडो नी आयो। दूदै उठ आदेस कीनो अर मेडतो पाछो पावण री अरदास करी। जाम्भेजी दूदै ने काठ-मूठ री तरवार अर आसीस दीनी।

प्रथम प्रवई दूदो मेडतियो, पीपासर परचायो।
बरमग जु देसोटो दीनो, सतगुर पाछो पठायो।।

भाट री वही मुजब 'सवत् 1519 मे दूदैजी नै परचो दियो अर वमधज राजा कारणै बरस अठारा देवि' सू पतो लागै कै सवत् 1526 मे राव जोधैजी नै आप बैरीसाल नगाडो दीनो जको बीकानेर रा राजचिन्हा मे अजै है। राव जोधो अर बीको जाम्भेजी रै प्रभाव मे हुता। राठौड राज-घराणा मे जाम्भेजी री मानना घणी हुती। गुणतीस धरम नेमा मे लीलै रूख अर खेजडै री प्रतिपाळ सारू राठौड राज्या मे आदेस जारी हुआ।

जाभोजी आपरा माता-पिता रै सम्वत् 1540 मे देवलोक हुआ पछै सब धन सम्पत्ति त्याग समराथळ धोरै माथै आय रैवण लागा। सम्वत् 1542 मे काळ पडियो। जाम्भेजी लोगा नै अन्न, धन रो मदद देय दुभिख रा दिन तोडाया। पछै 1543 कार्ती वदी 8 नै समराथळ धोरै सिनान कर हाथ मे माळा लेय मुख सू जाप करता कळस री थरपणा कर बिसनोई पंथ चलायो। सबा सूं पैल आपरो काको पूल्होजी दीक्षित हुआ, पछै दूजा लोगा रो बिसनोई बणणो सरू हुवो सो अमावस ताणी चाल्यो। बिसनोई धरम अंगीकार कर प्रचार करण वाळा मे बसूबी (लाडणू) रा सामोर तेजोजी चारण 1543 मे

बिश्नोई पंथ रा जांभोजी नैं गुरु बणायो। पंथ रा मानीता तेजोजी र
चारण धूहड़ अर पूरा मन मानीजै।

नगण तंत झंणकार, ताळ भोगळ तमकसुर।
तवन सूर ततहै, गट रणकं घण घूघर।
सुणो भेद जोगंदी, हुवँ तेवगां गुंणो गिर।
पड़ै भय पातिगां, गड़ै नीसाण गहर सुर।
पच तेत पवरां जोड़ि कर, कवत गीत भाखत गुण।
भगवान भगत भय भंजिया, महलि पधारे महमहण॥

उदोजी नैण मुळतद राव री जमात साथै समराथळ आय जांभेजी
सबद गुण भेला बणाया।

विसंन विसन तूं भणि रे प्राणी जे मन मानै रे भाई।
दिन को भूलो राति न चेत्यो काय पड़ि सूतो आस किसी मन थाई।
कुड़ै काची लगवाड़ घणा है कुशळ किसी रे भाई।
हिरदै नाव विसन को जंपौ हाथैं करो टवाई॥

अजमेर रा सूबेदार मल्लूखान सूं नेतसी सोलंकी नैं छुड़ायो अर सब
कहिया। मल्लूखान विश्नोई धरम नैं अंगीकार कीनौ। 'मल्लूखान गऊ
हतावणी बरजाई, मांसत खाणो छोड़्यो, पीर कह्यो सो मानी, चढि अजमेर
चाल्यो।'

जैसलमेर रावळ जैतसी जांभेजी नैं जैतसमद री पचेष्ठा मार्थ तेड़िया
अर जीव-दया या पशुवां बाबत चार बाता मानण रो संकळप लीनौ।
बीकानेर रा राव लूणकरण जांभेजी रा शिष्य हुता। चारण भगत-कवियां में
प्रसिद्ध अलूजी कविया पैला नाथपंथी साधुवां री संगत में रैया पछै सम्वत्
1560 रै अड़ै गड़ै विश्नोई पंथ मे दीक्षा लीनी।

विश्नोई सम्प्रदाय में जाभोजी अर निराकार विष्णु एक ही मानीजै।
जाभोजी सदा निराहारी, मिठबोला, ब्रह्मचारी, भगवो भेष धार्‌यां, हाथ में
माळा लियां स्वयंभू आतम सरूप रो जाप करतां फरमायो 'म्हू विष्णु अपरपार
हूं, भगतां रै उद्धार सारू भगवी टोपी धार थळी माथै आयो हूं, हरियां कंकेड़ी
बिचाळै म्हारो वासो है।

हरी ककेड़ी मंडप मेंडी, तहा हमारा वासा।
च्यारि चक नवदीप थरहरै, जे आपो परगासा॥

गुरा मनै बरत्या वारै पण म्हं समराथळ मायं हीरा रो बौपार करू।
जाभोजी जीव अर आतमा नै तिल मे तेल, पुहप मे बास दाई पचतत्व री देह मे अगम ज्योति रूप मानै।

तिल में तेल पोहप में बास
पांच तत्त में लियो परगास।
बिजळी ज्यूं चमकै आवै जाय
सहज सुन्य मों रहै समाय।।

ज्यूं रूप बदळै ज्यूं आतमा सरीर बदळै। बायरै सूं गिडण वाळी धवर दाई संसार नश्वर है, दुनिया तो बाजगी रा तूतड़ा दाई थोथी है, भाई सैण सगळा झूठा सगा है।

जो जिण हुता सो तिण नाहीं भल खोटा संसार।
कैंह का पिन माई बैण र भाई, कैंह का पण परवार।।

जाभोजी अवतार में विसवास राखता पण मूर्तिपूजा, पाखंड रो खंडन कीनो है।

अडसठ तीरथ हिरदै भीतर,
बाहर लोकाचारू।

जाभोजी नितसिनान अर शीळ नै मोटो बतायो है—

षचन दान् कुछ ना मान्, हसती दानू कुछ ना मानू।
तुरगम दान् कुछ ना मानू, मानू एक सुचील सिनानू।।

हिन्दू, मुसळमान, नाथ अर जैन धरम नै जाभैजी चेताया पण किणी धरम, मत, वेद, पुराण अर कुराण री निन्दा नी करी।

कळिजुग च्यार धर्म एकठा फुरमाइया।
मुसळ ब्रह्मा जैंण जोग जुगति दिढाइया।
जुगति जोगी की बताई मुकती धारा तीरथो।
कागद देखें सर न चीन्है ते न पावै औ पथो।
छदा जाका हुआ कळिमा, अगम पंथ चलाइयो।
समराथळ गुर आप चाल्यो, धारि धर्म फुरमाइयो।।

विश्नाई सम्प्रदाय मे जभवाणी 'सबदवाणी' नाव सू सबा गू पवित्र अर प्रामाणिक मानीजै। विश्नोइया आपरै जीवण में मानतावां अर विचारां नै उतारिया। बीस और नौ नेम धारै सो विश्नोई बाजै।

तीस दिन सूतक पांच गुणवंती न्यारो।
सेरा करो सिनान शीळ संतोष सुचि प्यारो।।

त्रिकाळ संध्या करो सांझ आरति गुण गावो।
होम हित चित प्रीत सूं होय वास वैकुण्ठ पावो॥
पांणी बांणी ईंधणी इतरा लीजै छाण।
छमा दिया हिरदै धरो गुरु वतायो जाण॥
चोरी निंदा झूठ वरज्यो वाद न करणो कोय।
अमावस्या व्रत राखणो भजन विष्णु बतायो जोय॥
जीव दया पाळणी रूंख लीलो नहि घावै।
अजर जरै जीवत मरै वै वास सुरग ही पावै॥
करै रसोई हाथ सूं आन सूं पला न लावै।
अमर रखावै थाट बैल वधिया न करावै॥
अमल तमाखू भांग मद्य मास सूं दूर ही भागै।
लील न लावै अंग देखतै दूर ही त्यागै॥
उणतीस धरम री आखडी हिरदै धारै जोय।
जंभेश्वर किरपा करै नाव विश्नोई होय॥

जाभोजी 85 वरस 3 महीणा धरती माथै लीला कर सवत् 1593 माघ वदी 9 नै वैकुण्ठवास कीनो। रामचन्द्र री साखी मुजब समराथळ माथै देह त्यागणी ठीक लखावै।

साथरी गुर की बन समरथ थळी, जहा खोय पसारियो।
तिराणवै की साध्य पूगी, दे हरि सीस सिधारियो॥

साथरिया जाभैजी री देही नै जाभोळाव ले जावण सारू दसम रै दिन ताळवा गाव कनै मुकाम कीनो। ठा पडिया बीकानेर राव जैतसी मना कर कनै ही समाधि दिराई। परमानद वणियाल री साखा मुजब—

'साथरिया जाभोळाव रो मतो करि दस्यूरै दिन मुकाम कियो, पछै राव जैतसी लूणक्रणोत आडो फिरियो, माहरै देस रो देव बीजै देस ले जांणद्यां नही। संवत् 1593 मगसरवदी 11 मुगटरी नीव धरवी।'

जाभैजी रो आखिरी ऐहिक मुकाम होणं सूं मिंदर अर कनै बसियोड़ो गांव मुकाम बाजै। जांभैजी री सबदवांणी आज भी साहित, धरम, गार्दृा अर विचारा री दीठ सूं दिसा बतावै, मारग दरसण करै।

ईसरा परमेसरा

डिंगल साहित्य रै चावा अर ठावा भगतकवियां री माळा रा सुमेर बारठ ईसरदास जी मानीजै। 'हाला झाला रा कुंडळिया' जैड़ी वीररस री रचनावां करता थका पूगता पुरुष ईसरदास जी भगती रै अथाह समदर री थाह लीनी अर मोती समान 'हरिरस' काढ ईसरा परमेसरा बणिया। दुर्गा सप्तशती रै जोड़ रो रतन 'श्री देवियाण' बणाय देवी रै विराट सरूप रो सांगोपांग बखाण करता सुख री मारग दरसायो। इणा रै अलावा आपरी भगती रस री अनेक रचनावां-छोटा हरिरस, बाळलीला, गुण भागवत हंस, गरुड़ पुराण, गुण आगम, निंदास्तुती, वैराट, राम कैलास अर सभापर्व आदि प्रसिद्ध है। अनेक फुटकर दूहा, सोरठा, गीत, छप्पय भी घणा रचा है।

बारठ ईसरदास जी रो जनम मारवाड़ रा भादेस गांव में वि. सं. 1595 में हुवो।

पनरासै पिच्चाणवै, जनम्या ईसरदास।
चारण वरण चकार में, उण दिन हुवो उजास।।

आपरी शिक्षा उण वगत रा नामी कवि अर आपरा काका आसानंद जी री देखरेख में हुई। ईसरदास जी री काव्य प्रतिभा सारू रीझ परा'र जामनगर रावळ जाम साहब आपनै क्रोड़ पसाव अर सचाणा गाम री जागीर री सम्मान देय पोळपात बणाया।

क्रोड़ पसाव ईसर कियो दियो सचाणो गाम।
दता सिरोमण देखियो, जगसर रावळ जाम।।

भगती रै सागर में डुबकी लगावण सूं पैली ईसरदास जी वीररस री घणी ओजस्वी रचनावां लिखी। हळवद राजा रायसिंघ जी वीर भाव सूं भरपूर साहेब जी सारू युद्ध में भलै भिड़ पड़ता। उण भाव रै गीत री कड़ियां भाळीजै।

सिधै दळ सत्री गहड़ हथ सारा
मद [illegible] सभा सिंघिया।
दीसै वार सगर घर वेड़
साहेब [illegible] [illegible]।।

ईसरदास जी री सर्वा सूं सिरै रचना मानीजै जिणमें हळवद नरेस झाला रायसिंघ अर धोळ ठाकर जगाजी झाला रै धममांण जुद्ध रो आंख्या दीठो वरणन कीनोड़ो है। इण ग्रन्थ री रचना री वगत वि. स. 1620 में कवि री उमर पच्चीस बरस हुती, पछै कविता रै ओजरी की बात करां?

'हालां झालां रा कुंडळिया' ईसरदास जी, जसाजी अर रायसिंघ जी तीनां नैं अमर कर दीना। इणमें झड़ उलट कुंडळिया छंद रो प्रयोग है। ग्रंथ अणूंतो सोक्यावो अर अनूठो वणियो है।

हालां झाला होवसी सीहां लत्थो वत्थ।
धर पैलां अपणावसी, कै अपणी पर हत्थ॥
करै धर पारकी, आपणी जिकै नर।
केविया सीस सग-पाण करणा कवर॥
सम्रहरां नारी नेह नीद भरि सोवसी।
हलचलां गही झाला घर होवसी॥

इण तरै एक सूं एक दुजै-विजै भाव रा छद वणाया है। थोड़ी जाणकारी राखण वाळा नैं भी दो चार भड़ां तो अवस ही कंठा याद है।

सखी अमीणा कथ रो, अंग ढीलो आचंत।
कड़ी ठहक्कै वगतरा, नडी नडी नाचत॥

कत नैं ओळमो देती थकी कांमणी कथै—

सेल घमोड़ा किम सह्या, किम सहिया गजदंत।
कठिण पयोहर लागता, कसमसतौ तू कत॥

सूरवीरा रै ऊभा थका कुण री मा सवासेर मूंठ खाई जिको हाथ घालै—

केहरि केस भमंग मिण, सरणाई सुहडाह।
सती पयोहर क्रपण धन, पटसी हाथ मुवाह॥

सिघ सादूळ आप सूं दूजै किण नैं काई गिणै—

सादूळो आपा समो, वियो न कोय गिणंत।
हाक विडाणी किम सहै, घण गाजियै मरत॥
मरै घण गाजियै जिको सादूळ महि।
सत्रा चा ढोल सिर सकै किम जगो सहि॥
वयण घण साभळै रहै किम वीगमो।
सुपह सादूळ कुणि गिणै आपा समो॥

प्रसिद्ध है कै रावळ जाम रा दरबार में ईसरदास जी रो गीत सुण'र सभा वाह-वाह कर उठी पण विद्वान पंडित पीताम्बर भट्ट माथो धूणियो। ईसरदासजी इण अपमान रो बदळो लेण नैं तरवार लेय रात रा लुक परा'र भट्ट रै घरै पूगा। बठै पीताम्बर भट्ट आपरी जोड़ायत नैं कैवे, 'जे ईसरदास जी मिनख री कविता नीं कर भगवान रा गुण गावै तो मोख रो सारग पावै।' ईसरदास जी नैं आतम ज्ञान हुवो अर भट्ट पगा पड़ पीतांम्बर नैं गुरु मान लियो। उठा पछै दर्शन, धर्मशास्त्र पुराण रो ज्ञान पायो। हरीरस ग्रन्थ री रचना सरु करता ईसरदास जी पीताम्बर भट्ट रो औसाण मानै।

लाग् हू पहला लुळै, पीताम्बर गुरु पाय।
भेद महारस भागवत, पायो जेण पसाय।।

शान्त रस अर भगती में लीन ईसरदासजी आपरी रचनावां में भगवान रो गुणगान कीनो है। 'हरिरस' तो हरिरस ही है, भणियां मुगती मिळै। इणमें आप श्रीमद्भागवत रो सार काढ़ समार सारू भेंट कीनो है।

पीठ धरिणधर पाटली, हरितिय लेखणहार।
तउ तोरा चरिता तणो, परम न लब्भै पार।।

वगत बीतै है, ईसरदास जी चेतावै—

अवध नीर तन अजळी, टपकत सास उसास।
हरि भजिया बिन जात है अवसर ईसरदास।।

जीवड़ा, भवदुख भजण तो श्री भगवान है—

जीहा जप जगदीसवर, धर अन्तर में ध्यान।
क्रम बधण नह बधई भय भजण भगवान।।

मिनखादेह अमोलख है—

भाग बडा तो राम भज, वखत बड़ा कछु देह।
अकल बडी उपकार कर, देह धर्‌या फळ अेह।

प्रभु भगति बिना मुगती नहीं है।

कल्प वेद सासतर कथै, सिद्ध साधक सहकोइ
अन बिन तृपति न ऊपजै, हरि बिन मुगति न होय।।

आगै छंद मोतीदाम में परमात्मा रै विराट सरूप रो वरणन कीनो है जिणरो पार ब्रह्मा, विष्णु, वेद, पुराण कोई नीं पावै—

कहंक्माद एक विचार कहंस।
न आवैय सोसाद पार निरंस।

अशेषर तोराय पार अनोप।
पुराण पुराण न जाणत कोय॥

सेस भगवान आपरै हजार जीभां सूं भी जस गाय पार नी पाय सकै, तो एक जीभ सूं आपरा गुण कांई गा सकूं ? हे अनन्त ! आपनै आदेस।

इसो रसनाह सहां किम अंत।
पार न पावत सेस पुणंत॥
ना जाणत तोराय पार नरेस।
आदेस आदेस आदेस आदेस॥

इण भांत तीन सौ साठ छंदां में हरिरस सम्पूर्ण हुवो—

कवि ईसर हरिरस कियो, छंद तीन सौ साठ।
महापुण्य पावै मुगति, जो नित कीजै पाठ॥

चारण विशेषकर शक्ति उपासक हुवै। ईसरदास जी भी परमात्मा रो गुणगान करतां थकां देवी री स्तुती कर ग्रंथ 'श्री देवियाण' बणायो जिणमें देवी रै विराट स्वरूप रो रूडो बखांण कीनो है। भुजंगी छंद में देवी रा भांत-भांत रा रूप अर गुणां रो बखाण कीनो है।

देवी उम्मया खम्मया ईसनारी,
देवी धारणी मूंड त्रिभुवन्न धारी।
देवी सब्बदा रूप ओ रूप सीमा,
देवी वेद पारस्स धरणी ब्रह्मा।
देवी काळिका नाम नमो भद्र काळी,
देवी दूरगा लाघव चारिताळी।
देवी दानवा काळ सुरपाळ देवी,
देवी साधकं चारण सिध सेवी॥

चार धाम, अडसठ तीरथ, एक सौ आठ पीठ व चराचर जगत में विचरण वाळी देवी तूं ही उपावणी, पाळणी अर खपावणी है।

देवी जगत कर्तार भर्ता सहरता,
देवी चराचर जग्ग सब मे विचरता।
देवी चार धाम स्थल अष्ठ साठे,
देवी पावियें एक सौ पीठ आठै॥

भगवान रा परम भगत, महाकवि, संत अर गुणी पुरुष ईसरदास जी

आपरी उमर रा आखरी बरस लूंणी नदी रै कांठै गुडा अनै झूंपडी माड'र बिताया। अंत समै आपरा हाथां सूं बेटा नै सिराम बाट, सगां प्रसंगियां सूं जवारड़ा कर आप संसार लीला सम्पन्न कीनी।

ईसर घोरा डोकिया, महासागर के माह।
तारणहारा तारसी, साई पकड़ी बांह।।

ईसरा परमेसरा बनै जाय पूगा, ईसरा परमेसरा बणग्या।।

होळी रंग रंगीली

रंगा री रूड़ी तिवार—

रूड़ै रंगा री रूड़ो देस राजस्थान कुदरत री कजूसी रै वसू बिरखी भलांई दीसो पण भात भातीलै अर रंगरंगीलै तीज-तिवारां रग री छौळा फूटै। गढां, कोटां अर ढाला तरवारा रै धणियां केसरिया वागा धार ताते लोही रै राते रग होळी रमण री रीत निभाई है। इण धरती रा रूडा रगारा नै घणा रग है। रग रै हथळेवै रचियोड़ै हाथा सीळवतिया अठै अगनी री झाळां होळी मंगळाई है। चौग्ळै चावै अर घणै अलायदै रग रै इण रंगीलै राजस्थान री ऊजळी कीरत अर कीरत रा कोट सपूता नै राग-रग रा उच्छव ऐढ़ा, अमल मनवारा रग दिरीजै। हसी खुशी, लाड-कोड रै रग करणै माथै रंग वाटीजै। रग रा हाथ माडीजै। पावणा पेयां, तन्नू गिनायता, हिवे मिजमानां, ठाकर भोमिया, सेठ सहूकारां, मजूरा करसां, सबा रै रंग रा छांटणा करीजै। केसरिया कसूंमल ओढ्यां, मींढं पाड्या, गैणां सूं तड़ालूंब, मैंहदी रा माडणा मांड्या, बाजूबंद री टिरती लूमा, चूड़ी भळकाती, भीणे घूघटै गोरडी सतरंगी लागै। रंग अठारै रग रग मे रमियोडो थको।

फाग रमै भगवान—

बसत पांचम रा मिंदरा मे आरती उतारीजै, पजीरी बाटीजै अर गुलाल सूं भगवान नै फाग रमाइजै। आपणै अठै इण दिन सूं होळी री शुरुआत मानीजै। बसत पाचम अणवूझ सावो, हजारू चंवरी मडै। बसन्त रुत मे रूखां, झाडका, बाठका रै कवळी कवळी कूपळा फूटै, धरती मे गरमाग बापरै अर मैफोड़ ऊगै। फोगडा पाघरै अर गेहू रा होळा आवणा शुरू हुवै। पाणियो फरफरै अर धूळ रा भतूळिया ऊपडै जाणै भगवान फाग रमै। चांनणी दूद रात मे झीणी झीणी फूल गुलाबी सर्दी में गाव रै गवाड, गोर अर चौभाटा माथै चगा री थाप माथै ऊंडी अर तीखी राग मे फाग गाईजै 'उठ मिल लै भरत भाई हर आयो रे, उठ मिल लै।' मन रै चिरमी लागै अर मोटै गळै सूं राधा अर किसन री मीठी मीठी धमाळा बोलीजै—

मानत ना हे जसोदा थारो गिरधारी
घरे तो है रमण मैं मनमोहन मोन मारिया,

अरे गूजरी री टपरी लगत थानें प्यारी ।
ओ मानत ना है जसोदा थारो गिरधारी ॥
घरे तो है पीवण नें मोहन गोरस पथरणा,
ओ गूजरी की गुदड़ी लगत थानें प्यारी ।
ओ मानत ना हे जसोदा थारो गिरधारी ॥
घरे तो पीवण नें कान्हा थारे दूध पतासा,
अरे गूजरी री छाछ लगत थानें प्यारी ।
ओ मानत ना हे जसोदा थारो गिरधारी ॥

गाथा अर किसन री धमाळा ऊभी राग में चग री थाप माथै घणी घणी
भा ताई सुणीजै । ढोलिया, माचा, डैला माथै सूतोड़ा लोग सुण'र बैठा हुय
जावै । इण में काई रंग है जिको तो सुणणवाळा अर गावणवाळा ही जाण
सकै । एक जणो साम ल्यावै जिनै दूजो चंग झेल लै अर गावै—

थारे तो कारण मैं मोहन हिरणी होई,
होय हिरणी जगळ सारो हेरयो ।
पण मोहन पायो नहीं ॥
थारे तो कारण मनमोहना मछली होई,
होय मछली गिगन सारो हेरयो ।
पण गिरधर मिळियो नहीं ॥
पण मोहन पाया नहीं ।
मनमोहन लाधा नहीं ॥

होळी आई रे फूलां री झोळी—

फागण रै महीनै नेना-मोटा, टाबर-टोळी, बूढा-ठाडा सै होळी रै रंग में
भीनोड़ा आधी आधी रात ताई चंग री थाप माथै धमाळा बोलै । फागण री
रुत न्यारी, रंग न्यारो अर राग न्यारी । चंग नै दोनूं हाथां सूं माथै ऊंचारा
माथ मूंडो घाल'र एक जणो कड़ी बोलै अर दूजोड़ा सागै सागै उपटै । कड़ी
बोल'र थमै पछै चंग री थाप माथै धाळो, झीला अर दिवै बिनै बाजियै री
घूघरू-घूघरू री झणकार ऊपडै । पगां सूं पगां री घमकार पड़ै अर हाथां
में घूघरा बांध्योड़ी डांगडै लीनोड़ा, फिरता घूमता मिनखां रै झिवाळै झिवाळै
गैरी घूमर घाल चोवरै ।

कठैई लादेई होर री किरणी माथै डाडिया गैर री घमर उपड़ै । ज्यूं
ज्यूं रात ढळै, तर तर बधती गैर में घेरदार बागो पेंचा, तरवारा लटकारोड़ा,
रंगरंगीरा साफा-चूनड़ी, नेवियो मोळियो, पवरुमी डाल्योड़ा पगरखा जोड़ी रा

म्हांरा पूगरा री गणगौर मांगै मुळ मुळ, घूम घूम बीज री
हाथां रा डांडिया खड़ाक-खड़ाक भिड़ावै। नित नुवा मेळ मे
गेर रै मंडळां मनरंग री बळी बळी रमण लागै। मानीती कोटड़ि
दे गेर नै तेड़ीजै अर आगो कळ जिनै रमाइजै। कनाणा (बाड़मेर)
री गाळा री गेर तो जगचावी अर मुलकां मसहूर है। लोग दे
सूं देखण नै आवै। बीकानेर में नित नुई अमरसिंघ, हेडाऊ मेरी री
दूजा ख्याल रमीजै।

भरीजै लुगायां आपरी भावनावां लूरां में दरसावै। दो पा
एक बळा री लुगायां ताळियां बजावती एक राग सूं लूर री कड़िय
मांडै बधै अर दूजोड़ै पाळै री लुगायां कड़ियां बोलती वानै पाछ
धुमावै। मन रा गूंगा में दबियोड़ी काम-भावना लूरां में दरसावै,
नदियोड़ो पड़ियो परतो पान मांगै रे'। सांवळा होठां रा मूछा फूटता
गोर नूं आणा आप पीटा गावै, मन री होवाड़ काढै।

पांद रै पांनणै मोट्यारगाळै में अरणीज्योड़ा घणी रात सिया
मामा ऊंघावै, तीन कवड्डी छैल कवड्डी बांचता कवड्डी पाळो रमै।
रिया 'हाड मिरकलो हड़ियो चोर, हड़िये री मा नै लेग्या चोर' रमै।
कठैई टीगर गधेड़ो चढ़ै। इयां होळी री धमचक शुरू व्है। आखी उ
रात चंग मार्थ गाइजै, गैरा रमीजै, लूरा लिरीजै, डांडिया रमीजै अर
भरीजै।

होळी री चंग बाजणो—

होळी सूं केई दिनां पैली होळका लागै, होळी री डाडो रुपै। होळरा
आणो-टाणो, गाव-गावतरो, साबो-मौरथ नी करीजै। लुगायां परो बा
मिरमू फूला ओढणा-फागणिया ओढचा, नीरो गूंथो, राती धोळी, लीर
साथिया पूरण रो काम करै। खजलै-सीचिया तळीजै, गुळिया लाडू साधीजै,
दाखरूर-पारा काढीजै।

घर बार रो काम काज, मिजारो वेगी वेगो कर परी'र आथण रा
लुगायां भेळी व्है अर गीतेरणा नै दिन थका तेड़ा दिरीजै। कठैई नुवा
परणीज्योड़ा पावणा नै तेडीजै, गीत गाईजै, कोड करीजै अर रमाइजै। कठैई
आप आपरा धडा कडूबा री लुगायां भेळी होय होळी रा गीत गावणा शुरू
करै।

चग आगळियै बजावै,
चग चिटू रै बळ बाजै ओ।

होळी री चग बाजणो ॥
चग हथाळी बजावै,
चग चिरमी लगावै ।
चग ऐडी रै भणकार ओ,
होळी री चग बाजणो ॥

रमती-रमती, लुळती-भुकती, घिरती-फिरती गैर रावळै आय पूगै । हिंगळू रै ढोलियै पौढते पिवजी रै चवर ढुळाती नैनकडी नाजू अरज करै ।

गेवर अभी रावळै साथब जी,
चवर ढुळै लग चार ।
दडीदो बाज रियो ॥
गैरिया ऊभा यो कहै,
भवर जी बाहर आय ।
दडीदो बाज रियो ॥

रमता गैरिया रै बागा री घूमेर, पगा री ठमकार, डाडिया रा जोड अर घुरतै ढोल री धौक ऊपडता गीतेरणं उगेरै—

गैरिया गैर रमै,
पगलै मू पगला जोड ।
वागै री घमक पडै ॥
डाडियै सूं डाडियो जोड,
हाथां री लळक पडै ।
ढोलीजी ढोल बजाय गैरिया गैर रमै ॥
रमसी सुसरा जी रा सीव,
रमसी बाईसा रा बीर ।
रमसी सुगणी रा श्याम,
भवर जी गैर रमै ।
पगलै मू पगलो जोड,
,एडी री धमक पडै गैरिया गैर रमै ॥

होळी री धमाळ अर फाग री राग इतरी रूडी अर चावी बणी कै अम-कीरत री बातां इण लोकशैली मे गाइजण लागी । सन् सत्तावन रा बागी सूरवीरां रै जूंझ री राग होळ गाता नै मस्ता गडावणियै, अमरा रै रग रेवडिये नरनाहर आहुवै ठाकर कुसळसिंघ चांपावत अर जोधपुर रै पोलिटिकल एजेंट नै मार परो'र सीस मार्थ नाख दीनो हो उणरै जस रा गुरनो

ढोल बजै गुणीजै।

ढोल वाजै चग वाजै,
भेळो वाजै वांकियो।
एजेन्ट ने मार नै,
दरवाजै टांगियो कै
हाल्लै आहुवो वा वा भल्लै आहुवो ।।

इणी भांत भरतपुर रा क्रांतिकारियां री बखाण करण वाळी झड़ां भी घणी सगरी है।

आठ फिरंगी नौ गोरा।
लड़ै जाट के दो छोरा।।

आखो भरतपुर व्रज री संस्कृति सू भरियो तरियो।

होळी मंगळावणी—

आप आपरा न्यारा न्यारा धड़ा कढ़ूवा अर मोहल्ला री होळी शुभ लगन मौरथ देख'र छापीजै। सैरां मे वळीतो, छांणी, थेपड्या भेळी कर ढिगली करीजै अर गावां मे आदू मरजादा सू लैगर्‍या री होळी छापीजै। पिंडतजी रै टीपणै मुजब मंगळावण री बखत सब लोग चंग बजावता आय पूगै। ढोली ढोल बजावै अर होळी रै लांपो लगाइजै। होळी रै बिचाळै रोप्योड़ी लीली खेजड़ी री डाळी प्रहळाद मानीजै। मोट्यार टूट पड़ै अर बळतै प्रहळाद नै बाहर काढै। मानता है कै जको कंवारो प्रहळाद नै काढै आगली होळी सू पैल पैल उणरो ब्याव पक्को। उणरी इण करतब री हिम्मत माईता नै मोट्यार हुवण री सूचना करै। होळी री झळ देख'र सुगन विचारीजै। जिकी दिसा मे झळ जावै उण साल वा काकड़ जमानै मे सिरै रैसी। लोगड़ा होळी रा सीरा माथै पापड़, खीचिया सेकै अर बारह महीना ताई सभाळ परा'र राखै। इण सू टाबरा री खुलखुलियो सावळ हुवण रो विश्वास करीजै। जांझरकै भारा फाट्यां किन्यावां वेगी वेगी आय'र होळी री राख रा पिंडोळिया बणावै अर गवर री पूजा शुरू करै।

होळी री हुड़दंग—

दूजै दिन हुवै धारडी, धूलण्डी, धूड़िया फूलिया। लोग सूरज री किरण काढता ही भेळा हुवण ढूकै अर दटूळ रा दटूळ नाचता-गावता, तरै-तरै रा साग बणिया घर-घर, कोटड़ी-कोटड़ी गैर बणाय'र जावै। चंग री थापां अर झीझा री झणकारां सागै गैरी नाचै। कोटड्यां मे उणा री अमल, दारू, तमाखू री मनवार करीजै। मिठाई बांटीजै। टाबरिया लोगां रै रंग रा बम्बू मारै,

पिचकार्या छोडै। इणियै मे डंगे पोप अरडावण पणाय बैतोडा री मोडी सनै जाय'र जाणं कुत्तो भुगावै, चमकावै। तारा रै ऊपर गू टेरियोडी चमचेडा मू लोगा रो सासो, टोपी ऊँची तार लिवै पछै मिठाई रा पईसा दिया छोडै। केई लोग दारू दरवेडा करै, मूगला बोलै, कादो कीचड उछाळै, भूडी मसखरिया करै। इण गू तिवार री महत्ता मोळी पडै। लारली होळी पछै जिका रै घरै मानियो जलम्योडो हुवै वारै ढूढ उतारीजै। गैरिया नै दारू अर मरची रा रोकडा दिरीजै।

कठैई लोग भाठा गू होळी रमै ता कठेई माथा हाथा सू पाणी री डोलच्या रा फटीड ऊपडै जको चामडी लीली पड जावै। धणकरा घरा री बाखळ, चौक मे रग रा कडाव भरिया रै अर च्यारू मेर बीनणिया हाथा मे करड़ा वटियोडा लीला कोरडा लिया, कमर मे ओढणो ससोल्या, ताचकियोडी ऊभी रै। देवरिया डील नै करडा कर हिम्मत रै पाण कड़ाव सू बाल्टी, डोलची अर पिचकारी भर भर भाभिया माथै रग नाखै। कोरडा रा सरडाटा ऊपडै अर काचा काळजा धक धक करण लागै। नीठाक पाणी फैक'र पाछा वावडै। इण भात दोफारै ताई ओ खेल चालतो रैवै।

दिन ढळिया लोगडा सिनान सपाडा कर, गाभा लत्ता पै'र सिलाम करण नै नीसरै। घर घर लोगा री मान मनवार करीजै, मीठो माडो करावजै। बीनणिया घर मे वडेरया रै पगा लागण नै जावै।

अलग कवारो ईलोजी—

राजा हिरणाकुश री बेन होळका री सगाई राजस्थान म राजकवर ईलोजी सागै बीनोडी। होळका तपस्या कर अग्नी देवता सू अगनी सिनान रो वरदान पायो। चदण री लकड्या भेळी कर रोजाना अगनी सिनान करणै गू उणरो रूप दप-दप करै। वसत पाचम रो ब्याव मडियो। राजा हिरणाकुश आपरै बेटै प्रहळाद गू घणां दुखी। वो दुसमी विष्णु रो भगत बणियो कठेई ब्याव मे विघन नी करै। होळका तजबीज सगाई कै हू अगनी मे प्रहळाद नै गोदी मे लेय'र बैठ गू जिको ना रैसी बाम अर ना बाजसी बासुरी। पण वरदान तो एकली सिनान रो हुतो। भगवान री माया गू होळका तो भसम हुयगी अर प्रहळाद बचग्यो। इण री याद मे होळी रो तिवार मनाइजै। अठीनै राजकवार ईलोजी जान लेय'र पूगा। होळका रै बळण रो सुण'र वगना हुवै ज्यू भोमका जाय डील रै बांनी रूपड माटी मे लूटण लागा। लोगा वा माथै पाणी फेंकियो, गुलाल उडाई अर मसखरी करण लागा। पछै ईलोजी होळका री याद मे अलग कवारा रिया अर होळा रा देवता बणग्या। एकर ईलोजी

मेड़ गाड़वाग री होळी भी ठमक वाळी। वार निवार, ऐडा टाभा
ाई रा ठमको तो मेवाड़ रसियां ही आवै। चौक माथै रग रा कड़ाव भरिया
ा, गुलाब रा टेव्टा भरिया रैता। लोग वाग आवो अर मेलो।

राज मे होरी—

जादूगारे जादू किशन री राग रमण री ब्रजभूमि मे होळी रो भाव
पूरो घणो -

होरी मेली रे कान्ह गोपियन मे,
गोपियन म सावरो ऐसो मोहन।
चदो सोहै ज्यू तारा म ॥
गोपियन मे मोहन ऐसो सोहत।
ज्यू मिरगो माहै डागन मे ॥

इण तरै पूरा ब्रज होळी रै रग मे रमियोड़ो, धमाळ अर रसिया गीता
गरावार। राधा रै पीहर बरसानै अर नद बाबै रै नद गाव री लट्ठमार
होळी देखै जैडी 'बनि आयो रे रसिया होरी को बनि आयो रे'। बरसानै रा
माई नद गाव रा गुवाया रै गुलाल ममळ मिलणी करै —

ऐसो होरी ऐसो होरी चलि बरसानै,
ऊचो गाम धाम बरसानो।
कोई जहा बसे राधा गोरी चलि बरसानै ॥

किशन भगवान रै नाम गाळा गावजै—

आवो देहि किशन को गारी,
ई बाप मे कोई जानै जिन वेद पुराण बखाणे।
गो नद नदन तेरो बुआ बाके बवारी के सुत हुआ,
गोरे नद जसोदा मैया तू कारे कौन के दैया।
आवो देहि किशन को गारी ॥

किशन रै दूध दही लूटणै खोसणै सू गोपकावा घणी आम्ती हुयोड़ी
बरसानै मे किशन नै रोकियो अर रग गुलाल सू भर परी'र लट्ठा सू जतरायो।
उण परम्परा मे आज भी नंद गाँव रा हुरोहरा नै घेर लट्ठ फटकारता
बोलै 'लाडली लाल की जय'।

दूजै दिन होळी मगळावजै पछै हुवै बळदेव मे दाऊजी रो हुरगो, सारो
ब्रज होळी मय हुय जावै।

मुसळमाना री होली—

मुसळमाना रो भारतीयपणो भी हिन्दुआ जितरो ही आलै दरजै रो है,

दोनूं एक दूजै रा तिवार पणं उछाह सूं मनावता, मागकर होळी। मुगल बादशाहां होळी री रंगीनी, मस्ती अर रागरंग सूं रीझ परा आपरै दरबार मे होळी मनावण री रीत शुरू कीनी। राजमहल में दिन रा रग रमण री छूट अर रात रा गाणं री मैफल जुड़ती। अकबर रै शाही दरबार मे शुरू कीनोड़ी होळी जहांगीर अर दूजा बादशाहा रै राज मे खूब मनाइजी। बहादुरशाह जफर री बणायोड़ी होळी री रचनावा घणी चावी बणी 'क्यों मोरे रग की मारी पिचकारी, देखो कंवरजी मैं दूगी गारी'। औरंगजेब जैडे कट्टर बादशाह री वखत भी होळी मनाइजती, उणरै सेनापति शाइस्ता खा री होळी रमतां री रूडो चित्रांम दिल्ली रा राष्ट्रीय संग्रहालय में देख सको। काशी रै हाकम मीर रूस्तम अली 'बुढवामंगळ'.री संगीत मैफल री शुरूआत कीनी जणा उण कैद हुवा गणकावां गायो, 'कहां गयो मेरो होली को खेलैया, सिपाही रुस्तम अली बाके सिपैया।'

मुसळमान कवियां होळी माथै घणी कलम चलाई। फरह री रचना –

खेलत बसत पिया प्यारी संग,
भर भर पिचकारी मारत अंग।
केशर रंग छिडकत अंग अग।।

जन कवि नजीर अकबराबादी तो हेला मार मार कैवे—

नजीर होळी का मौसम जो जग मे आता है।
वो ऐसा कौन है जो होळी नही मनाता है।।

परदेशां री होळी—

हसी खुशी अर ठट्ठा मसखरी रो तिवार अनेकू देशा मे भात भात सू होळी आळै दाई मनाइजै। वर्मा मे चार दिन ताई टाबर रग री पिचकारयां मारै, पाणी री बाल्टं भर भर फैंकै। अमरीका मे 31 अगस्त री रात नाच गाणो, खेल कूद, मसखरी करता लोग तरै तरै रा साग बणावै। इटली मे चौरस्ते जाय नाचै, बळीतो भेळो कर बाळै। फ्रास मे हुड़दग मचावै, काळो मूडो, माथै सीग लगाय फूस री मूर्त्तियां बणाय बाळै। साइबेरिया मे टाबर घर घर लकड़ं भेली कर लावै अर जगावै। जर्मनी मे घासफूस री ढिगली कर बाळै, रंग मसळै। चेकोस्लोवाकिया मे नाचै गावै, अन्तर छिडकै। स्वीडन मे चौभाटै बासती बाळै। लका मे पूजा पाठ कर पछै रग रमै।

इण भात उमग, उछाह, हसी खुशी अर मस्ती रो तिवार घणा दिना ताई मनाइजै। लारला भिनभाव, निदा, बुराई, अणसायां बाता नै होळी सागै ही मंगळाय, नुवै परभात में नुंवी उमंग, नुवै सम्वत् री अगवानी करीजै।

मेह बिना मत मार

काळ आपरै नाम सूं ओळखीजै। अकाळ दुकाळ, धा काळ-पण है काळ रो काळ। कीडी मकोडी सूं लगाय नै मिनखां जूण ताई इण सूं डरै। काळ आयां कुण छोडै? पण अठै तो सतकाळ रा सतकाळ पडता ही जावै। आथूणो राजस्थान निपट धोरां धरती, काळ रो थिर ठूगरो। अठै कदैई जळ-काळ, कदैई तिणकाळ तो कदैई अन्नकाळ फेरू तीजै चौथै बरस तीनूं चीजां अन्न, जळ अर तिण रो काळ। इसो काळ त्रिकाळ बाजै। इण धरती माथै काळ भमतो ही रैवै।

पग पूगळ धड कोटडै, बाहू बाडमेर।
फिरतो घिरतो बीकपुर, ठावो जैसळमेर।।

दुकाळ रा पग पूगळ में, धड कोटडै में अर बाहू बाडमेर (मालाणी) में, फिरतो घिरतो बीकानेर री धरती माथै मिळै पण काळ रो पक्को ठायो तो जैसळमेर है।

इतणापण टाळा भूला ठिकारिया इण धरती रा रैवासिया इण हारी दुकाळ रै डरायां नीं डरै। मुरट री रोटी, खरड़ री बाटी अर डोका गुवां जीम जीम'र काळ नै लातां सूं कूट'र काढ नाखै। हरिया कठै पार पडै? औ तो रोजीना रो गाडो रोवणो है। जिको दुकाळ टवातरै पडै, उण रा डर कांई? पडू पडू करै तो पछै पडतो कर। कैवै है कै काळ नै पडतो देख'र काळ री मां बोली—'देख बेटा मावळ पडजे, कठैई लाग नीं जावै'। बेटो बोल्यो, 'मा थूं चिंता ई मत कर, म्है होळै होळै इसो पडूंला कै म्हारै आंच ई नीं आवै अर दूजां नै ठा ही नीं पडै'।

उन्हाळै में लूं रा लपरका चालै। आकडै, फोगडै अर कैर री छिंया बैठो इण धरती रो तपतो मानखो आभै कानी आस्या पाखां करै। आसाढीज गई, निरजळा ग्यारस गई अर सूरजनवमी भी आवणी दीसै। धोरा सुवन ढूंढता दीसै। रोहण तपी नहीं, मिरगला बाजया नहीं तो फिर आदरा किण विध बाजसी?

मानखै रै मन में भय वड़ण लागै, 'हळ फाडो फावर करो बैठा चाखो चीज'। जोसी जी नै पूछीजै-बिरखा पाडै रै वांहण है कै डेडरिया रै? धान रा कितरा बिस्वा, घास रा कितरा बिस्वा अर ताव तप रा कितरा बिस्वा? भगवान नै अरदास करीजै, 'हे सृष्टि रा सिरजणहार, पाळणहार! थारै हाथ में मारण रा केई ओसांण है। मेह बिना तो मत मारजे दाता।'

छळबळ वाता है छती, तो हाथां करतार।
मारण मारग मोकळा, मेह बिना मत मार॥

उडीकता उडीकता छेवट हाथी रै कांन जितरो बादळियो निजर आयो। सूरियो बायरो बाजण लागो। चिड़ियां धूड में सिनान करै, कीड़िया ईंडा लेय नै नीसरै अर कळसै रो पांणी गरम हुवै तद बरसण री आस बंधै।

कळसै पांणी गरम हुवै, चिडी नहावै धूर।
कीडी ले ईंडा चढै, तो बिरखा भरपूर॥

छेवट रामजी राजी हुवै, बीज झबूकै अर मेह रो बायरो आवणो मांडै पण भूखो तो धाया पतीजै।

सौ कोसा बीजळ खिवै, तासू किसो सनेह।
किसना तिसना तद मिटै, जद आंगण बरसै मेह॥

बिरखा रा समाचार सुणीजै, पालर पांणी में खीचड़ा राधीजै, हळोतियो करीजै अर तेजो गाइजै। जीयाजूण हरखीजै अर ढोर डांगर छाती सूं ऊतरै। दोरा-सोरा दो हळ रा ऊमरा बत्ता करण री तेवड़ीजै।

अबकाळै सियाळै टाबरा रा हाथ पीळा कराय देवाला, एक दो पक्की साळ ई बणावणी है, डोकरा डोकरी रा फूल गगाजी घालणा है, इण भांत नीं जांणै कितरा मसूबा बाधीजै।

पण 'तेरे मन कछु और है, कर्त्ता के कछु और' कुदरत री लीला कुण लग सकै? जिको जेठ में जीयाजूण नै आयो वो पाछो बावड़ियो ही नीं। खाट गाय दाई कूदग्यो। पाछो फिर नै दाट ही नीं नाखी। बीज ऊगता ही बळग्यो, ऊमरा बारै ई कोनी आयो। घर में दाणा हा जिका ई धूड में रळ दिया। आभो मिजळै जितरा री आग दाई पीळो रिट्ट पड़ग्यो। ठंडी पोन चालण लागी। लाया पत्ता री नागोरण बाजे 'नाहर टांगण, बैल बिकावण पूं घूं छूटी आधी सावण'। कठैई मेह रा बादळ नीं लागै तोई मन नै धावण बधाइजै 'केई बार जलम आठम अर गोगा नम रा बापोरा धान हुवा'। पण मन में भी नीं मावै। जे थी जोगा भाग हुवै तो रांगोडा कठू हुवै। बावळिया

बिगत बिगत आप में भूमटा उगी, मोठ ऊमरा में ई रंग्या, गाम रा गौड गाना सूट्ट पड़्या। भूखा ढागर झाखा मारण लागा। नाडी, तळाया, अर कुआ सूखग्या, सावण सूनो अर भादवो रीतो बीतग्यो। मानखो करै तो काई करै? लोगड़ा धीरज छोड़ दीनो।

ढेबर घरा रै ताळा मार्थ गोबर लीप, फळसा आडा काटा देय, गाडं मार्थ गूदड़ा घाल, लोगड़ा बिगै रा मार्‌या नीसरण लागा। कठैई घर बार कठैई लुगाया पनाया, कठैई टाबर टीगर। मरता रा किसा सिरातिया पगाधिया जोटजं। आंसू ढळकावतो गाया भैंस्या नै खूंटं सू खोल दीनो।

अबै बरसै तो काई अर नी बरसै तो काई। मरता नै बाबैजी वाळो मोरो है। अवसर चूका मेहड़ा बूठा काढ़ करेह? गई दाना नै ता घोड़ा ई नी नावडं।

बाजरिया बळिया पछै, मेघा कीधी मोग।
तेनी सू स्मळ ऊतरी, हुई बळीते जोग।।

पुराणै जमानै मे कनै रोकड़ा होवता थका ही मेजड़ी रा छौडा खावणा पड़िया।

जनकवि ऊमरदान लाळस लारली सदी मे पडिया काळा रो वरणन आपरी कविता 'छपना रो छद' मे करियो है।

पाचो आटो नै पनरो जो पड़िया।
सतरो बीसो मिळ सतरै मे सड़िया।।
पुळियो पच्चीसो चोतीसो चुळियो।
अडताळीसो अति ही ऊकळियो।।
पीढी दर पीढी पोतोजी पाया।
अगलै काळा रा दादोजी आया।।

विक्रम सवत उगणीस सौ पाच, आठ, पनरै, सतरै, बीस, पच्चीस, चोतीस अर अडताळीस सगळा दुकाळ हा। तिण उपरात छप्पनो काळ तो सगळा रो दादोजी बण आयो।

सुख सू सूती ही परजा सुखियारी।
दुगटी आता ही करदी दुखियारी।।
माणस मरघरिया माणस सू मूघा।
पीढी पीढी रा करिया श्रम सूधा।।
हा हा दुखदाई छपना हत्यारा।
सज्जन सुखदाई माबळ मथियारा।।

सगळै ई धरतीमा रै बोबाड़ी कोई निजै नीं आवै । दिगोर मरोड़ू
भरदी । सूखा मरोवर बोरड़ी अर भोला मन मूंडा परसा ।

बादळ बीजळियां मन में मदु मैरी ।
मेवो बरसावो भरजी पुरु मेरी ।।
निजां निजाई धरती में समणो ।
भोला भोलाई चोरां में रमणो ।।
भूखा भाटियां ओलिम की मूठी ।
करमां कुरजाया, किरमा नीं पूठी ।।

असाढ़ उतरतां जिनगा रा मूंडा ही उतरग्या । सावन सूनो गरणाटा करतो गो अर भरियो भादवो गया पाणी नीमरग्यो । आसोज भावना आगुर अर बदिनो ।

उतर असाढ़ा मूंडा उतरिया ।
सूनर मोपा दे करमा कुतरिया ।।
सावन सूनो गो जैनो गरणाटा ।
भाद्री भवनागण रज रै गरणाटा ।।
भरियो भादरवो पाणी पर भागो ।
लगतां आसोजां आंसू भट लागो ।।

भूख सूं दुबळीज शरीर गोबळ हुयग्या । विपदा मे भूलता कुण किण नै दुख सुख री पूछै । गैणां सूं सझालूब अर सोनै सूं पीळीपट्ट पड़ियोड़ी सेठाणियां अबै पीळी पड़ियोड़ी बिगै मे भटकती सूनी ढाणियां मे लाधै । अन्न री देवाळ अन्नदाता अन्न अन्न करतोड़ी मरती दीसै ।

टाटर टरड़ाया, सुख दुख बिण सूझै ।
विपदा वरड़ाया, विपदा कुण बूझै ।।
सूनी ढाणी मे सेठाणी सोती ।
रँगी विणियाणी पाणी नै रोती ।।
साप्रत पूछै नहिं किण ही कुशळाता ।
अन अन करतोड़ी मरगी अनदाता ।।

पण इण सदी मे आवता आवतां दुकाळ रो रूप ही बदळग्यो । अबै पैला वाळै दाई दुकाळ साम्यवादी नी रियो । अबार री पीढी पच्चीसो दुकाळ दीठो पण भूख सूं कोई नी मरियो । दाम कनै है तो धान, घास री कमी नी है । सूंघो मिळतो मूंघो मिळै पण मिळै जरूर है । पण पैली रै जमानै री परिस्थितियां दूजी ही । आवागमन रै साधनां री कमी, उत्पादन रो अभाव, भंडारण री कमी, वैज्ञानिक तौर तरीका रो अज्ञान अर न्यारी-न्यारी रियासतां मे आप-

आदमी त्यारी दरकारा जिण सूं दुकाळ सूं मुकाबलो करण री मानखै री हिम्मत कम हुगी।

आज साधना री कोई कमी नी है। कमी है तो व्यवस्था री हो सकै है। राम रूस जावै वा सूं राज भी रूस जावै किनारो कर लेवै। सगळी माया खोटा री। प्रशासन खोटा रो बीमार। राज आपरा हाथ झड़काय फिरड़ै ज्यूं रंग बदळ लेवै। मजूरी, मदद अर अकाळ सहायता में ही भेदभाव। जिको जीमावै वानै काई भूख वेगी लागै? पण मजूरी रो मौको तो बठैई सुलभो जठैरा लोग राज रा पीचड़ तोड़सी, थारो जै बोलसी अर हाजरी भरसी। रैली में चालो अर देनगी पावलो तनखड़ी कराओ अर लोन उठाओ, तकावी उठाओ, अनुदान हासिल करो नी अणै विमाना रा जाया बण दुभान भुगतो। सेवा करो अर मेवा पावो। बाट'र खावो वैकुंठ में जावो।

किण रै बैंगण बायडा, किण रै बैंगण पच्च।
किण रै चाहै आफरो, किण रै चाहै मच्छ॥

सो अबै तो दुकाळ भी कटया रै तावै आयग्यो। वै प्राणी दुकाळ री बाट जोवता भगवान नै अरदास करै 'हे प्रभु! मालोमाल दुकाळ ही पड़ै तो ठीक'। पैली आ कहावत प्रसिद्ध ही कै 'इसा काळ में नी मरै बामण, बकरो, ऊंट'। पण अबै इणा रै अलावा तीन दूजा प्राणी भी सुखी रैवे 'कूडिया नेता, अफसर अर गिरजड़ा'। दुकाळ में तीना रै मौज। नेता तो काळ में घणोई राजी। वो भलाई नैनो हो कै मोटा, धोळाधारी हो कै पेटवाळो, भणियो गुणियो हो चावै ठोठ। परलोटियै रो काई छोटा अर काई मोटो।

उणरै घर में दुकाळ मेरै धान री कोठियां फाटै, चेगारिया रा थट्ट लागा रै अर हथाइयां जुड़ै। अड़ा नेतावा रै काळ री कलंगी खूब फबै। साचा झूठा हिसाब अर खोटा खरा मस्टररोल बणाय, ऊपरला नै बळि बाकळा चढ़ाय, खुद ई धापनै जीमै। मामै रो ब्याव अर मा पुरसारी, जीम रे बेटा रात अंधारी। पैला ऊपरवाळै (भगवान) रो हाथ ऊपर हुवा पो बारह पच्चीस हुती अबै ऊपरवाळै (राज) रो हाथ हुवा पांचू घी में है। पछै कोई पूछण वाळो नी है, पाटो अर चावै डील रै थेपडो। जे कोई धानियो भगवानियो बोबाड करै तो नक्कारखाना, बजार में छाळी री छींक कुण सुणै? राडा यूं ही रोवती रैसी अर पावणा यूं ही जीमता जासी।

लोग पाणी पाणी करै। पण पाणी है कठै? पाणी तो आस्या रो ई सूखग्यो। कूवा रो पाणी बिरखा बिना पताळ पूगो। ढोर-डांगर ढीढै वैडग्या। ट्यूबवैल खुदाय राज मशीना लगाई पण बिजळी कोनी। बिजळी है

तो मशीन खराब है अर जे मशीन ठीक है तो व्यवस्था गड़बड़ है। मोटी मोटी टंकियां बणिया बरस बीतग्या पण छांट ई पांणी कोनी। इद धार रै जाळ सूं कोई पण अैलकार कै जनप्रतिनिधि अळगो नी है, बौ ई र में इधकमागो।

अबकाळै चम्माळीसो तो जांणै काळां रो बादू बडेरो ही आ पूगो। इ साल इधक महीणो भळै पड़ियां नै रूंदै। जोर कांई ? राजस्थान में तो लगतो चौथो अकाळ है। भूख, नादारी, कुपोषण कर मांदगी सूं जनता हालत घणी पतळी। गावडा में तो पांणी री कमी रैया करती पण अबकै तो जोधपुर, अजमेर, ब्यावर जिसा नगरां में ई पांणी रो तोटो। पांणी सगळा भंडार जाणै निठग्या। रेलां, टैंकरां सूं पांणी लाया जिया पार पड़ै मिनखां रो पांणी तो रांमजी राखसी जद ही रैसी।

आज आखै राजस्थान रा कोई 32 हजार गांवां में 2 करोड़ 60 लाख मानखो अर पांच करोड़ पशु अन्न, चारै अर पांणी रै बिना बिलो मुखै गरीबी रेखा रै हेठै जीवण वाळा कोई 38 लाख परिवारां रै सामी जिया पेट भराई री समस्या बाको फाड़ियां ऊभी है।

सरकार सैकड़ूं कोसां सूं चारो मंगावै, अनुदान देवै, भाड़ो चुकाई करै हर प्रकार सूं मदद देवण री कोशीस करै पण दया-हया अर लाज बायर मिनख इणमें भी बिचाळै आपरा पापड़ सेकण में लागोड़ा। फरजी रसीद सूं भाड़ो उठावणो, अनुदान हजम करणो, दुखा रै भुगतान अर बांटण में रापारोळ मचावणो, फरजी मस्टररोलां सूं पईसा हड़पणा आंरा नित रोज रा धंधा। राघ में छुरी फेरणिया मिनख रै उणियारै इसा राकस आज आखै हर गांव-नगर में लाध जासी। ऐ ऊजळ-धोळिया भळै दीखती कमेड़ी बाजै।

पण बिना थाभां अकास ऊभो है। धरती ईमानदारी रो बीज निरियो कोनी। इण कारण केई माई रा लाल इसी बिपती वेळा में गांठ रो गरथो खर नै मानव सेवा में लागोड़ा।

आपां सगळां नै मिळ'र अवखा दिनां रो हिम्मत सूं मुकाबलो करणो है। रोयां सूं की गरज सरै नीं अर हिम्मत हारियो मौत है। मरदानगी तो राखणी ही रैसी। मजबूती अर रजपूती राजस्थान री विशेषता है। हिम्मत रै पान ई बिलो पार होसी। राम मारै राम बांधै आवै। बगाळो आयां हर देखता दूझैला, सुपनो सुपनो बाधै रा धर में सोना मंडर हालीरा। अकाळ रो माथो फिर मोडो लेसी माथो। भगवान म्हारी स्यालो पूरा करै।

वरसाळौ

रुत री झाळा में सिकती धरती माथै आदरा नखत री तीतरपखी बादळी जद ओटजाण माह धारोळा निछरावळ करै तो घणा कोड करीजै। रामजी राजी हुया आदरा रो मेह अर सोभी बेटा हुवै। मेह मोटो ठाकर मानीजै, मेह मूंटोड़ा नै साधै, मेह दुख रा दिन ओछा करै, मेह मऊ जावता ढावै। मेह टाळो दे जावै पछै तो आभो धरती ही भेळा हुवै। मेह रै मारोड़ा री कोई औखद नी है। मारण रा तो दूजा मारग घणा ही है, भगवान ! मेह बिना मत मारे। मेह रा पग लीला हुवै। वेळा रा वायोड़ा तो मोती नीपजै अर 'चूका गू चोगणी है' वयो वै वगत चूका भला ही मोकळो वरसो, गई बाता नै कोई पूग सकै ?

ओ रह्यो ऊंखळी, आधो रह्यो छाज।
सागर मट्टे धण गई, (अवै) मधरो मधरो गाज॥

'वरसाळै रा बादळ आवणिया करोनी म्हारे देस' रो गीत मिजमानी मे गाइजै। बडा भाग व्है जणा मेह अर पावणा पधारै अर सोनै री सूरज ऊगै। करसा घणा चाव सू आपरा सज त्यार करै, आभै कानी आख्या फाडता आडंग नै उडीकै। बाजतै मिरगा, तपती रोहिण्या, ऊगतै सूरज रा माछळा, बीसमतै री मोग, तारा री खिवण अर चाद री जळेरी नै देख घडा दे दे दिन काढै। गूग्यो बाजै, चिड़िया धूड रा सिनान करै, कीड्या इंडा ले चढै जद विरखा आवण रो विसवास जागै।

उमस अर तपती आछी लागै जिणसू आडग पाकै अर विरखा री आस वधै—

दुरजण री किरपा बुरी, भली सजण री त्राग।
जद •   तद वरसण री आस॥

वई जणा टावर बिलोळा करता
वणावै, मोरिया मीटा
।५८ ठैंचो निया

।

पटूटिया भरै जद गैघट्ट माचै —

गैगड़ियां गैबराळियां, सोगा बडी सुघट्ट।
गावण आवै रिड़कती, भादरवै गैघट्ट॥

करसा घणा कोड करै—

हाल नवी हळ फूठरी, बळधज माता घट्ट।
ललकार्‌या लावा भरै, जद माचै गैघट्ट॥

मेह रै घर मूं ऊपड़ियोड़ी कळायण देख'र जीव मातर रो मन हुलसै। मुरधर में कळायण सू आछी देखण जोग चीज की नी है।

काळूडी कळायण बीरा म्हारा ऊमटी,
ऊमट आयो रूडो मेह।
मेवडलां झड सैया मोरी माडियो॥
इयै रै खंघेडै री माटी चीकणी।
चूला तो घातूं रै ई च्यार, मेवडला झड...॥
पैलै तो राधू बीरा लापसी।
दूजै तो रांधू गुदळी खीर, मेवड़लां झड....॥

इण तरै पालर पाणी रा कोड करीजै। डावड्या तळावा, बावड्या में डूल्यां बोळाय बाकळा उछाळै, गूगरै राधै, गोठ मनावै। हळां, हाळ्यां, ऊंठां, बळधा रै राखडी बांध हळोतियो करीजै। तळाव नेसटै नीसर्‌या, नाड्यां आडै बाटा पड्यां, पणघट हरियो हुया पणिहारी गाईजै—

काळी कळायण ऊमटी ए,
पणिहारी जीए लो, मिरगानैणी जिए लो।
ऊमट बरस्यो रूडो मेह, बाला जो॥
किणजी खिणाया कुवा बावडी, पणिहारी जीए लो।
किणजी खिणाया समद तळाव, बाला जो॥
सासू जो खिणाया कुवा बावड़ी, सजा ओठी जीए लो।
कोई सुसरा जो खिणाया रे तळाव, बाला जो।
ओरां रे काजळ टीकियो, मिरगानैणी जीए लो।
पारोड़ा फीका लागै नैण, बाला जो॥
ओरां रा साजन घरां बसै, सजा ओठी जीए लो।
म्हारोड़ा बसै परदेस, बाला जो...॥

सावण रा मोरां सूं टोर टोर छीमर भर्‌या जठ मठा'वार हुय रयो

पण पणिहारी काजळ घुलतै नैणां रौनो घट लियां ऊभी झुरै—

बादळ भर भरिया बरस, भरिया सायर नीर।
टेटरिया टर हर करै, नहि नणनल रो बीर।।

पैपरडा पैपरडा पाणी बरसाता बादळा नै देख बालम री याद में खो जावै। हिंगळू रै ढोलियै गोडा माथै ठोडी टिकाया वैठी विरहण आलीजा री ओळूं कर टप टप आसूडा ढळकावै। नैणां रौ नीर पळपळियोडै मैण ज्यूं वैवे –

नैणा बरसै सेज पर, आगण बरसै मेह।
होडा होडी लाग लगी, इत सावण उत नेह।।

'छप्पर पुराणा पिवजी पड़ ग्या रे तिडकण लागा बाम, अब घर आजा गोरी रा सायबा हो जी' गोखता, मोटी आख्या मे आसू लिया, मैडी मे दियै रै चानणै वैठी विरहण एकलडी तरसै। वीज री खडग अर बूदा री बरछी लियां बळायण री फौज रा मेह अधारी रात मे एकलडी वैठी डरपै —

फौज घटा खग दामणी, बूद बरच्छी देह।
अली एकली देख नै, मारण आयो मेह।।

बीज रै पळाव काळजै सळाव उठै, बादळ दडूकै जणा अरदास करै—

बीजळिया निरळज्जिया, जळहर तू ही लज्जि।
सूनी सेज विदेस पिउ, मधरो मधरो गज्जि।।

चौफेर मीट पूगै जितै हरियाळी ही हरियाळी दीसै। साईणा विना सावण अणखावणो लागै। भूरोडै मुरजा मे खिवती बीज री मोड बाध लोरीज्योडै बादळा री जान लेय मेह राजा बनडी बरती री मौज माणबा आ पूगो, अब तो गोखा ऊभी गोरडी रा भरतार घरा पधार।

बीजळिया हळवळ हुई, बादळ कियो बणाव।
धर महण धर आवियो, घर मडण घर आव।।

उडीकता उडीकता उथबियोडी, जोबण रा भार सू दुखडीज्योडी विरहण छेकड ढोढो बोल पडै।

भर सावण घर गोरडी, की परदेस करत।
जोबन झाला दे रियो (तू) घर आ वाला कत।।

पण वालो कत तो माया री माटवी माड्या, नाणै रै लारै न्हाटतो फिरै। हरियै-भरियै सावण मे सूखती लाखीणी लाडी आपरै साईणा नै ओळभा मेलै—

च्यार टका री चाकरी, आगी वद आडोह।
सावण जावै सूखतो, सार्गणो लाडोह।।

मन में घड़ीक विचार करै जे विधाता पाखड़्यां दे देतो
मनमेळू गू जा मेळो करती अर घड़ीक मन नै धीरज बधावै—

पांखड़िया ई किउ नही, दैव अबाड़ूं ज्यांह।
चकवी कइ हुइ पांखड़ी, रयणि न मेळउ त्यांह॥

आकळ-बाकळ हुयोड़ी विरहण री मन ठाणे नी आवै ज
तेई जिको सो कोसां बसतै साजन नै लाय मिळावै। सुपना थारी उ
थूं भलांही भलाभाग बडभाग्या नै मिळावै—

सुपना तूंज सभागियो, उत्तम थारी जात।
सौ कोसा साजन वसै, आण मिळै अधरात॥

सुपनो छानै छुरकै री बात विसवावीस सांभळै जद ई विर
आगै आपरी विथा री गाठड़ी खोलै—

'सुपना रे म्हांनै भंवर मिला देनी रे।'

सुपनै रमती विरहण री मन डगुपच्चू करै—

सुपनइ प्रीतम मुझ मिळ्या, हूँ गळि लगी धाइ।
डरपत पलक न खोलही, मति सुपनउ हुइ जाइ॥

सुपनो तो सुपनो हीं हुवै, सुपनै री उडायोडी नींद पाछी नी
विरह रै घुदेला री रीस सुपनै माथै काढीजै—

सुहिणा तोहि मराविसू, हियै दिराऊं छेक।
जद सोऊं तद दोइ जणा, जद जागू तद एक॥

सुपनो तो आळजजाळ है, पतियारो काई? जी कीकर जमा
काई सरै?

पण आस मोटी हुवै, उडीक जीवण रो आधार हुवै, नणद-भौ
बतळावण करै—

रांणो काछबो! कितरा रे दिनां सू आवै रांणो काछबो।
गिणलो नी नणद बाई पीपळियै रा पांन।
(कोई) इतरा रे दिनां सू आवै रांणो काछबो॥

करै तो काई? नी करै तो काई? मनडै री बात कणी आगै नहीं, बैर
बिना सरै नहीं, विरह बडो मगरस बाळो है—

दूर भया तो जन हुआ, धुरके भाले भाय।
ऐसे कठिन सनेह को, किन विध करूं उपाय॥

विरह रे झोलै में झुळसती मरवण ढोलै नै पथी रै हाथ सदेसो मेल्है—

पथी-हाथ सदेसडइ, धण विललती देह ।
पग सू काढ़ै लीहड़ी, उर आंसुआ भरेह ॥

'सैणा रा बायरिया धीमो मधरो बाज' रा बोला में बायरै नै बोणती करीजै । ढोलै रे डील रै लागोडो बायरो आपरै डील लागा लाग पसाव मानै—

जिणि देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ ।
उआं लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ ॥

हालो देवा सखी ! कदास कोई मीठी बोली रो सबद साजन रे महला री भीता रै चिपियोडो लाध जावै—

चाल सखी तिण मदिरइ, सज्जण रहियउ जैण ।
कोइक मीठउ बोलडइ, लागो होसइ तैण ॥

आप बिना एकलडी तरसती विरहण नै 'एकलडी मत छोडो सियाळै री रैण' री कहिया काळजै धुखणो घालती सियाळै री लाबी रातां बालम बिना जुग जिती लखावै—

आज स उत्तर वज्जउ, पाळउ पडसी रोट ।
दोहागण घट सांमहू, सोहागण री पीठ ॥
दिन छोटा मोटी रयण, टाढ़ा नीर पवन्न ।
तिण रित नेह न छडियउ, हे बालम बरमन्न ॥

सियाळो जावै तो विरहण नै दाभण नै उन्हाळो आ ढूकै । दिन में तावडा री तडतडती लाय मे बळबळती कामणी कैसर री पगमैडो टरकावै अर रात रा चदा री सीतळ चादणी मे चदमुखी रै विरह री लाय रा धरटका उपडै । कूकू बरणी कामणी काजळ बरणी हुय जावै । इतरा ताता सू हर परी'र सूखा विरहण रै काळजै सुख जावै—

को सूका बिन जावता, पावस घर दहिदोह ।
हिये सखोरा नार रै, बालम दीठ'दहोह ॥

रुत जावै रुत आवै, आखीजो नी आवै आखीआं री आडू आवै । [illegible] साह नै बिसारणो मरवण बीज रै चट जु सू निजर करी अरजी करै—

जे होसा तु मारविदा, कारलिया री चैंच ।
चमक मरेली मारवी देस निवासी [illegible] ॥

असाढ री ऊमटियोड़ी कळायण रै भूरोड़ा भुरजा में खिवती बीज काजळ सारूंवां, बासग नाग सी आटी सीस गुथायां, पातळोड़ी मूमल नै सोढ़ै री मुरधरदेश पधारण री मनवार करै—

'काळी काळी काजळिया री रेख सा,
(कोई) भूरोड़ै भुरजां में चमकै बीजळी।
नैणां री ए मूमल, हालो नी पधारो मुरधरदेश॥

काजळिया नैणा मे काळी घटा निहारतां प्यारी धण साजन री बाट जोवै—

आसा आसा ऊमटै, चौमासै घण थाट।
काळी घटा निहारता, प्यारी जोवै वाट॥

प्यारी धण रा साईणा हूमै तो हेलो सांभळो—

आसी सावण मास, बिरखा रुत आसी भळै।
साईणा रो साथ, भळै न आसी बीझरा॥

सावण रे महीणै बणराय पांगरीजै, नदी नाळा एकमेक हुवै, बेला रुखा रै विलूंवै जद पछै साईणा विना जक कीकर पड़ै?

सावण आयो सायबा, पगां विलूंबी गार।
तरां विलूंबी बेलड़्यां, नरां विलूंबी नार॥
नाळा नदिया सूं मिळै, नदिया सरवर जाय।
बिरछां सूं बेलां मिलै, ऐसी सही न जाय॥

बीज रो चुड़लो चमकावती, बिणाव कियां धरती री कूख भरण नै मेह राजा लूठ परो बूठण नै आ पूगो, म्हारा आलीजा, घर रा धणी! अब तो घरा पधार।

मेह लूंबी लूंबी घटा, वसुधा कियो बणाव।
घर मंडण घर आवियो, घर मंडण घर आव॥

कागोलिया पटकती कळायण री ऊमटती कुड्यां नै देख, तीजा रै तिवार ढूकण रा कोड़ीला कोल चितार अळवळियै असवार री बाट न्हाळीजै—

बीज भबूकै खिण परै, खिवती आभ चढ़ेह।
मिरगानैणी माणवा, ढोलो ढाण ढडेह॥

पण तावड़ा पड़ता असवारां री मेह में ऊजळी रो आधार मेह री दीसै नी—

वै दीसै असवार, घुड़ला रा घूमर किया।
अबळा रो आधार, जिको न दीसै जेठवा॥

दूजा अमवाग सू आग नों पूरोजे, राज गरै नही—
आवै और अनेक, ज्यां पर मन जावै नही।
दोमै तो बिन देस, जागा सूनी जेठवा।।

क्यों कै—

जळ पीधा जाडेह, पावासर रै पावठै।
नावडियै नाडेह, जीव न धापै जेठवा।।

आपरै रगमहला खिगमीज्योडै भाण जेठवै खातर विरह रै भाखर हेठै दबियोडी ऊजळी लाया लैका सू हेला करै—

दुनिया जोडी दोय, सारस नै चकवै तणी।
मिळी न तीजी मोय, जो जो हारी जेठवा।।
टोळी सू टळताह, हिरणा मन माठा हुवै।
वाल्हा बीछडताह, जीवा किण विध जेठवा।।
जिण बिन घडी न जाय, जमवारो किम जावसी।
विलखतडी वीहाय, जोगण करग्यो जेठवा।।

सोनै रो ठा तपाया लागै, विरह री कसौटी मायै खरो ऊतरिया ही नारीपणो मानीजै। आशा अमरधन हुवै, उडीक मोटी हुवै।

विरह रै झोलै में झुळसती विरहण आपरी भसमी नै भेळी करती थकी आगोतर मिळण री आस में धीरज धार्या बैठी रैवै—

जाळू म्हारो जीव, भसमी नै भेळी करू।
(तोहि) प्यारा लागो पीव, जूण पलट लू जेठवा।।

लोकगीतां रा लावा

रंगीलो राजस्थान रा रळियावणा गीता रो घसको अर ठमको घणो इधको है। लोकगीत जन जीवण रो आधार मानीजै। जठै जीवण है, प्राण है, भावना है, संवेदना है, वठै गीत है। लोक-जीवन अर लोक-गीत एक दूजै रा मन प्राण है। पूरो जीवण लोकगीता मे जीवीजै। जाति, धर्म, सम्प्रदाय रै बंधणां सूं दूर लोकगीता रो प्रभाव सब माथै सरीखो। लोकगीत भावा रो अथाग समंदर है जिणरो नी ओर है, नी छोर है, नी आदि है, नी अंत है। लोकगीत कद, कुण लिखिया ? इणरो पतो नी लाग सकै। सब लोगा रा गीत एक जिसा, भाव एक जिसा, भावना एक जिसी। गीतां री ढाळ अर लैकै नै जांणण वाळा ही जात री ओळखांण कर सकै।

बारै कोसां बोली पलटै। इण तरै मारवाडी, ढूढाडी, मेवाडी, मेरवाडी, मेवाती, हाडौती रा भात भांतीला गीतां री फुलवाडी घणी फूली फळी है। भील, गरासिया अर जन जातिया रो जीवण लोकगीतां रै रस सूं सराबोर मिळै। हेत-प्रेम, मांण-मनवार अर राग-रग री धरती धाट अर माड घरा राग रो घर गिणीजै। अठैरा लोकगायक लंगां, मागणियारा आखो धरती माथै धूम मचा राखो है। मांड राग नै सात समदरा पार पुगावण वाळी अल्लाह जिलाई बाई नै पद्मश्री मिळी है। मिनख-लुगाया, टाबर-टोळी, बूढा-नौसला, राजा-रक पिण कोई भी लोकगीता सू अछूता नी है। लोकगीतां रा लैरका सबां रे हियै फरूकै। रीझ-खीझ री इण रूपाळो धरती माथै रण चढण, कंकण बधण अर पुत्र बधाई चाव मानीजै। राग-रग, उच्छब-ऐठै माथै हरख कोड करीजै, गीत गाळ गाइजै।

टाबरां रा गीत —

बाळक रे जलम सू लेय आसी ऊमर गीत गाइजै। पुत्र जलम माथै थाळी बजाइजै, गुड फेरीजै, बधाई बाटीजै। लुगाया पेनडिया गावणा गरू करै।

जे थनै रे गीगा हालरो बटोलिया सोर्व,
तो नानोसा री पोऱ्यो मेल्र रे हालरिया।
मेल रे पेनडिया।।

जे थनै रे गीगा भुगला टोपी सोवै,
तो मुवाजी री गोद्‌या रम रे हालरिया।
मेल रे घेनडिया ।।
जे थनै रे गीगा गूद गिरी रा भावै,
तो दादोसा री गोद्‌या मेल रे हालरिया।
रम रे घेनडिया ।।""

टाबर जलम्या रै पाच दिना पछै पावको हुवै। टाबर नै भुगलौ पैराइजै अर जच्चा रै माथै री लटी खोळीजै। सिरातै बरतनो, पेमसळ, कलम राखीजै। मानता है इण छठी री रात वेमाता टाबर रै अक लिखै। पछै पिडत जी नै पतडो बताय सात का नव दिना सू सूरज पूजीजै, नाव निकाळीजै। नखत हूवा उण लेखै सू नखत पूजै। मघा, मूळा, आसा, जेठा नखत करडा मानीजै। उणानै शात करण सारू सात कुवा, सात तळावा रो पाणी, सात भात रा धान, सोनो चादी अर कपडो लत्तो दान दिरीजै, टोटका करीजै। जच्चा पीळो ओढ पाट बैठे। म्हाराज पतडो देख नाव काढै। लुगाया 'पीळो' गावै।

गढ नै जोधाणै सू पोत मगा दो।
जच्चा रे पीळो रगा दो गाढा मारूजी ।।
ऐडै तो छेडै मोर पर्पया।
बिचाळै सोने को सूरज कोरा दो गाढा मारूजी ।।
पीळो म्हारो जामण जायो लायो गाढा मारूजी।
पीळो रगा दो ।।
पीळो तो ओढ जच्चा पाट बिराज्या।
पीळो म्हारो जोशी जी सरायो ।।
कोई देराण्या जेठाण्या मोसा बोल्या गाढा मारूजी।
पीळो रगा दो ।।

पछै सूठ, मघीणो, चिकणास खाय टाबर री मा घर रै काम धधै लागै। पैलडो जापो पीहर मे कराइजै। पावणा नै बुलाय 'बाळूदो' करै। नानाणै सू टाबर रै सोनै चादी रा हासली कडोलिया, झुगला टोपी, वेस बागा कर सीधा बाडै आपरी हैसियत सारू दिरीजै। सुणसुणिया रमतिया रै सागै टाबर रै भरिया भोजिया वास्तै पूदै वाळा रलकिया, गिदिया, पालणो, हीडो हाळी, रेडूलो, गाडो सागै मेलीजै। दादाणै पूगा गुड बटाइजै, लूण मिरच अवारीजै, ढोल रै ढमकै बधाइजै। जात झडूला चडाइजै,

तेड़ीजै । कंवारी छिन्यायां सुथारां रै घरै जावै जिका माटी अर गोबर विनायक बणाय देवै । थाळी मे विनायक नै लेय गीत गावतं आवै विनायक जी विराजमान हुयां सब मंगळ कारज सफळ हुवै—

रणत भंवर सूं आयो विनायक ।
आय उतरियो हरियै बाग मे ।।
पूछत पूछत नगर ढंढोळ्यो ।
घर तो पूछै लाडकडै रै बाप रो ।।
ऊंची जी मैड़ी लाल किवाड़ी, वो घर लाडकडै रै बाप रो।।
पैलो जी वासो समेळो हो बसियो ।
समेळो रूंधो रुड़ा साजना ।।
एक साजनियां री धीव परणियां, जद म्हे आगा पधारसां ।।
दूजो जी वासो तोरण बसियो ।
तोरण रूंधो रूड़ी चिड़ोकल्या ।।
एक चिड़कोली नै चूण चुगासा, जद म्हे आगा पधारसा ।।
अगलो जी वासो मांया हो बसियो।
माया रूंधी रूड़ा देवता ।।
एक देवता नै नारेळ चढासां, जद म्हे आगा पधारसा ।।
चौथो वासो चंवर्‌या हो बसिया ।
चवर्‌यां रूंधी राज पुरोहिता ।।
एक जोशी जी रो नेग चुकासा, जद म्हे आगा पधारसा ।।

इण तरै विनायक जी नै तेडीजै । बनडै बनडी रै पीठी उतारीजै। हाथा मे कटारी, चादीरो चुटियो लियां बना वदोळा जीमणा सरु करै। गुड़ बंटाइजै, वांना भराईजै। वनड़ा गावणा सरु करै।

घोडी ए घूघरा बजावै ।
घोडी ए अधर अधर पग धरियै ।।
म्हारो चढियो गायडमल डरपै ए ।
गळिया मे धूम मचावै, घोडी ए घूघरा बजावै ।।
घोड़ी ए आभोसा मोलावै ।
(कोइ) माता जी सिणगारै ।।
म्हारो चढियो फूठरमल डरपै ए ।
सूतो सैर जगावै, घोड़ी ए घूघरा बजावै ।।

ब्यांव रा नैतियार आवणा सरु हुं । माण मनवार करीजै। छोटा मोटा सव सडकै चढिया कोडीजता फिरै। पमाणा पांवणा पधारिया है,

रावळै मे कंवाईजे । हीदी मे बुलाय तिलक करीजे, अगत रा बीज चेपीजै, मूडै मे गुळ देय आरती उतारीजै । लुगाया रो टूळ ऊभो 'फळसलियो' गावै—

म्हारो फळसलियो खडकायो ए ।
म्हारे भली रे हुई आप आया हो ।।
म्हारो बिडद सुधारण आया हो ।
गायडमल जी रा फूठरमल जी आया हो ।।

जवाई पधार्‌या भळै आखडली गाइजे—

ए मा गोळी ए ।
आखडली फरुकै, काग करुकै ए ।।
ए मा गोळी, आगा नै पधारो ।
थारा सुसरो जी उडीकै रग री कोटडी ।।
थारा सासू जी उडीकै राज रसोवडै ।
कोई साळो जी उडीकै सोवन थाळ पै ।।
ऐ मा गोळी, आखडली फरुकै, काग करुकै ए ।।

आयण रा वेगो वेगो सजीरो साभ गीतेरणें भेळी हुवै । गीत मरू करण सू पैला गुणेश भगवान नै सिवरीजे—

धूद धूदाळो सूड सूडाळो ।
ओछी पीडी रो आयो बिनायक ।।
हालो विनायक जोशी घरै हाला ।
चोखा सा लिगन लिखाय लावा ।।

पछै घणी घणी रात गया ताई गीत गाइजे । साद रै ज्या । गीतां मे वहूवा सासुवा सागै मसखरी करै—

बना सडक सडक हुय आज्यो मा ।
म्हारी रेल नै डिगावोला काई सा ।।
सासू थारी म्हारी करणो सोरो ।
वहू परोटणी दोरो जी, म्हारी.. ।।
वहू थे आया म्हे हरख्या ।
थानै पर्ग लागता परख्या ।।
सासू सोभी जाया बेटो थारो ।
अब तो साजन म्हारो जी, म्हारी ....।।
मत करो बूजी मा आचो ।
थारो बारै टळाय दू माचो ।।

सासू मत मांगो मूछ मेंगी ।
थारी म्हारी मिला दूसा हेगी जी, म्हारी ॥...

गवा सूं पछै बधावो गाइजै, गुड़ बांटीजै—

बधज्यो रे दांतिगर थारी बेल ।
अनोखो पुड़लो में पड़यो जी म्हारा राज ॥
पुड़लो पैरे म्हारा जी री नार, पुड़लै पर सूरज ऊगियो ।
म्हारा राज ॥
बधज्यो रे सोनी जी थारी बेल ।
अनोखो तेवटो में घड़्यो जी म्हारा राज ॥
तेवटो बांधै सायब जी री नार, तेवटै पर सूरज ऊगियो ।
म्हारा राज ॥
बधज्यो रे कारीगर थारी बेल ।
अनोखो मालियो में चिण्यो जी म्हारा राज ॥

घर में बेंधी लागी रै । जान जावण रो कँवाडोजै । आवण उ
वाळां री हाजरी सजाइजै, अमल थाय पाणी री मनवार करीजै । माहेर
रा अवन अवन करीजै, ज्यांरो डेरो दिराइजै । माहेरो भरण रो तेड़ो करा
जाजमां ढाळीजै । ढोल रै ढमकै आगणै पधारीजै । घड़ो कड़ूबो, सगा पर
भेळा हुवै । लुगाया 'वीरो' उगेरै । वीरो इतरो भाव भरियो गीत है,
हिताय नागै । उणायत भरिया मिनख लुगाई तो गाय-सुण नी सकै, इ
हारां नैणां सूं चौसरा चालण लागै ।

वीरा झिरमिर बरसै मेह हो ।
म्हारा जामण जाया नैं नैतण हूं गई जी ॥
वीरा नैतूं म्हारा जामण जाया,
नैतू म्हारा भाई नैं भतीजा हो घण देवा वीरा ।
नैतूं भौजाया रा झूलरा जी ॥
घण देवा वीरा नैतू म्हारै नाइजी रो साथ,
हो लासीणा वीरा देवर जी मोसा बोलिया ।
हो भावज करसा सा वीरा रो गुमान हो जी ॥
वीरा ले घडली पांणी नै सावरी,
झीणी झीणी उडै रे गुलाल हो म्हारा जामण जाया ।
टणमण बाजै बळधा रा टालिया हो जी ॥
भौजायां रा चमक्या चूड़ला म्हारा जामण जाया वीर,
कांई थे वणग्या जायल रा जाट नैं सियाळै रा चोधरी ।

थारूं पग रो पेंडड़लो मन दूणों हो,
सिणगारेंगी रा जल्ला।
मैं तो पग री खबर न लीनी हो जल्ला॥
कुअड़ल्या रो पानी खारो मीठो ओ,
पातळ पेटी रा जल्ला।
मीठोड़ो म्हारै भोज मयर नै पामां हो,
कोई नागोड़ो गोरड़ली नै पामां हो।
खबर धाई रा जल्ला॥
गोरा मांगतो गोर भलो जोधाणो ओ,
जिगरी जोड़ी रा जल्ला।
छोटा मांगसी छोट भलो मुळतानी ओ,
म्हारी जोड़ी रा जल्ला॥ ..

सांमेळै री त्यारियां करीजै। गवाड़ मे बिछायता करीजै। जानी बराती अर घराती भेळा हुवै, नेगचार मिलणी करीजै। निछरावळा हुवै। पहळो पुगाइजै। गुगणीक चूड़ो, वरी अर मोजड़ी सूपीजै। बीदराजा नै तोरण माथै ढुकाइजै। बोरड़ी री छड़ी साथै कटार-तरवार सू घोड़ै चढ़ तोरण बांनीजै। सासू दही देवै। चमक आरती उतारीजै। लुगायां गावै —

तोरण आयो लाडो थरहर कांपै हो आज।
पूछो सिरदार बनै नै कांमण किणजी करिया हो राज॥
म्हे नी जाणा म्हारा नाईजी कामण गारा हो राज।
नाईजी रो नेग चुकासा जद म्हे आगा आसां हो राज॥
म्हे नी जाणां म्हारा जोशीजी कामणगारा हो राज।
जोशीजी रो नेग चुकासा जद म्हे आगा आसा हो राज॥

लुगायां रा काराकूड़ा करीजै। बीदराजा नै नापीजै, टोटका करीजै। केई भांत री परीक्षावां लिरीजै। हसी ठट्ठा करती लुगायां गावती जावै 'सात सुपारी लाडो सिंघोड़ा रो सटको, कांणा जानी लायो लाडो कांरो करसो मटको।' पछै साळा साथै कंवर कलेवो कराय चंवरयां मे बैठाइजै, हथळेवो जोड़ अगनी देवता री साखी मे फेरा लिरीजै। म्हाराज पाट्यां पढ़ पति-पत्नी री शपथ दिरावै। परणीज उतरिया पछै बीन बीनणी नै जान रै डेरै पुगाइजै, खोळ भराइजै। लुगायां कोयलड़ी गावै—

कोयलड़ी सिध चाली ए।
इतरो दादोसा रो लाड॥

आवा पाका आमली कोई,
नीबूड़ा लुळ लुळ जाय।
कोमल बाई सिध चाल्या॥
रमता भामँजी रे आगणँ,
आयो मैला रो मूवटो ए।
लेग्यो टोळी मा सू टाळ,
कोयलडी सिध चाली॥

दिनूगँ जाता फिराय देवस्थाना धोक दिराइजँ। पछँ बहार रो जीमण करँ। जीमण री बगत गीत गाइजँ—

माज्या घोया थाळ परोस दिया भात जी।
आवो आवो ईसर दास जी भाणँ घालो हाथ जी।
भाणँ घालो हाथ बताओ थारी जात जी॥
बाप म्हारो राजवी माय पटराणी जी।
बैन म्हारी सोदरा रमोई रै माय जी॥

सगा रा कवारा टावरा नँ 'रडवो' गाळ गाइजँ। अठै गाळा काढीजँ नही, गाइजँ। कँडी रूडी संस्कृति है।

दोडग्या दोडग्या लाल जी सोनी जी रै पूगा।
सोने री नार घड दै रे मैया, लडाक लूवा लड रैया॥
सोने री नार रो थाई रे भरोसो, पडै चोर ले जाय रडवा।
लडाक लूवा लड रैया॥
दोडग्या दोडग्या मगोजी सुथारा रै पूगा, लकडी री नार घड दै मैया।
लकडी री नार रो किसो रे भरोसो, पडै पतगा बळ जाय रडवा॥
दोडग्या दोडग्या ब्याही जी कुभारा रै गैया, माटी री नार घड दै मैया।
माटी री नार रा किसा रे भरोसा, पडै बूंद गळ जाय मैया॥
दोडग्या दोडग्या लालजी वाणियँ रै पूगा, गुळियैरी नार घड दै मैया।
गुळियारी नार रा किसा रे भरोसा, पडै गिदड ले जाय मैया॥
लडाक लूवा लड रैया॥

पछै लगना ही रडवँ सगँ नँ चोपडगी बाई इसरगी करीजँ, काटी कुर्मा परणाइजँ—

नारायण जी परमेसर जी।
सगँजी नँ काटी कुर्मी परणामा जी॥
ऐ इधटेवो बाहर कुर्मा जी नारायणजी परमेसरजी।

गर्गजी री राम पुर्गा जी रो पंजो गो हथळेवो जुड़मीजी ॥
ऐ पंगा वारर में मो श्री नारायणजी परमेसर जी।
आर्ग गरोभी मार्ग पुर्गाजी दद फद फेरा लेमी जी ॥
ऐ बारा वारर करमी श्री नारायणजी परमेसरजी।
गदो घणळामी पुर्गा पुरराणी वीं घर बाता करमी जी ॥
नारायण श्री परमेसर जी...॥

आगण पोर रा समटाणी करीजै। चोगी सीगा, दायजो, ओढावणी, नेग दिरीजै। आगण रा गोठ करीजै। पोल करै, मैफल जमै।

कलाळी भर ला ए प्यालो।
सेज में झूमै मतवाळो ॥
दारू पीवो रग करो अर,
राता राखो नैण।
दोगी थारा जळ मरो,
सुग पावो सो सैण ॥
भर ला ए कलाळी दारू दाखा रो।
कोई पीवण वाळो लाखा रो ॥
भर लाए कलाळी दारू दाखा रो.. ॥

रग री राता पागा पूजीजै, तिणिया रा तागा तोडीजै। सुबह वासी जंवारी जाय, घोडा घेरण रौ दस्तूर कर, थळी री सीख लेय, गवाड मे घुड़चडी बजाय नेग चुकाइजै। अमल मनवारा कर बाथा मिळीजै। पागडा छाक दिरीज, जवारडा कर सीख दिराइजै।

जान घरै ढूकां बधाइजै। देवता फिर, माया आगै जुवौ रमीजै। आरती उतार आगणै बधाइजै। वैन नै बार रोकाई दिरीजै। पगै लागणी बगसीजै। बीनणी रै हाथा रसोवडै री दस्तूर करवाडीजै। हथमोडै रो जीमण, सवाग थाळ, सज्जन गोठ करीजै। भाई सैणा नै सीखा-वाडै देय विदा करीजै। मिळण विछडण रौ जोडौ हुँ। मिळिया मन हरियो हुवै तो वीछड़ता हियो फाटै। अचळूक पड़ै, आख फरूकै, हिचकी आवै जद ओळू करीजै। 'ओळू' गीत कितरो सखरो है—

काट कटाळी खेजड़ी जी ओ।
काटो सहयो रे न जाय ॥
थारी ओळूं ढोला म्हे करा जो,
ढोला म्हारी करै म्हारी माय।

बाईसा री ओळू आवै हो राज ।।
सोनीड़ो ओळू करै जी ढोला
नैन करै उग्गाय ।
जुग बाल्हा री ओळू आवै हो राज ।।
ना ओळू रा हळ बैवे जी ढोला
ना ओळू रा निपजै नैन ।
सगर बाई री ओळू आवै हो राज ।।
हाथां मे ओळू हळ बैवे जी ढोला,
हिवड़ै मे निपजै नैन ।
जुग बाल्हा री ओळू आवै जी राज ।।

मारजिया गावै नहीं गावै आठठाण । घर गवाड़ी, मा बाप, भाई भौजाई, मायण महेल्या, बुवा बावड़ी री हर करीजै । बादळ, बीज, तळायण देय 'ढालो' गाइजै —

ऊंचोड़ी जी लिवै ढोला बीजळी ।
नीचोड़ी ता खिवै र मशाल जी, ढोला ।।
वा ता दातै रे सुरगै सासरै,
वा म्हारी मरवण गोरी रे देसा जी, ढोला ।
धण रा लसकरिया ओळूड़ी लगाय'र ओळग चढिया जी ढोला ।।
रैवो तो ढळाऊ ढोला ढोलियो,
चढता ढळाऊ रूड़ी खाट जी, ढोला ।
धण रा लसकरिया ओळूडी लगाय'र ओळग चढिया जी, ढोला ।।
रैवो तो ओढ़ला ढोला चूनड़ी जी,
चढता ओढ़ला दिखणी रौ चीर जी, ढोला ।
धण रा लसकरिया ओळूड़ी लगाय'र ओळग चढिया जी, ढोला ।।
रैवो तो पैरला ढोला चूड़लौ,
चढता लीलोडी लाख जी, ढोला ।
धण रा लसकरिया ओळूड़ी लगाय'र ओळग चढिया जी, ढोला ।।

डब डब भरिया नैणा, डावरनैणी आणै नै उडीकती डागळियै ऊभी काग उडावती कुरजा गावै । आणै नै आवनै वीर री बाट जोवती बैनड रै मन रा भाव इण गीत मे भाळीजै ।

कुरजा रे आगण आवो हे कुरजा ।
जिण चढ़ बैठ्यो सूवटो ।।

भींना भींना सुहाणा गळा में मधरो मधरो 'बायरियो' सुणाईजै—

म्हारा गंगा रा बायरिया,
धीमो मधरो बाज।
धीमो ई मधरो ई बाज रे बायरिया।।
बाई सा री उडै रे लैरियो बायरिया,
जवाई सा री उडै रे रुमाल बायरिया।
धीमो मधरो बाज...।।

केसरिया कसूंमल ओढणो, पचरंगो, चूनडी अर लैरियो अठारी सुरंग
संस्कृति में रचियो, रसियो, मन बसियो पछै गीतां में गाइजै।

म्हानै लाइदै रे जोडी रा ढोला लैरियो सा,
म्हारै लैरिया रा नौ सौ रिपिया रोकडा सा।
म्हानै लाइदै लाइदै लाइदै ढोला लैरियो सा।।
म्हारै लैरियै रा च्यारू पल्ला ऊजळा सा...।।

चूनडी ओढण री चाव अणूतो घणो हुं—

बाई सा रा बीरा जैपुर जाज्यो सा,
आता तो लाज्यो तारा री चूनडी।
रवड़ री चूनडी, जरी री चूनडी, जाळी री चूनड़ी।।
कुण सा रै देसी जी, नवल बनी।
किसा रे रंग री, जरी री चूनड़ी।।
हर्‌या हर्‌या पल्ला जी।
कसूंमल रंग री, जाळी री चूनडी, रबड री चूनडी....।।

तीज तिवारां रा गीत—

लुगाया रै जमारै तीज तिवार धोकण री घणो चाव। व्रत, वास, ऊजमणो करीजै। ऊभ छठ, तुलछी तेला, जाणै कितरा कितरा एकत राखीजै। कोई वार तिवार, उच्छब ह्वो उणा नै धोकण, पूजण री सबा सूं बत्तो कोड लागो रै। नुवो साल लागता ही गणगौर पूजीजै। होळी री ठाढी रात रा पीडोळिया कर दूजै दिन सूं ही कंवारी किन्यावा निरणै काळजै धोरा जाय, फुलडा लेय, लोटा री गवरज्या बणाय वासों लगावै, वर मांगै।

गवर ए गवरेज्या माता।
खोल ए किंवाडी ए।।
बारै ऊभै पूजण आळै काई वर मांगै ए।
कान्ह कंवर सो बीरो मांगै, राई सो भोजाई ए।।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नवर रा कड़मलां बर गाट्‌ट [illegible] मालिनो नैत माट्‌ बुगता बरमोजै। नवर नै डेन [illegible] दिरीजै।

सावण सुरंगा महीना मलवार लहरियां साळ सुसरो सावा साजो रे। गीता रा रसवाळ उपर। तीजणियां यमा दिना रंग मैं गावना मच रै 'सावण मया दी म्हारा सामण आया बीज'। सामरे स बैठी गावै—

धाई धाई ए मा ए म्हारा।
गावणिया रो बीज।
सावण स सलो रा सागर।।
दोरो दोरो ए मा ए म्हारो,
अगुणा ए गेन।
आवत जावत मा सावडो..।।

हीडै हींडतो थकी तीजणिया उमग सू तीज रा गीत गावै। पछै आवै भादवै री बडी तीज। भळो मडै। लुगाया व्रत रावै। चन्द्रमा ऊगा पाटडियै माथै माटी री तळाई माड, बाचै दूध सू भर, बोरडी रोप, उण नाडियै मे चन्द्रमा देखीजै। सवा सेर सातू री वारो कर चढावौ चाढ जीमोजै।

पछै नौरता, दियाळी, वसत पाचम, शिवरात पिण कोई भी तिवार हुवो, गीत तो गाइजै ही। होळी रा गीत मिनख, लुगाया, टाबर सैंग फाग रै रग फागीज्योडा गावै। चग री थाप माथै मिनख फाग गावै 'लिछमण के रे वाण लग्यो रे सगती को।' लुगाया लूरा लेवै 'बाड मायली बोरडी रे···' अर गोतेरणे 'दहीदो बाज रियो' गावै। बारू मास कोई न कोई बार तिवार गीत गाइजता ही रै।

करसां रा गीत—

इण धरती माथै काळ सईका सू भमतां रै पण अठैरी जमी थोडा

छांटां दिड़का सूं मोठ मतीरा निपजावै। घास हुवा राजा भोज। पशु धन
मरुंरी जीवारी है, प्रांण है। धन चरावता रूपाळी गोरबद गूंथीजै, गाइजै—

गायां चरावती गोरबद गूंथियो,
भैंस्या चरावती पोयो हो राज।
म्हारो गोरबद लूंबाळो॥
गारिया समंद सूं कौडा रे मगाया,
नैंनोडी नणद बाई पोयो हो राज।
म्हारो गोरबद नखराळो....॥

करसां रो खास तिंवार आखातीज। अणबूझ सावो। सब काम सिरै
चढै, असी रैंवै। कोरी मटकी छाण, धान री ढिगल्या कर चढावो करीजै।
घी-खीच अर बड़िया री साग अरोगीजै। सुगनी आगले जमानैं रा सुगन
सरीधा लेवै, बिरखा बूठा हळोतियो करीजै, तेजो गाइजै—

बरस्यो बरस्यो जेठ असाढ कवर तेजा रे,
लगतो तो बरस्यो रे सावण भादवो।
गाज्यो गाज्यो'''॥

जेठ असाढ अर सावण भादवो बूठा जमानैं रा पग बधै, पछै लावणी
लूटण नै पगा गूघरा बधज्या। निदाण करता, घास वाढता, मोठ उपाड़ता
'भिणत' बोलीजै—

बोलो जोडी राम नै
जोडी रै जोडी राम नै
आवरो भीड़ राम नै
मार पळेटो राम नै
साळियो बहू रे राम नै
थकग्यो काई राम नै
आवरो आगो राम नै

इण तरै पाथ मे भिणता गावता करसा कूद कूद, बध बध'र काम करै
अर लारै जेटां करता, भारा घालता जोर जोर सू 'जीवता रो, जीवता रो'
बोल सावासी देवै। ढळतै दिन, टेडे पीहर रा गाइजै—

रामैयो भल लीनो रे भाइयो।
रामैयै री वेळा रे भाइयो॥
भाया रो है जोर रे भाइया।
चार दिनां रो है काम रे भाइयो॥

'दियाळी रा दिया दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा' अर गळा काढ, ढोवणी कर घरे आवजे। बस चौमासे रै काम पछै हल्ला गल्ला अर गीतों मे ही वगत वीतै।

शौर्य गीत—

सियाळै रा धूणी रै कनै तापता, होका चिलम पीवता लोगड़ा हथायां करै, वाता रा वधार लगावै। घणा वातपोस वाता नै रमावै। सूरवीरा री धरती माथै घणा सूरमा गीतड़ा अर भीतड़ा मे आपरै जस री छाप छोडी। सूर री शिकार अठै रो चावो आखेट है। कैवा है पाच बरस रो घोडो, पच्चीसा असवार अर सौ बरस रै सूअर रो शिकार देखण नै सूरज भगवान भी घडीक आपरो रथ ठाम लै। कोटडया मे गाइजै 'चढिया है मवर जी सूरा री शिकार' अर—

छोड छोड भाखर रा भोमिया।
मारयो जासी रे, मगरो छोड दे।।
सूअर सूतो मोह मे, मूडण पीहरा देय।
इण मोडै रे कारणे मवर मरैलो आय।।
सूअरिया मारयो जासी रे।
मगरो छोड दे....।।

इणी तरै पाबूजी गाया री रक्षा करण नै बाहर चढिया अर जूझिया जद रग देवता थका पाबूजी री 'पड' वाचीजै। भोपा भोपी रावण हत्थे माथै उणा रो जस बखाणै। सियाळै री रात मे पाबू रा पायक थोरी-नायक माटा री थाप माथै ऊचो राग मे घणी भा तार्ड जस रा गीत सुणावै।

भळै वाता नै रसावता गायक, गरीवा रा सायक अर शूरवीर लोक-नायका री गाथावा रा गीत गावै। डूगजी जवारजी, बलजी भूरजी, ओमपुरी लालपुरी गीता मे गाइजै।

भक्ति गीत—

भगती अर भगतां रो राजस्थान म जोडो है। गुरापै री सिधूराग अर हर हर महादेव रै घोष मे वीररस रा बादळा वेग सू बुवा है तो धरम अर भगती री भावना मे शात रस रा अवचळ समदर भी हिलोरा लीना है। रातीजोगा, जागण, कीर्तन अर जम्मा लागता ही रैवे। चानणी मानम, थाटम चवदस मोटा दिन। ग्यारस, पूनम, अमावस घणी महताऊ तिथा। मट्-भादवो, चैत-आसोज मोटा मास। तेमडाराय, करणीजी रा रातीजोगा, रामसापीर रा जम्मा, पाबूजी, गोगाजी, भैरूजी री आरती।

गणपत गजानन महाराज अर गुरसत नैं सिंवरीजै—

सिमरू देवी सारदा।
गुणपत लागू पाय॥
सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख होय गणेश।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश॥

रातीजोगा में बाजोट ढाळ, माथै लाल कपड़ो बिछाय, चावळ सिन्दूर सागियां माढ, जोत कर, नारेळ बधारीजै। आद सगत हिंगळा थारापीजै।

म्हारै हरख पधारो हिंगळाज।
अवेजो म्हारै रंग री घड़ी॥

पछै देवियां री चिरजावां गाइजै। देवी रो आह्वान चाडाऊ चिरजां में अर बीणती सीगाऊ चिरजावां में गाइजै।

धिन धिन धिणियाणी,
करनल किनियाणी।
जगळ देस रा॥
सूरज कानैं कयो ना मान्यो,
वीरोटणी कैं बखाणी।
हुय सिंह रूप आछटी हाथळ,
मार लियो माढाणो जी॥
धिन धिन धिनियाणी,
करनल किनियाणी।
जगळ देस रा॥..

आखी रात चिरजावां गाइजै। 'राजल धर बनपत को रूप भूप की लाज रखाई है' अर 'दियो राज मेहाई बीकै जद ध्याई करनल मात नैं' चावी चिरजावां है। आधी रात, भखावटै अर दिनूगै जोत करीजै। जांझरकै परभाती गाइजै—

भोर भई चिड़िया चैंचाई,
जागो करनल किनियाणी।
जागो बन री रखवाळी मा,
जागो घर री धिणियाणी॥

'रामसा पीर री जै' अर 'घणी घणी खम्मा' बोलता थावै रा कामड़िया नैं जम्मो लगावण सारू आग्या दिरीजै। माघ, भादवै रा चानण पख में घणा

जम्मा लागै। पाटडियै माथै बाबै री जोती शम्प जोत करीजै। तदुरै, भीडा अर ढोलकी माथै बाबै रा गुण गाइजै–

गम्मा गम्मा ओ म्हारा।
रूणीचै रा धणिया॥
माता मैंणा दे रा लाल।
अजमाल जी रा कंवरा॥
न्हाछा रै मुगणा करै आरती।
हरजी भाटी चवर ढुळै॥
घणी घणी गम्मा म्हारै रूणीचा रा राव री॥ .

जम्मा, जागण, कीर्तन कठै न कठै लागता ही रैवे, भजनी भेळा हुवै। भगवान रामचन्द्रजी, हनुमानजी, किशन-कन्हैया रा भजन पेटी ढोलक माथै राग मूं गाइजै। सूरदास, मीरां रा भजन अर कबीर री वाणियां गावण रौ घणो चाव रैवै।

चढ़िया है राणोजी,
दळतोडी माभल रात।
कोई दिनडो ऊगायो मीरां रै देस मे॥
कोई मीरा रै मेडतणी भगवा ले लिया।
हर राम॥

दूजा घणाई हरजस गाइजै। आधीरात रा सोरठ अर भाख फाटै परभाती सरू करै।

लिछमण जानकी ने कुण हरी रे,
उड उड काग कुटी पर बैसे।
कुटिया सूनी पडी रे, लिछमण . ॥

इण भांत राजस्थान सदा सूं ही राग-रंग अर रजपूती मे रूडो, रूपाळो अर रंग दै जिसो रियो है। अठैरा वासी गीता रा लावा लूटै, रंग-बंगे अर मोद करै।

राजस्थानी साहित में लोकचेतना रा

साहित समाज री आरसी व्हे । समाज नै चेतावै, समझावै, समा
अर आगे बधावै रो जो समरो अर सांतरो साहित मानीजै । ग्यान री बाग
अर गुण री [illegible] लगावै, उणरो नाम साहित । साहित कोरो 'रमझो गु
वातरो वाईदै री गूंज' ओ कैयो चाहीजै । धणकोठी अर छानं पडियो, वध
मांयै समाज नै राष री भावन वाळो साहित निरारो व्हे । समाज अर देस नै
सूतो जागत बणावन वाळो साहित सूं ही मनो मरीजै । मानखै मे लोक चेतना
री भावना भर सकै, उणीज साहित अर साहितकारा मांयं अंजस आवै । लोक
अर चेतना एक दूजै रा प्राण अर सरीर है । साहितकार री चडूड मोट मात
भी ताई पूगै ।

राजस्थानी साहित जगा जगा लोक चेतना री विराग लियां ऊभो दीसै । राजस्थानी साहित मे वीरता अर भगती भरी पड़ी है जिणमें ठौड़ ठौड़ मुगरता री भावना अर जीवण री नश्वरता नै दरसावता साहित्यकार मिनख जमारै री सार्थकता समझावै । उण में कर्त्तव्य, बळिदान, त्याग अर परोपकार री भावना चेतावै । प्राचीन साहित घणकरो काव्यात्मक है । सिरै रचनावां यथा दुरसा आढा री 'विरुद छिहतरी', बारहठ ईसरदासजी रा 'हाला झाला रा कुडळिया, बांकीदास आसिया री 'सूरछतीसी,' 'वीर विनोद,' सूर्यमल्ल मिश्रण री 'वीर सतसई' अर घणाई छुटकर काव्या मे प्रतीका रै माध्यम सू जनभावना अर लोक जागरण नै चेतावण वाळी वाता असरदार बणी है । इण रूड़ी रचनावा री कड़िया अजै मौकै-बखत लोगा री जबान मांयं आय जावै ।

राजनैतिक चेतना—

देस काल अर परिस्थितिया सू कवि अछूतो नी रैय सकै । जिण बखत सन सत्तावन री क्राति री लपटा उठै ही, उण समै सूर्यमल्ल मिश्रण रा भाव अर आंदोलन रा विचार कैंडा प्रेरणादायक हुता, जाणण जोग है । सवत 1914 में जद क्राति री सुरूआत ही, आप पीपळ्या ठाकुर नै खरी खरी लिखी—

सारै निरवाण बाना नै धारई हाथां लीना। धिक्कार है, ऊभा धणियां धरती री गई, फौजां रै मारयां फौजां री बगी अर सवा मान चूड़ो पैरियो, सबा लखमा हुआ धणियाप लीनो।

आयो अंगरेज मुलक रै ऊपर, आहंस लीधा खैंचि उरा।
धणियां मरै न दीधी धरती, धणियां ऊभा गई धरा।।
फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण किया न खळा डळा।
खवां खांच चूड़ै खाविंद रै, उणहीज चूड़ै गई थळा।।
छत्रपतियां लागी नह छाणत, गढ़पतियां धर परी गुमी।
बळ नह कियो बापड़ा बोतां, जोतां जोतां गई जमी।।

घणा रंग है दिखण रा मराठा नै जिका पग नी रोप्या। सगदाद है भरतपुर वाळा राजा नै जिका ऊभा जोधारा जमी नी छोडी। धर जाता मरण तिणो अवमाण हुवा करै, कोई नी हिंदू मुसळमान रजपूती राखो। जोधपुर, जैपुर, उदैपुर सू तो की आस पूगीजै नी। आकै गई गई जिका नी आकै ही आसी।

दुय नरमास वादियो दिखणी, भोम गई सो लिखत अवेस।
पूगो नहीं चाकरी पकड़ी, दीधो नहीं मरेठा देस।।
वजियो भलो भरतपुर वाळो, गाजै गजर धजर नभ गोम।
पहलां सिर साहिब रो पड़ियो भड़ ऊभा नह दीधी भोम।।
महि जाता चींताता महिळा, ऐ दुय मरण तणा अवमाण।
राखो रे किहिक रजपूती, मरद हिंदू की मुसळमान।।
पुर जोधाण उदैपुर जैपुर, पहथारा खूटा परियाण।
आकै गई आवसी आकै, बांकै आसल किया वखाण।।

कवि री भविसवाणी साची हुई, आकै गई जिका सन् सैंताळीस मे आकै आया ही आई।

राजस्थान री वीरप्रसू वसुधरा री ओळखाण अलायदी है 'रगत वहै धड़ नीपजै औ है राजस्थान।' जिण धरती माथै माथो वढ़ियां पछै ई धड़ लड़ै, जलम भोम माथै वळिदान हुवै उण धरती रा वाणीपुत्र कवियां री रचनावां मे ही ओज अर वीरभाव लाधै। 'गोळीहन्दा गीता' रो लिखारो, स्वातन्त्र्य प्रेमी, जन कवि शंकरदान सामोर रै 'देस दरपण' जन जन मे मन्त्र फूंकण रियां।

पाई पियै, रगत पियोड़ी रज्ज।
आ समझ, पण नह बरसै गज्ज।।

[illegible] मुरार रा मोडा उखाण-
[illegible]—

[illegible] मुल्तान [illegible] भी मोड़ा,
[illegible] जबर [illegible]।
[illegible] देस रा [illegible] करे,
(जो) मुरार रा मोडा [illegible]॥

कविता अर साहित्यकारां आजादी री आग नै कदेई ठंडी नी पड़ण दी। आजादी री लगन सूं इण भांत जनता में चेतन राख, आजादी रो पाठ पढ़ावण में कसर नीं राखी। आजादी सबां सूं ऊपरी चीज है। उणरं आगै तीन लोक री राज भी तुच्छ है। केसरीसिंह बारठ आजादी रो मोल बतायो।

प्यारी है स्वतंत्रता सबै ही जीवधारिन को,
[illegible] धावो [illegible] मन बहलाऊं ना।
[illegible] तीन लोक को न राज चहों,
[illegible] दिल दहलाऊं ना॥

आजादी री चेतना रो राग बजावणिया जनकवियां में लाळस नाथूराम, पंतजी, सवतजी, बारठ किसनदान, तिलोकदान, गिरधरदान, मानदान, रामदयाल कविया, उदयराज उज्ज्वल, नददान आदि घणाई नाम गिणाया जा सकै है। अगर बाळी रचनावां 'गीत मानसिंघ रो, गीत आऊवा रो अर गीत डूंगजी जंवारजी रो' घणो चावो हुई। साहितकारां अर सूरां राजस्थान में जन-क्रांति री बिगुल बजायो। कवियां अर लोकगायकां ऐड़ो माहोल तैयार कीनो कै जनजन री जबान माथै गोरां नै काढण री बात अर जूझ लडण री भावना जोर पकड़ती गी। मिनख लुगायां इण सूं प्रेरणा लेय, अंग्रेजां नै काढण सारू कमर कस राखी। चंग री थाप माथै लोक साहित सघणो चावो हुवो।

ढल्लै आऊवो, जूझै आऊवो।
बारली तोपां रा गोळा,
धूळगढ में लागै ओ।
मांयली तोपां रा गोळा,
तंबू तोड़ै ओ, झल्लै आऊवो॥
आऊवो मुलकां में चावो रे, जूझै आऊवो॥

भरतपुर रा राजा रणजीतसिंह जी नै भगवान राम रै बरोबर सम-झिया जिका म्लेच्छां सूं टक्कर लीनी। लोकगीत रो असर अमिट हुवो—
गोरा हटजा, राज भरतपुर को।

सू मति जाणो रे लोगा,
नहीं है बेटो जाट को।
ओ तो कवर सहीं है,
राजा दशरथ को, सोरा हेजा ।।

इण आजादी रै जग में देसवासियां में एक नूई चेतना, जागृति अर गुलामी री सांकळां सूं मुगत हुवण री भावना नित नित मजबूत होती गी। सदियां री गुलामी री जकड़ी बंधण री धार ली। सैकड़ सफलता मिळी। सुख सुविधावां वास्ते घणकरा राजावां, महाराजावां अंग्रेजां री दासता अंगेज ली। केई राजावां अदरूणी तौर सूं क्रांतिकारियां री मदद भी करी। अंग्रेजां रै कडू रैवण वाळां नै साहित्यकारां नी बगस्या। सन 1903 में आयोजित दिल्ली दरबार में उदयपुर महाराणा फरमान पाय हाजर हुवा। प्रसिद्ध क्रांतिकारी अर कवि केसरीसिंह बारठ वांरै कनै दूहा 'चेतावणी रा चूंगट्या' लिख'र मेलिया।

पग धार्या पगगाण, राण सदा रहिया निडर।
पेखता फरमाण, हलचल किम फतमल हुवै ।।

कवि रा अणीदार आखर तीर रो काम करियो अर वै दरबार में हाजर हुवा बिना पाछा फिरग्या। ओ असर साहित्य रो है। साहित्यकारां सदा ही राजावां नै आडे हाथां लीना है अर जनता में भावना भर आंदोलन सारू त्यार कीना है।

परजा नै पाळै नहीं, समझै नहि सुतरूप।
रक्षक अब रहिया नहीं, भक्षक बणग्या भूप ।।

राष्ट्रीय कांग्रेस री बागडोर महात्मा गांधी रै हाथां में आवतां ही जनता में आजादी रै आंदोलन री लैर दौड पड़ी। राजस्थान में प्रजामंडळ री धूम रही। रामबिहारी बोस रै नेतृत्व में केसरीसिंह बारठ, अरजुन लाल सेठी, राव गोपालसिंह खरवा, विजयसिंह पथिक, जयनारायण व्यास, माणिक्यलाल वर्मा इण आंदोलन नै हवा दीनी। वर्माजी री 'पछीडा' गीत स्वतन्त्रता री भावना सूं हजारूं कंठां सूं गुंजायमान हुवो। इणमें बिजौळिया आन्दोलन रा नेता पथिक जी नै देवता सरूप कहियो है।

मरदा ओ रे,
सुण कर अर्जी एक देवता आयो छै।
जी को पतो नहीं पायो छै।।
झूटो सत्याग्रह लायो छै।
सब लोगां के मन भायो छै।।

जमीदारी जुलमां सूं जूझती आंदोलित लुगायां गावती 'म्हानें दीदा जी आय जगाया ए मा, इण सूं म्हां गुण नहिं भूला।' पथिक जी सदैव लिखता अर लोक जागृति कर क्रांति रा भाव भरता।

फिर गणराज सिखाओ म्हानें,
पंच राज को रस्तो।
म्हाका राज काज म्हां करस्यां,
शासन होवे सस्तो।।

जन कवि गणेशीलाल 'उस्ताद' री प्रेरक कवितावां रो घणो असर हुवो।

मुलक नैं मोट्यारां माथा दैणा पड़सी।
देस नैं दीवाणा रा माथा दैणा पड़सी।।
जुल्म जोर री जड़ नैं काटो,
झूठ मूठ री खाई पाटो।
हिलमिल हाथ बटावो।।
आवो अपणो देस उबारां,
भारत मा रो भार उतारां।
सिर दे लाज बचावो।।

मनुज देपावत व्यवस्था रै खिलाफ उठ खड़ो हुवण नैं बोकारिया है।

रे धोरां वाळा देस जाग,
रे ऊंठां वाळा देस जाग।
छाती पर पैणा पड़्या नाग,
रे धोरां वाळा देस जाग।।

इण भांत सुमनेश जोशी, कन्हैयालाल सेठिया आदि कवि साहित्यकार आपरी कलम री ताकत सूं जनता नैं चेताय आजादी री मंजिल पावण में मदद करी। वो ही देस आगै वधै जिणरा साहित अर सूर आगै।

रौ होणो जरूरी है। राजस्थानी साहित्यकारां अर भगत कवियां में बारठ ईसरदास, नरहरिदास, मीरां, अलूजी कविया, भक्त माडण कवि, सहजोबाई, मानबाई आपरी भक्ति रचनावां अर सतसंग सूं समाज नैं सही मारग दरसायौ। इणी रचनावां 'हरीरस, अवतार चरित्र, पांडव यशेन्दु चन्द्रिका, मीरां रा पद' भगती री लहर बहाई। अठै सनातन, जैन, वैष्णव धरम रा संत महात्मा, कथा वाचक नियमित रूप सूं भक्ति रैं मरम री व्याख्या करैं जिणरौ जन जीवण माथै घणो असर पड़ै। लोक देवता रामदेवजी, करणीजी, गोगोजी, तेजोजी, पाबूजी री बयावां, पड़, साहित्य उणां रैं आदर्श जीवण री छाप लोगां माथै माडैं। राजस्थान में नुई धार्मिक चेतना जगावण में अठैरा संत महापुरुषां–जाम्भैजी, जसनाथजी जैम बणाय नुवा पंथ चलाया। नाथ पंथ अर अलखिया सम्प्रदाय री असर पड़ियो। जैनधर्म अर दयानंद सरस्वती रैं आर्यसमाज आप री दृष्टि सूं समाज नैं नुई दिशा बताई। भक्ति साहित्य राजस्थान में मोकळो है अर देश काल रैं अनुसार प्रभावशाली है। धार्मिक चेतना समाज नैं जड़ सूं बणण दै अर आगै बधण नैं प्रेरणा दै।

सामाजिक चेतना—

सामाजिक चेतना लो राष्ट्र निर्माण री आधार है। साहित्य, धर्मप्रचारक अर समाज सुधारक ही समाज रो स्वरूप निर्धारण करैं। समाज नैं चेतावणी तथा कुरीतियां अर कुलच्छ निवारण में साहित्य री अहम भूमिका रहै। पागलेटी अर रद्दी साहित्य समाज नैं दूषित करैं। मकळी साहित लोकमानस नैं झकझोर नाखै। लोक चावै जनकवि ऊमरदान लाळस आपरैं काव्य में पाखंड, आडम्बर, ठगाई नैं मूंहता पका लम्पट ढोंगी साधुवां नै फटकार दीनी है।

आवै मोड़ अपार रा, लावै बटिया लोर।
खाई कहै उण वेन रा वर्ण जवाई चोर॥

जिकारी सेवा लो जूता गू ही सब आवै।
घर मांही घुस जाय म्हारै कुला सनकारो।
[illegible] घर आसो [illegible]॥

जमींदारी जुलमा सूं जूझती आंदोलित लुगाया गावती 'म्हांनै पढ़ा जी आप जगाया ए मां, इण सूं म्हा गुण नहिं भूलां।' पथिक जी खुद गीत लिखता अर लोक जागृति कर क्रांति रा भाव भरता।

फिर गणराज सिखाओ म्हांने,
पच राज को रस्तो।
म्हाका राज काज म्हा करसां,
शासन होवे सस्तो॥

जन कवि गणेशीलाल 'उस्ताद' री प्रेरक कवितावां रो घणो असर हुवो।

मुलक नैं मोट्यारां माथा देणा पड़सी।
देस नैं दीवाणां रा माथा देणा पड़सी॥
जुलम जोर री जड नैं काटो,
झूठ मूठ री खाई पाटो।
हिलमिल हाथ बटावो॥
आवो अपणो देस उबारा,
भारत मा रो भार उतारां।
सिर दे नाक बचावो॥

मनुज देपावत व्यवस्था रै खिलाफ उठ खड़ो हुवण नैं बोगारियो है।

रे धोरा वाळा देस जाग,
रे ऊंठा वाळा देस जाग।
छाती पर पैणा पड़्या नाग,
रे धोरा वाळा देस जाग॥

इण भांत सुमनेश जोशी, कन्हैयालाल सेठिया आदि अनेक साहित्यकार आपरी कलम री ताकत सूं जनता नैं चेताय आजादी री मंजिल पावण में मदद करी। वो ही देस आगै बधै जिणरो साहित्य अर सूर जागै।

धार्मिक चेतना—

किणी भी देस रै जन जीवण में धर्म रो स्थान घणो महताऊ व्है। धरम नांव कर्त्तव्य रो है। काई करणो चाहीजै अर कांई नीं करणो चाहीजै बो ही धरम-अधरम रो विधान है। धरम रो उपदेस देवण वाळां रो असर समाज माथै घणो पड़ै। राजस्थान रै सभी धर्मों में आपसी भाई चारो, सद्भाव अर श्रद्धाभाव इणारै ही परताप। धार्मिक आचरण साद जीवण नै घणो प्रभावित करै। सामाजिक मानतावां, नीति, आचरण में सुधार लावण में महताऊ [illegible]

रो होणो जरूरी है। राजस्थानी साहित्यकारां अर भगत कवियां में बारठ ईसरदास, नरहरिदास, मीरां, अलूजी कविया, भक्त माडण कवि, सहजोबाई, मानबाई आपरी भक्ति रचनावां अर सतसंग सूं समाज नै सही मारग दरसायो। इणी रचनावां 'हरीरस, अवतार चरित्र, पांडव यशेन्दु चन्द्रिका, मीरां रा पद' भगती री लहर बहाई। अठै सनातन, जैन, वैष्णव धरम रा सत महात्मा, कथा वाचक नियमित रूप सूं भक्ति रै मरम री व्याख्या करै जिणरो जन जीवण मांथै घणो असर पड़ै। लोक देवता रामदेवजी, करणीजी, गोगोजी तेजोजी, पाबूजी री कथावां, पड़, साहित्य उणां रै आदर्श जीवण री छाप लोगां मांयै माडै। राजस्थान में नुईं धार्मिक चेतना जगावण में अठैरा संत महापुरुषां–जांभैजी, जसनाथजी नेम बणाय नुवा पंथ चलाया। नाथ पंथ अर अलखिया सम्प्रदाय रो असर पड़ियो। जैनधर्म अर दयानंद सरस्वती रै आर्यसमाज आप री दृष्टि सूं समाज नै नुईं दिशा बताई। भक्ति साहित्य राजस्थान में मोकळो है अर देस काल रै अनुसार प्रभावशाली है। धार्मिक चेतना समाज नै जड़ सी बणण दै अर आगै बधण नै प्रेरणा दै।

सामाजिक चेतना—

सामाजिक चेतना ही राष्ट्र निर्माण रो आधार है। साहित्य, धर्मप्रचारक अर समाज सुधारक ही समाज रो स्वरूप निर्धारण करै। समाज नै अंधविश्वास तथा कुरीतियां अर कुलरूढ निवारण में साहित्य री अहम भूमिका रहै। दागैड़ी अर रद्दी साहित्य समाज नै दूषित करै। सकळो साहित लोकमानस नै झकझोर नाखै। लाख थावै जनकवि ऊमरदान लाळस आपरै काव्य में पाखंड आडम्बर, ठगाई नै भूंडा धका। लम्पट ढोंगी साधुवां नै फटकार दीनी है।

आवै मोह अपार रा लावै बटिया लार।
[illegible] जग ठेत रा अर्थ उबारै बार॥

तमाखू री ताड़ना करतां दारू रा दोष गिणाया है अर अमल रा औगण बताया है।

गळै धंता गुड़ पड्या, ऐलै अमली आप।
हूं हूं करतां लागियो, पैलै भव रो पाप।

अमलदारां नै भाड़ण मैं पाछ नी राखी। आर्थिक दुर्दशा दरसाई है।

पोग पीस पीमणो, हाथ घसग्या हाथां सूं।
लाय लाय ईनणो, बाळ उडग्या माथा सूं॥

तोई अमल नी पूरवै जद आसती हुयोड़ी घर धणियाणी कहै 'परभात पीहर जासूं परी, गंवद पड़ज्यो खाड में।'

इण भांत घणा ही साहितकारां आपरी रचनावां में सामाजिक कुरीतियां, औसर, बाळ-विवाह, दहेज, विधवा दुर्दशा अर दूजी समास्यावां रो चित्रण कर मिनख रै मन अर मस्तिष्क में विचार धारा परिवर्तन रो महताऊ काम कीनो है।

सामाजिक सुधार में शिक्षा रो घणो हाथ हुवै। अठैरा शिक्षाप्रेमी शासकां भी रूडी शिक्षण संस्थावां खोल सामाजिक जागृति जगावण रो महताऊ काम करियो। शिक्षा री मशाल सूं लोक चेतना, जागरण अर प्रगति रो मार्ग प्रशस्त हुवो। इण तरै साहित्य आपरी अहम भूमिका सूं राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, लोक चेतना संचार कर, कल्याणकारी भावनावां भर, समाज नै आगै बधण री प्रेरणा देवै।

'दीपै वारो देस ज्यांरो साहित जगमगै' साव सांचो है।

आजादी री अलख

आजादी रो इतिहास शहीदां रै खून सूं लिखियोड़ो है। भारत माता रा अनेकूं सपूता आपरो जीवण निछरावळ कर, हंस हंस शीश चढा आजादी री आरती उतारी। मुलक रा मोटा ठगां, काळी टोपी रा गोरा लोगां रो काळो मूंडो कर काढण री बीडो गरूपोत तात्याटोपे, रानी लक्ष्मीबाई अर होल्कर, भोमले जैंडा शूरवीरां झालियो, जगचावो है। राजस्थान रा रणबांकुरा भी इण होड में लारै नी रैया। जसवन्त राव होलकर अंग्रेजा सूं भूटको करता वाने आगरै ताई तगड पाछो फिरता फेरीज भरतपुर रा जाट राजा रणजीतसिंह रै शरणै आयो जिको अंग्रेजां सूं राड मोल लीनी। छेकड थाप खायोड़ा अंग्रेजा नै राजीपो करणो पड्यो, 'आछो गोरा हटजा राज भरतपुर को' गीता में गाइजे।

सन् सत्तावन री क्रांति में अठैरा रजवाड़ा तो गोरा रै पगूं हा पण सरदार-सामत, ठाकर-ठिकाणा अंग्रेजा री हकूमत नै उखाड फैंकण में लागोड़ा। आऊवा ठाकुर खुशालसिंह विरोध रो झंडो झेल पोलिटिकल एजेन्ट मैनसन रो माथो वाढ सिरै दरवाजे टांग क्रांतिकारियां रो मनोबल बधायो। बटोठ (शेखावाटी) रै डूगजी जवार जी नसीराबाद छावनी रो खजानो लूट खुली चुणौती दीनी। आगरा जेळ सूं डूगजी नै छुडाय गोरी हकूमत रो मानलो धूडभेळो कीनो—

जे कोई जणती राणियां डूग जिसा दीवाण।
तो इण राजस्थान में, पळतो नहि फिरगाण।।

पछै आजादी रै जग री दिपती मसाल नै राजपूताना रा नर नाहरा—अरजुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारठ, गोपालसिंह खरवा, विजयसिंह पथिक, दामोदरदास राठी सूं लगाय नै जयनारायण व्यास ताई थाम राखी अर आपरा बळिदाना री तेल बाती सूं सींचता थका जोत नै निबळी अर बूंधी नी पडण दी।

खरवा राव गोपालसिंह रजवाडा नै क्रांति साफ त्यार कर पक्की योजना बणाई। क्रांति री तारीख 21 फरवरी 1915 तय कर राखी पण

उण सूं पैली पार्टी रा कार्यकर्त्ता पकड़ीज मेळू वणग्यो। योजना विफल रैगी। इण योजना में सचीन्द्रनाथ सान्याल सूं प्रभावित सूरसिंह दसरनाथ सूं विजयसिंह पथिक घण घणी मदद करी। इणाईं कार्यकर्त्ता अर अस्त्र-शस्त्र भेळा कर रासबिहारी बोस रै नेतृत्व में ट्रेनिंग दिरीजी। आप आखी उमर घटणी अर कांदै सूं ज्वार मक्की री लूखी रोटी खावता, वन वन भटकता, जेळां काटतां पूरो जीवण होम दीनो। अरजुनलाल सेठी जैपुर जैड़ी रियासत रा दीवाण ओहदै नै ठोकर मार आजादी री लड़ाई में कूद पड़्या। दामोदरदास राठी जैड़ा उद्योगपति राष्ट्रीय विचारधारा सूं ओत प्रोत आपरो तन, मन अर धन अंवार दियो।

आत्म बळिदानी चारणा भी आजादी रा जिग में आपरा तीन सपूतां री आहूति दीनी। क्रांतिकारी बारठ परिवार आपरो घर बार, धन सम्पति सर्वस्व होम दीनो। बारहठ केसरीसिंह, भाई जोरावरसिंह, पुत्र प्रतापसिंह राजस्थान रा क्रांतिकारियां री पांत में सबा सूं अगाड़ी लाधै। इणा रै बारै में मास्टर अमीचन्द महाविप्लवी राम बिहारी बोस नै बतायो कै आ बारठा मांयै पूरो भरोसो अर पतियारो कियो जा सकै है। तीनूं बारठ इण कसौटी मांयै खरा ऊतरिया जद रासबिहारी बोस कयो, 'भारत में एकमात्र ठाकुर केशरीसिंह ही ऐसे क्रांतिकारी है जिन्होंने भारतमाता की दासता की शृंखलाओं को काटने के लिए अपने समस्त परिवार को स्वतन्त्रता के युद्ध मे झोंक दिया है।'

बारठ केशरीसिंह जी नै रवीन्द्रनाथ ठाकुर म्हारो मेतियो कै थारै जैड़ो क्रांतिकारी राजस्थान रा दळदळ में फस रियो है, थनै तो बंगाल री धरती मांयै होवणो चाहीजै। केशरीसिंह जी कागद रो धिनवाद देवता थका लिखियो कै इण राजस्थान रा दळदळ में म्हारै जैड़ा कितांई आजादी रा दीवाना समाय ऐड़ी चट्टान तैयार कर देला जिण ऊपर सूं भावी पीढ़ियां उतर सकैला।

महान प्राण प्राणवारि के तुम्हें ही सींचते,
नमामि विश्व वंदनीय ! अन्त माँ ! स्वतन्त्रते ।।

आप राजपूताना में आजादी री अलख जगाई । खरवा ठाकुर गोपालसिंह जी, विजयसिंह जी पथिक, अर्जुनलाल सेठी अर दामोदरदास राठी रै साथै मिळ पछै 'अभिनव भारत समिति' बणाय बंगाल अर महाराष्ट्र रा क्रांतिकारियां सूं भेळा कीना । क्रांतिकारी युवकां नै भेळा कर अर्जुनलाल सेठी रै विद्यालय में प्रशिक्षण सारू भेजता जिका मांय सूं टाळवा लोगां नै रासबिहारी बोस रा सहायक, मास्टर अमीचन्द कनै दिल्ली भेजता । केसरीसिंह जी री राजनैतिक हलचलां सूं चौकस रह अंग्रेज सरकार मौकै री ताक में हुती निमेज (बिहार) रा महन्त री हत्या रै मामले में जद अर्जुनलाल सेठी रै विद्यालय मांयं छापो पड़ियो तो एक संकेत री भाषा रो कागद मिळियो जिण आधार माथै केसरीसिंह जी नै गिरफ्तार कीना । दो बरसां पैलड़ो साधु प्यारेलाल हत्याकांड रो मामलो भी पाछो खुलियो अर इंदौर रा इन्सपैक्टर जनरल आर्मस्ट्रांग री निगराणी में मुकदमो चलायो । खास प्रमाण मिळिया बिना ही आपनै बीस बरस री जेळ हुई । राजस्थान में आपरै प्रभाव सूं चाणो ताय अंग्रेजां आपनै हजारीबाग जेळ भेज दीना—

गोख महल सोरी तजी, आजादी अनुराग ।
केहर काढी कोटड़ी, बद हजारी बाग ।।
हेमकड़ी तज हथकड़ी, पहरी बेड़ी पाय ।
जनमभोम हित जूझियो, जेळा केहर जाय ।।

आपरी विद्वता अर व्यक्तित्व सूं प्रभावित होय जेळ सुपरडेंट मो प्रथम विश्वयुद्ध री समाप्ति माथै आपनै 5 बरसां में छोड दीना । जेळ री यातनावां सूं आपरी तदुरस्ती बिगड़गी । आपरी जमीन, जायदाद, मकान जागीर सब अंग्रेज सरकार जब्त कर लीनी ।

एक बार लार्ड कर्जन रा दरबार में सब राजा-महाराजावां रै साथै जावता मेवाड़ रा महाराणा नै आप 'चेतावणी रा चूंगट्या' में रचिया रा 13 सोरठा लिख'र भेजिया जिका नै पढ़ पछै महाराणा फतैसिंह दिल्ली पूगणं सूं पैलां पाछा फिरग्या । आपरी लेखणी में आ ताकत हुती ।

आपरा छोटाभाई जोरावरसिंह निमज (बिहार) अर कोटा पहुन अर हत्यावां में भेळा हा । आपनै प्राणदंड री सजा मिळी पण फरार हुग्या, पा नीं आया ।

अंग्रेज सरकार आपरी राजधानी कलकत्ता सूं दिल्ली ले [illegible]
खुशी मे जलसो मनावणो तय कीनो। रासबिहारी बोस एक बडी [illegible]
योजना नै अमल मे लावण सारू बारहठ जोरावरसिंह, प्रतापसिंह अर [illegible]
विश्वास नै बुलाया। दिल्ली मे वाइसराय रा जुलूस माथै बम [illegible]
रासबिहारी पैला प्रतापसिंह नै चुणियो। प्रताप घणा दिन [illegible] सूं
निसांणो सांधियो। जुलूस री भीड़भाड़ रै माय प्रताप रा छोटा कद सूं [illegible]
सही बैठण रो बहम होणै सूं इण काम सारू जोरावरसिंह जी नै [illegible]।
जोरावरसिंह जी कद रा डीगा हुता।

23 दिसम्बर 1912 रै दिन ब्रिटिश साम्राज्यवाद रो [illegible]
वाळो वाइसराय लार्ड हार्डिंग्ज रो जुलूस दिल्ली रै चांदणी चौक मे [illegible]
पंजाब नेशनल बैंक री बिल्डिंग मायं जलसो देखतो लुगायां रै [illegible]
ओढ्यां ऊभा जोरावरसिंह जी बम फिरकायो अर लार्ड हार्डिंग रा [illegible]
लोही स रग दीना।

धोरा धरती अर सैलानी पंछी

मिस्टर क्लीवलैंड री सारी तरकीबां बेकार गई। आखिर मजब री यातनावां झेलतां वीर प्रताप 7 मई 1918 नै मौत रै बाथ घाल ली पण भेद नी दीनो। क्लीवलैंड नै ठा होवणो चाहीजतो हो कै ओ प्रताप उण माटी में पळियो है जठै वो प्रताप मुगलां आगै नीं झुकियो तो ई प्रताप नै अंग्रेज कांई झुका लेसी?

महा वीर मेवाड़ मे, पातळ दुंह परमाण।
इक अकबर सूं आथड्यो, नर दूजो फिरगाण॥

छेकड क्लीवलैंड ने कैणो पडयो, 'मैंने आज तक ऐसा मजबूत पुरुष नहीं देखा जिसके सामने सारी युक्तिया बेकार साबित हुई। प्रताप आज तूं जीत गया और हम हार गए।'

ऐड़ा क्रांतिकारी बारठ परिवार नै क्रोड क्रोड रंग अर नमन!

धोरा धरती अर सैलानी पंछी

मिनख अर पंछी रै जूनै हेत रा परमाण चित्रामां, लोकगीतां, कवितां अर ओखाणां में मोकळा मिळै। काव्य रा नीति, शृंगार, वियोग पख अर लोक जीवण में ठौड़-ठौड़ पंछी लाधै। इण वीरधरा रै वीर काव्यां में रणखेत पौढ़ता सूरवीरां रै आगथी पागथी पंछी, मवळी चौरह शीश चपी करै अर पांखां रै झपेटा पिउजी पौढ़ै।

ग्रीझणि देवै दुहवड़ी, मवळी चपै सीस।
पख झपेटा पिउ सुवै, हू बळिहार थईस॥

अठै कबळै बोलतै, चूण बाटलै काग नै बधाई में प्राण दिरीजै अर मोत्यां रै थाळा नैणा रो निजराणो मेलीजै। एकर उड परो सुगन बतायां जलम जलम जस गाईजै। 'उड उड रे म्हारा काळा रे कागला जद म्हारा पिउजी घर आवै, एकर उड कर सुगन बतादे जलम जलम जस गाऊं कागा, जद म्हारा राजन घर आवै।' डौढ़ै डौढ़ै उडतै सूवटियै मागै केवाडीजै कै थारी घण नै बाजूबंद री चाव अर लहरिया री घणो कोड है। आगूंड़ा उर भीजोतो, पग सू लीहड़ी काढ़तो रायधण पंछी हाथ मढ़ेगड़ी मेलै। उडती कुरजां री पांखां माथै ओळभा अर चांचां माथै सिनाम लिख परा अरज करीजै। सागो में घुमती कुरजां घड़ी घड़ी घाटसै। ऊभी रवै, आवरा नानरिया नै चितारै अर चुगै, चुगै अर चितारै, मात अर बाप सू दूर परा पाळै।

चुगै चितारै भी चुगै, चुग चुग चीतारेह।
कुभी बच्चा मेल्हवै, दूरि थका पालेह।

सभाव रा सुगणीर लारण माथै चिड़िया बोलीजै। बिदाई गीत गाईजै 'आयो मैणा रो सूवटो ए, लियो दादी सा सू टाट, कोयलड़ी सिध चाली।' लोक साहित्य में चिड़कली बाजै, उण नै हींड री नकबारो नीं देवा 'म्हारी म्हारी बाई नै माळद बाई म्हारी चिड़कोली ओ चिड़कोली, आज उडै परभात तड़कै उड जासी ओ उड जासी।' [illegible] भी मिळोड़ मार्गे, 'बागूड़ा बोल्या रे, मोकड़ा बोल्या रे, एकर आव [illegible]।' टौड टोडण री [illegible] सू [illegible] करै, [illegible] [illegible]

फाटै। मायरा माथै भाखी है, 'हंसा सरवर ना तजो जे जळ खारो होय, डाबर डाबर डोलता भला न कहसी कोय।' जणा पछै हंसला सूखा तालां मे पुराणी प्रीत रै कारणै चुग चुग कांकर खावै। कठण वखत मे माय नी छोडण रो मंडो रूडो कथोपकथन है—

आग लगी वनखण्ड मे, दाझ्या चंदण वंस।
हम तो दाझै पंख विन, तूं क्यूं दाझै हंस॥
पान मरोड्या रस पिया, बैठा एकण डाळ।
तुम जळो हम उड चलें, जीणो कितोक काळ॥

सुगन, सरोधै अर पाणीपणै री इण धरती माथै भरी दिस बोलण सारू तीतर रा नोहरा काढीजै, 'हाथाळी मे तनै चुगो रे चुगाऊं, नरत्या पाणी पाऊं म्हारा तीतर बोलै तो सरी'। झरां-झरा बोलती कोचरी सू सुगन पताणीजै। इण भांत काग, पपैयो, सारस, चकवो अर कुरजा अठैरै माणसा रै मन वसिया थका पंछी है।

पंछीड़ा रै हेत मे पलक पावडा बिछावण वाळा इण रूडै राजस्थान मे अनेकूं मिजमानी पछी हजारू कोसा री भा भाग, आपरा गोळ लेय देव उठणी ग्यारस रै अडै-गडै आवणा सरू ह्वै अर बसत पाचम ताई पाछा व्हीर हुवै। दूजा मुलका रा भात भांत रा पखेरू आपरा बचण नै ओनो अर जीवण नै भोजन री आस में पावणाचार रै इण ओपतै देस मे मझ सियाळै आपरा डेरा नांखै। आपरै मुलक री कठण शीत सू बचण नै 'वसुधैव कुटुम्बकम्' री भावना सागै पंखेरुवां री घडी कडूंबो भेळो होय बडेरै पछी रै लारै घर मझला घर कूंचा लाबी उडार करै। अग्रेजी रा 'वी' आखर री भात मे फूटरा अर लैणोलेण नर पंछी रै लारै मादा उडै जाणै गठजोडै री जाता फिरै। कनारियां दाई तारा अर सूरज री दिस देख आपरी मजल पूरी करै। उडाण मे थाकेलो तो मोकळो आवै अर मोळा माडा पंछी मारग मे ही झड जावै पण ठइयै पूगण में चूकण रो नांम नी। जिका पंछी जिण ठौड, तळाव, ताल ढूकै वै सालोसाल उठैहीज ढूकै। इणरी जांणकारी आवण वाळा पांवणा पछीडा रै पगा मे छल्ला पैराय, ठौड गिर्ता लिख'र पक्की पताणियोडी बात। इण री सारा मुलक चावा पशी विज्ञानी डॉ. सालिम अली सा भरै। अचूंभै अर गजब री बात कै ऐ पछी ममंदा पार लाम्बी अर हेमाळै जेडी डीगी ऊंचाया कीकर पार करै? इण बाबत घणो ख्यात गाणिया बतावै कै ऐ पछी एक घटे मे चाळीस कोस सू लें'र सौ कोस ताई री चाल सू एक मजल चाल सू अठारह घटा मे पूरी करै। इतरी तेज रफ्तार रो कारण बतावै कै पछी अगी

[illegible] देवै, [illegible]

[illegible] ऊपर सूं औ [illegible] भरतपुर रा केवलादेव घना [illegible] रा पखेरुवां रो मेळो [illegible] टीन्स कम सूं, [illegible] अर [illegible] भांतीली [illegible] खासतौर सूं आवै। [illegible] अफगानिस्तान अर मध्य एशिया रा पछी आवणा [illegible] रा पखेरुवां रा [illegible] उडण [illegible] आवण वाळा मेहमान [illegible] आवण वाळा अर [illegible]

इण लेख में म्हारा जोर सूं रेगिस्तान में आवण वाळा खास मेहमान पछी इम्पीरियल सैण्ड ग्राउज (बट्टा) री जाणकारी देवण री चेष्टा करूं। मध्य एशिया सूं आवण वाळा पछी थार रा मरुथल में आवै। साची है आम वाळो आम में अर आक वाळो आक में राजी। वे रेगिस्तान रा पछी और कठैई कीकर रजै? यानै तो पाकिस्तान रा भावलपुर आवणो अठै जैसळमेर, बाड़मेर अर बीकानेर की धोरा धरती ही आछी लागै लागण री बात है। बीकानेर रा कोडमदेसर, बालायत, [illegible] री धरती माथै हजारूं इम्पीरियल सैण्ड ग्राउज रा झुमका आवै। इण ओळ्यां रै लेखक इण पछी रा ठावा जाणकार मेजर ए. एम. खान रै साथै गाडी में रैम्प लगाय महताऊ जाणकारी हासल कीनी है। भांत भांतीला घणा पखेरुवां रा जाणकारी मोकळा पक्षीविद भेळा कीनी है पण थार रा इण मेलानी पछी माथै निर्गकम पूगी है। इणा रै पूगण री ओछी हद अर रेगिस्तान री वटणाया शायद इणरो कारण रैयो हुवैला।

19वीं सदी में जर्मनी रै रोडायनै शिकारी वॉयनिंग मार्क 1892 सूं 1909 ई. ताई राजस्थान री चार यात्रावां कीनी। बीकानेर में पखेरुवां रै शिकार वास्ते जर्मनवासी महाराजा गंगासिंह जी रै निज मेहमान हुतो। उण आपरी पोथी में बीकानेर दरबार री बडाई करता थका लिखियो है कै इण गाम पखेरू रै शिकार री मेल जगत में घणी ख्याति है। राजधानी सूं 20 मील दूर रमत में उतावळै शिकारी वॉयनिंग पूछियो, 'पछी कठै है ?' महा-

गंगासिंह पर'र बोलिया, 'काल दिनूगै नौ बजै आवैला जणा आप धार'र शिकार मेलज्यो ।' अगलै दिन ठीक बगत माथै आवरी बोलनिया चमक माथै वैनिराणी शिकार आवण लागा । हरेक बंदूक मार्थे दो लोडर हा, बिन वन्दिला शिकार करता गिया । दोफारै पछै उड़ान थोड़ी मोळी पड़ी अर इकरा दुकरा पखी तालाव रै माथै उडता दीसण लागा जिका निशाणै री मार सूं बाहर हुवा । अंत में छ सौ जोड़ा आया जिणमें जर्मन मेहमान रै पांती माड़ा अढ़ाई सौ जोड़ा आया । इण सूं पखी री प्रसिद्धि हो गई । बीकानेर महाराजा श्री गंगासिंह जी इण पखी रै बारै में घणी रुचि अर जाणकारी राखता ।

इम्पीरियल सैण्ड ग्राउज नै स्थानीय भाषा में 'बट्टा' बोलै। छिब-छबीले रग रो औ फूटरो अर फर्रो पखी कबूड़ा सूं थोडो भारी हुवै । घोळै गळै मे काळी धारी रो गुलूबंद अर छाती रै सामी काळी लिकारी फबै । पावडा रा तोरा भी काळा हुवै । उडती बगत पेट अर पावडा धोळा दीसै । खास विशेषता आ है कै इण पखी रै पंजा री तळी ऊठ री पगतळी दाईं गद्दीदार व्है जिणसूं रेत माथै सोरो दोडीजै ।

शिकारयां रो चहेतो औ पंछी शुद्ध शाकाहारी है । खिडियोडा दाणा, वेकरियो, भरूट अर दूजा घास रा बीजा नै चुगै । रात रा एक दूजै रै कनै खुलै मे ऐवट बैठे ज्या बैठे । रूख माथै नी बैठे । अणूतो लाजाळू अर वैहमी पखी। चिनीक खटको हुतां ही उड जावै । आखै दिन एक ही ठदयै नी ठहरै । दोफारै रै तावडै भाड़का री ओलो तकै । रोजीना रातीवासो फोर लेवै । दस बीस सूं ले'र सैंकड़ा रा भुंडा मे लाधै ।

सारसूणो पांणी पीवण नै ढूकै । दिन मे एकर ही पाणी पीवै अर जे कोई अवगाई नीं आवै तो घटीक दिन चढतै चढतै पाणी सू छिक चुकै । पाणी माथै दणरै ढूकण री सावचेती कै जैडी । पाघरो कदैई नी ढूकै । थोडो लाम्बो अर खुलो पाणी रो तीर दाय करै । सबासू पैल एक हुसियार अर चातरक पछी दो तीन उडार भरै अर चर्रंरप-चर्रंरप आवाज करै । पाछो वावड सैन करै कै की डर भी नी है । पछै ढूळ रो ढूळ पाणी रै पसवाडै खुली भा मे बैठ जावै । भठै थोडी जेज उडीकै, भाळै । पछै दस बीस बट्टा री एक टोळी पाणी पीवण नै ढूकै । लारै री लारै सगळा पंछी पांणी पीवण नै टूट पडै । आध एक मिनट मे पाणी सूं छिक जावै अर भटोभट उड परा'र चुगण रै मेलो मे जा पूगै । दिन ढळियै चुगण रो खेत छोड'र रातीवासो लेवण नै आगै बध जावै । इणां री सूझबूझ, सहकारिता री भावना अर अनुशासन बखाणै जिसो है ।

राजस्थानी लोक जीवण में रूंख पूजा

मिनख अर रूंख री नातो घणो जूनो है। रूंख में राम रो वासो मानीजै। रूंख पूजा रा दिग्दर्शण भेट आदू-ग्रन्थ ऋग्वेद में मिळै। वेदां,पुराणां मे प्रकृति-पूजा रो ठोड-ठोड बरणन लाधै। सिंधु घाटी सभ्यता री खोज में रूंख रै थंडूंगै विषै ऊभी स्त्रीमूर्ति मिळी है। पीपळ पूजण री महता किणी सूं छानी नीं है। नीम में नारायण रो रूप देखीजै। गांव-गांव गोगा खेजड़ी धोकीजै। गांव-गांव में माताजी, भैरूजी अर दूजा देवी देवतावां, भोमियां रै नाव सूं ओरण छोडण री पवित्र परम्परा रैयी है। ओरण री छडी वाढणी अर रूंख रै टाचा लगावणो मोटो गुनो मानीजै। ओरण री सार संभाळ राखणी धरम गिणीजै। देशनोक (बीकानेर) मे करणी माता री बारह कोस री परकमा री ओरण छोड़ राखी है जिण मे वणियोड़ै नेहड़ी जी मंदिर मे नित हमेश खेजड़ी री आरती उतारीजै। सालोसाल काती री चांनणी चवदस रा गांव वाळा लोग-लुगाई ओरण री परकमा करै, गीत हरजस चिरजावां गावै, उच्छब मनावै।

जोधपुर जिलै रो खेजड़लो गांव रूंखां देवता रो तीरथ मानीजै जको विश्व धानिकी री ख्यात रो अनूठो पानो है। वाढीजता रूंखां रै आडा फिरता बिश्नोई आपरा धरमगरू जाम्भोजी रै नेमां री पाळना मे 'सिर साटै रूंख रहै तो भी सस्तो जाण' री कसौटी माथै खरा ऊतरिया। रूंखां सटै शीश कटाया पण रूंख नी कटण दिया। चिपको आंदोलन री जड़ां खेजड़ला मे पंपाळ बैठी है। इमरती बाई सूं बोवणी कर लगोलग 363 बिश्नोइयां आपरा शीश कटाया पण पेड नी कटण दीना।

राजस्थान रै लोकजीवण मे ठौड-ठौड रूंखां री महिमा दरसावै। प्रकृति सूं बिरगै पण सदा सुरंगै राजस्थान मे कोई भी शुभ काम मोरथ ह्वो, पिंडत जी री थाळी मे जळ रा कळस मे लूंक री टाळी राखीजै, सुगणीक मानीजै। लकड़ी रा भारा, बळीता रा गाडा माथै हरी टाळी नाखणै सूं अशुभ नी ह्वै। सुहागण लुगायां साजन नै तेडण सारू गीतां में संदेसो मेल्है—

चाय चल्यां हा मवरजी पीपळी जी,
कोई हो गई घेर घुमेर।
अब घर आज्यो जी॥

सासरै मे रमी-बसी, भरियै-तरियै घर री धणियाणी रै मन मे भी पीहर री ओळू आवै। वा आपरा मा-बाप, भाई-भोजाई, साईणी-साथणियां सू बत्तो पीहर रा रूखड़ा नै चितारै—

एकर दिखादे बीरा,
पीहरियै रा रूख।

कैवता, ओखाणा मे भी बूढा बडेरा साह रूखा री ओपमा लगाइजै 'आरै साईणा लो खेजड़ा बोरडी भी पड़ग्या हूं ला।'

लोक व्यवहार नै लुगाया घणो निभावै। कोई तिंवार, व्रत, बार हुवो वै घणा भाव सू मानै, मनावै। पीपळ नै परमेसर रो रूप मानै। पीपळ पूनम अग-हुण मासो, मोकळा ब्याव मनाई हुवै। पीपळ सींचणो मोटो धरम। बैसाख रो महीनो, लू रा फटकारा लागै, आधी डवेरा आवै रूख झिलमिलाईजै। जद गावा मे लुगाया सार सूणी न्हा-धो परी गोवणियो, चरूड़ो, कळसो पाणी सू भर गीत गावती पीपळ सींचै, पुन्न कमावै। पीपळ पूजण रै लाभ री बात कैय धरै बावड़ै। अदीतवार नै पीपळ री ठौड़ आकड़ो पूजै। आक, कैर, फोग रेगिस्तान रा रूख है।

चैत रै महीणै फूलड़ा लेय गणगौर पूजीजै। साम्भरकै कवारी छोरियां निरणे पेट धोरां जाय, गीत गाय, फोग रा फूलड़ा लेय, कळसा री गवर बणाय महादेवजी सू चोखो बर मागै। फूलड़ा फोग रा लेवै। फोग जियाजूण रै मनबसियो, धाखोड़ा-धायोड़ा मरुथळ री जीवजड़ी, अठै री धरती री गहरा सुरगो वनस्पति है। रूख रै हेत अर प्रेम री बखाण करा जितो ही कम है।

रूखा री पूजा नै चालू रारण वास्तै घणा सार बधावा चालै। लोक बधावा समाज री संस्कृति अर सभ्यता नै दरसावै। राजस्थान री इण बधावा मे धार्मिक मान्यतावा री बाना रूखा रै हेटै रूख री मानी म करीजै। इण भात रूख पूजण री परम्परा चालू रैवै।

नमस्कार कीनो अर पूछियो, 'थे कुण हो ?' वै बोली, 'म्हांरो नांव आस, भूख, तिस अर नींद है।'

वां पूछियो, 'थूं किण नै नमस्कार करियो?' पंडित जी बोल्या, 'हूं तो भूख रो सतायो फिरू, भूख वैनडी आगी रै। तिस सूं इण रिधरोही मे मर जाऊं, तू परिया जा। नींद आया मनै कोई मार नासै, तूं भी अळगी रै। म्हैं तो आस नै ही नमस्कार करियो है।' आसमाता बोली, 'म्है तुष्ठमान हुई।' बौ आगलै गाम पूगै जठै सारो सैर भेळो हुयोडो। एक हथणी माळा लिया फिरती-फिरती आय'र उणरै गळै मे माळा पैहराई। लोग बोल्या—हथणी चूकगी पण हथणी चारू फेरा उणरै गळै मे ही माळा पैहराई। लोगा उणनै राजा मानियो, दुहाई फिराइजी।

लारै उणरी लुगाई चौथमाता रो व्रत करै। काळ पड़ियो, घर सगळो ोळ लेय इण नगरी ढूकी। राजा सबा नै काम दीनो अर पिडताणी नै रसोडै- ळोडै नोकरी दीनी। एक'र राजा रै संपाड़ो करावता मोरां माथै ऊनै ाणी रा टोपा पडिया। उण पिडताणी नै पूछियो। वा बोली, 'थारै माथै री ोटी मे मादळियो गूथ्योड़ो देख म्हारै घर रो धणी चेतै आयो, जिण सूं आमू नकाया।' राजा बोल्यो, 'हूं हीज थारो घर रो धणी हूं, आपा नै चौथमाता ठी है।' पछै चोखी तरह रसिया वसिया।

लुगाया इणी आस माथै चौथ रो व्रत करै। सेजडी हेठै चार लुगाया ठी होय बोलै,'सबा नै इणी तरह चौथमाता तूठजे, आणद करजे।'

फेरूं रूख पूजा रो व्रत काती सुदी चवदस नै राखीजै। झाड़ाभूई रो त कर बोरडी वनै बात कहीजै। इण दिन बोरडी रै परकमा दिरीजै, ुण रै फेरी लगाइजै। एकत रास, सिनान कर, तेल रो फोहो बोरडी मे ाय, आखा चाढ, पाणी री लोटी ढाळ, बारह महीना रा सीनोड़ा पापा माफी माग प्रायश्चित करीजै। बोरडी हेठै बैठ झाडाभूई री बात कहीजै।

एक बिरामण रै चार बेटा, तीन कमाऊ अर चौथो चोर। दुनिया रो मतो लूटै अर घर रा नै देवै। एक'र सेठ सेठाणी रै भेष मे सिव पारबती चढिया सामा घसिया। मारग मे मरतो चोरटो, अगन बामण बणियो यो। बोल्यो.'पाणी पावो, तिसा मरू।' सेठ पाणी पावण लागो जितरै ता चक'र ऊंट री मोरी झाल ली अर बोल्यो, 'हूं थानै मार नाख'र गैणो गाठो लू।' सेठाणी बोली, 'मारो मती, माल राखो'। मरतो चोरटो बोल्यो, रै पण सीनोड़ो है, म्हू मार'र लूटू।' सेठ रै भेष सिवजी बोल्या, 'थारा म[illegible]

बलिहारी उण देसई

फोग सूं चिनार

फोग[1]

मरुभोम रो रूडो अर रूपाळो निजराणो। राजस्थान री संस्कृति में सागोपाग रमियो बसियो फोग। धधकै धोरा रै आडो फिरतो, बळतै बेकळ मांय फबतो हरियाळो अलीफोग। कदैई बीकानेर राजा रायसिंहजी अकबर रा दिखण अभियान में कठैई फोग दीठो, डाढा कोड कीना, हियो भर आयो। बोल्या—म्हारै देश रा लाडेसर फोग ! म्है तो अकबर रा तेडिया आया हां, तू अठै क्यू ?

तू छै देसी रूखडो, ऐ परदेसी लोग।
म्हानै अकबर तेड़िया, तू क्यू आयो फोग॥

फोगा, कैरां, कूमटा अर आकडा-खीपडा में आपरी जस गाथावां री रायापोषी सभाळतो राजस्थान। ऊजळा धोरा अर मोठा मोरां थाळी, तिलोरां अर गोडावणा खातर बाजोरो, ऊंडै जळ अर निरमळ मन रो धणी राजस्थान। पणिहारयां रै झूलरां, कुरजां रो डार, ऊंटां री कतार अर दूध दही रा वाह्ळा मायं मोदीजतो, चांदणी रातां में ढोला मारू री रमझोळां बातां में भीजतो राजस्थान। केसरिया कसूमल गाभां में, सोनै रूपै सूं सजायोड़ी, फुटरी गवरां अर बाकड़ली मूछां रै आंटीलै मरदां री थान राजस्थान। मोर अर मतीरा री धरती राजस्थान।

चिनार[1]

कश्मीरी लोगां रै हिवड़ै रो हार, चोरोंदो अर रंगभर रूंख चिनार। मध्य एशिया सूं लायोड़ो, मुगलां री बगीची-चिनार, कश्मीर घाटी टाळ अन्य भारत में कठैई नी लाधै। सदियां सूं आपरो कूल में चिनार मजीरा [illegible] कश्मीर खातर सायरा साची आखी है कै जे कठैई धरती मांदै सुरग है तो अठैही है, अठैही है, अठैहीज है।

फुर्रैत काम में नी लैणो । ट्रेक चाटे देर'र टुरणो अर जरूरत पड़ै तो डाक्टर री मदद लैणी ।

10 सितम्बर मार सूणा श्रीनगर ग्रुप एनसीसी रा कमांडर ले कर्नल बी एम. शेन म्हारे दळ नै शुभ कामना रै साथै फ्लैग ऑफ कीनो। पैलड़े दिन भाव कम हुतो, दोपारै रो भोजन नादुरा में कीनो । विनार रा रूंगा हैठै आराम कियो अर ढळतै दिन साथै हरसेल टेरियां 9 किमी आगै पैलड़े पड़ाव नागम आय पूगा, रातीवासो लीनो ।

11 सितम्बर आज री ट्रेकिंग में कठैई सड़क, कठैई डाडी अर कठैई ऊजड़ मारगा, भाखरा चढ़ता उतरता आगै वधबो करिया । अखरोट, बदाम, मेवा रे बगीचा रै पसवाड़ कर बैता, लोगा री मान-मनवार साथै छिक'र मेव खाया, दाड़ा आमीजणो । लोग मागणं सू मना नीं करै । भला मिनख झोळा भरिया पोरा करै पण चोरी माथै घणा चिड़ै । दिन ढळिया चारशरीफ पूगा, उठै नामी मस्जिद अर सूफी संत नुरुद्दीन नूरानी री मजार माथै धोक दीनी । विदेश संचार सेवा रै ट्रोपोस्केटर रेडियो कम्यूनिकेशन सेंटर रै कन कर पनरैक किलोमीटर चाल परा दूजै पड़ाव मनु बाटरखवंग पूगा। टैंटो में रातीवासो लीनो ।

12 सितम्बर वगो घणा सिरावण कर गड़र गड़र 7-8 किमो चाल नाळै माथै ढूक सिनान सपाडो कीनो, गाभा सला धाया। कनै लागाई कैंप में खाणो जीम दो किमी टुळर परा तांज गाग सुवाम दूमपगं पूगा । पर्यटन री दीठ सू थिरनिव री रूड़ी जगा । घणाई लाग दाट सूनगं, मुसलमानां री मोज माणै हा । सोवणा अर मन मोवणा चितराम ना गुर बागल, पूग पाणी में घणा मोकळा । बीजळघा पळकण लागी बादळ गाजण लागा, डाकर सू हील धूजण लागा । समुद्र तल सू 8000 फुट ऊंचा आय पूगा ।

श्रीनगर सू 47 किमी आनरै सूसमण आदूल दिगन्द पानरहट पर्वत श्रृंखला रै तळभागरा (foot hills) माथै आयाडी है। [illegible] भगवान यीशु अठै ध्यान (meditation) [illegible] (यूस) अर मारग मिळ परा सूसमण बाजण लागो । [illegible] रै हाथा इण पहाड़िया माथै कामर्दी सू [illegible] (ई ६-२३४) [illegible] लारै लारै दूध गंगा रो नीलरंगो परवो [illegible] । [illegible] सुहावणो वातावरण घणो अ[illegible] । [illegible] बाटरक डोर, आई बेकम, [illegible] में [illegible]

13 सितम्बर : रात री अणूंती सरदी अर ओस सूं लथपथ टैंटां मे नींद ओचटगी। सुबह सूरज री किरणां म्हांरै तिलक कीनों। थेट भाखरा री टूंकियां माथै धोळी पळकती बरफ साव सामी दीसै ही । अबै बरफाण कणै ही पड़ सकै। म्हे सगळा अचांणचक ठंड बधण रै डर सूं भौभीत हा। नाश्ते पछै जम्मू कश्मीर एनसीसी रा निदेशक ब्रिगेडियर एस के. आनन्द भाषण दीनो। जठा पछै चार मील री खाडा ज्यूं गजब री ढाळ कूदता-धबकता, च्यारू मेर रूंखां री छियां अर नीलै आभै री पडछियां सूं नीली 50 फुट ऊंडी झील नीलनाग पूगा। रूडी जागा री रूडो बखांण करां जितोहो कम। फोटोग्राफी कीनी। पिरती बेळा ऊभी चढ़ाई, मोट्यारा रै सास मावै नहीं, हाण-फाण, पडता-थुड़ता यूसमर्ग पाछा ढूका। परसाद पायो। कायां नै भाड़ौ दीनो। आज विसराम रौ दिन हुतौ।

14 सितम्बर : दडूकता बादळां अर टैंटां माथै रिमझिम री टप-टप सूं नींद बेगी उडगी। आज रो 10 किमी री अबखो ट्रेक एक ही मजल मे पूरो करणो, मौसम रो मिजाज फुरियोडो, म्हांरा गाइड अर पुलिस वाळा बेगा ठाणे पूगावण खातर ऊतावळा पड़ै। कलेवो पाणी करता करतां की आभौ खुलियो अर म्हे आलेड़ै ट्रेक माथै टुरिया। च्यारूमेर कुदरत री रूपाळी छिब न्हाळता, साथै बगती दूध गंगा री ऊजळी धारा नै निरखता अघावता नी। बिरखा री रिमझिम में भीजता, आली पगडांडी माथै तिसळता, पडता, आखडता, अडवडता, सावचेती सूं पग धरता पावडा मेलता। भाय घणी अबखी पण मौज री छौळा मे थाकेलो नेडो नी आवै। मारग मे घोडा माथै सामान लादोड़ा धनवाळ, ऐवड चरावता ऐवाडिया, जगती सिगडी माथै नमकीन चाय री बाफ छोडती केतली माथै ऊचाया, खेता दोफारो करावण जावती भतवारण, ढोल रै ढमकै घावळ बाढता ल्हासिया निरखता हो जावां। डून (अखरोट) बाट राजी हुवण वाळा लोग, लाज सूं पूठ फोर ऊभी रूप री गवर अर कोड करता टाबरा म्हारा मन जीत लीना। ब्यांचई री बेळा चोथै मुकाम सुरस्यार पूगा।

15 सितम्बर · आज रो ट्रेक बडो आणद वाळो। धान रै खेता रै बिचाळै सूं दूध गंगा रै सागै सागै बगता, मेवां सूं छिकता पूठ माथै जाय टंमिया। लाल, पीळा, हरा रगसेना गिडाया कैडेट पिकनिक री मौज माणै हा, म्हांनै धोवै, किलोळा करै। 12 किमी. चाल परा'र पांचवै पडाव जुहामा पूगा। लकड़ी रा दो-तीन मजला मकान, फूटरा पगोथिया, भूरडी दाई नकड़ी या टीन री ढळवाँ छत मे राख्योड़ो घास, सूगण खातर टिरतो मुगतो मिरचा री वन्दनवारां, आंगणै सूखता अखरोट, कनै नाळे मे छापट करतो बतगा,

बरलण बामण माऊली, घर मे वरतो नीमरनो गोरी निचोर लुगाया अर हाथा मे दांती लिया सेना जावना करमा सामाजिक जीवण री चित्राम पेश करै। ठोड ठोड हाथ सू बणायोड़ी पतळी मोवणदार रोटिया अर मोड़ै व नमक सू गाल तैयार कीनोड़ी नमकीन चाय रै साथै जाजम ढली बैठका में म्हारी आवभगत करीजी। मनवार कुर्सी माथै चादी रै तारा री बारीक काम, कावळ री हदभांत कढ़ाई अर अखरोट री लकड़ी माथै खुदाई री काम धुपको लागै जैड़ो।

16 सितम्बर पगतरी भाय सड़क सड़क चाल 20 किमी दूर छठै पड़ाव जिला मुख्यालय बडगाव ढूका। स्कूल मे गाँववासी लीनो। हर जगा पोशाला, त्लावाई बैक सहकारी सस्थावा, सामाजिक वानिकी, नस्ल सुधार सस्थान अर बिजळी पाणी, आवागमन सुविधावा विकास री साख भरै। हरेक सस्था मे टकराल अर शेख अब्दुल्ला रा फोटू जरूर लाधै।

17 सितम्बर सुबह पैर लच लेय सड़क सड़क ठेरता ढुळकता दोपहर ताई सगळी ट्रेक दूरी लगभग 100 किमी सू बत्ती पूरी कर पाछा बाधुरा ढूका। सामान जमा करा रात विसराम लीनो। दो दिन आधार शिविर में ठैर परा देखण जोगी ठौडा—डल झील, शालीमार-निशात मुगल बाग, गुलमर्ग पहल-गाम रै कुदरती सौन्दर्य अर पर्यटन रौ आणंद लीनो। खरीद फरोख्त कीनी।

20 सितम्बर सूरज ऊगण सू पैली पैली बसा सू जम्मू तवी खातर रहीर हुवा। जुदा जुदा प्रान्ता रा कैडेटा री विदाई मे भारत री अनेकता मे एकता री दरसाव पडै हो। ग्रुप कमाडर ले कर्नल बी एस शेख सजळ नैणा अलविदा बोलता थका सनेशो दीनो—

'ट्रेकिंग री आपणै मुलक मे नुवी नुवी शुरूआत है जिणरी उद्देश्य टाबरा मे कुदरत रै प्रति प्रेम, हिम्मत वाळा कामा मे चाव अर देश री जाणकारी सम्पण री कोड जगावणो है। मनै खुशी है कै राजस्थान, बिहार, दिल्ली, उत्तर प्रदेश अर बीजी ठौडा रा कैडेट म्हारै वनै कश्मीर आया अर प्रकृति री सुन्दरता रौ आणद लीनो। [illegible] म्मेद है कै भळै दूजा लोग देश रा खूणा खूणा स [illegible] सुरती रौ लाभ लेय देश री एकता मे

[illegible] खुशी सू मीली ही।

13 सितम्बर : रात री अणूती सरदी अर ओस सूं लथपथ टैंटा में नींद ओनटगी। सुबह सूरज री किरणां म्हारैं तिलक कीनों। थेट भाखरा री टूंकिया माथै धोळी पळकती बरफ साव सांमी दीसैं ही। अबै बरफाण कणै ही पड़ सकै। म्हे सगळा अचांणचक ठंड वधण रै डर सूं भौभीत हा। नाश्तै पछै जम्मू कश्मीर एनसीसी रा निदेशक ब्रिगेडियर एस. के. आनन्द भाषण दीनों। जठा पछै चार मील री लाडा ज्यूं गजब री ढाळ कूदना-थबकता, च्यारू मेर रूंखां री छिया अर नीलै आभै री पडछिया सूं नीली 50 फुट ऊंडी झील नीलनाग पूगा। रूड़ी जागा री रूड़ो बखांण करां जितोही कम। फोटोग्राफी कीनी। चिरती वेळा ऊभी चढाई, मोट्यारा रे सास मावै नहीं, हांफ-फाफ, पड़ता-थुड़ता यूसमर्ग पाछा ढूका। परसाद पायो। काया नैं भाडो दीनो। आज विसराम रो दिन हुतो।

14 सितम्बर : दड़ूकता बादळा अर टैंटां माथै रिमझिम री टप-टप सूं नींद वेगी उडगी। आज रो 10 किमी री अबखो ट्रेक एक ही मजल में पूरो करणो, मौसम रो मिजाज फुरियोड़ो, म्हांरा गाइड अर पुलिस वाळा वेगा ठांणे पूगावण खातर ऊंतावळा पड़ै। कलेवो पाणी करतां करतां की आभो खुलियो अर म्हे आलेडै ट्रेक माथै टुरिया। च्यारूंमेर कुदरत री रूपाळी छिब न्हाळता, साथै वगती दूध गंगा री ऊजळी धारा नैं निरखता अघावता नीं। बिरखा री रिमझिम में भीजता, आली पगडांडी माथै तिसळता, पड़ता, आवडता, अड़वडता, सावचेती सूं पग धरता पावडा मेलता। भाय घणो अवलो पण मौज री छौळां मे थाकैलो नैंडो नी आवै। मारग मे घोड़ा माथै सामान लादोड़ा धनवाळ, ऐवड चरावता ऐवाडिया, जगती सिगड़ी माथै नमकीन चाय री बाफ छोड़ती केतली माथैं ऊंचाया, खेता दोफारो करावण जावतो भतवारण, ढोल रे ढमकैं वावळ बाढता ल्हामिया निरखता ही जावो। डून (अखरोट) बांट राजी हुवण वाळा लोग, लाज सूं पूठ फोर ऊभी रूप री गवर अर कोड करता टाबरा म्हांरा मन जीत लीना। तीचड़ै री बेळा चौथै मुकाम सुरस्यार पूगा।

15 सितम्बर : आज रो ट्रेक बडो आणंद वाळो। धांन रै खेतां रै विचाळै सूं दूध गंगा रै सागै सागै वगता, सेवा सूं छिकता पुळ माथै जाय ठमिया। लाल, पीळा, हरा रुखसेरा खिडायां कैंडेट पिकनिक री मौज माणं हा। म्हारै धोवै, झिलोळां करै। 12 [illegible] 'रे पाचवै पड़ाव जुहामा पूगा। [illegible] लकड़ी या
लकड़ी रा दो-तीन मंजला
टीन री ढळवी छत में
बन्दनवारां,

बरतण बासण माजनो, घर में बटती नीसरती गोरी निचोर लुगाया अर हाथां में दांती लियां गैता जावता करसा सामाजिक जीवण री चित्राम पेश करै। ठौड़ ठौड़ हाथ सूं बणायोड़ी पतळी मोवणदार रोटियां अर गोडै व नमक सूं खास तैयार कीनोड़ी नमकीन चाय रै साथै जाजम ढळी बैठका में म्हारी आवभगत करीजी। सलवार कुर्ती माथै चांदी रै तारा री बारीक काम, बावळ री हुनरभांत कढाई अर अखरोट री लकड़ी माथै खुदाई री काम धुपतो लागै जैडो।

16 सितम्बर पगा री भाग सड़क सड़क चाल 20 किमी दूर छडै पड़ाव जिला मुख्यालय बडगाव टूवा। स्कूल में रातीवासो लीनो। हर जगा पोसाला, स्याणाई बैंक, सहकारी संस्थावा, सामाजिक वानिकी, नस्ल सुधार संस्थान अर बिजळी पाणी, आवागमन सुविधावा विकास री साख भरै। हरेक संस्था में दरबान अर शेख अब्दुल्ला रा फोटू जरूर लाधै।

17 सितम्बर सुबह पैर लव लेय सड़क सड़क ठैरता टुळकता दोपहर ताई सगळी ट्रैक दूरी लगभग 100 किमी सूं बत्ती पूरी कर पाछा बाधुरा ढूका। सामान जमा करा रात विसराम लीनो। दो दिन आधार शिविर में ठैर परा देखण जोगी ठौड़ा—डल झील, शालीमार-निशात मुगल बाग, गुलमर्ग पहलगाम रै कुदरती सौन्दर्य अर पर्यटन री आणंद लीनो। खरीद फरोख्त कीनी।

20 सितम्बर सूरज ऊगण सूं पैली पैली बसा सूं जम्मू तवी खातर व्हीर टूवा। जुदा जुदा प्रान्ता रा कैडेटा री विदाई में भारत री अनेकता में एकता री दरसाव पड़ै हो। ग्रुप कमाडर ले कर्नल बी एस शेख मजळ लैणा अलविदा बोलता थका सनेशो दीनो—

'ट्रैकिंग री आपणै मुलक में नुवी नुवी शुरूआत है जिणरी उद्देश्य टाबरा में कुदरत रै प्रति प्रेम, हिम्मत वाळा कामा में चाव अर देश री जाणकारी राखण री कोड जगावणी है। मनै खुशी है कै राजस्थान, बिहार, दिल्ली, उत्तर प्रदेश अर बीजी ठौड़ा रा कैडेट म्हारै वनै कश्मीर आया अर प्रकृति री सुन्दरता री आणद लीनो। मनै उम्मेद है कै भळै दूजा लोग देश रा खूणा खूंणा सूं अठै आवैला अर कुदरती खूबसूरती री लाभ लेय देश री एकता में मजबूती लावैला।'

भारत माता री जै जै कार माथै म्हारी आंख्या खुशी सूं गीली ही।